चमेलीरानी

केदार नाथ चौधरी

इंडिका इन्फोमीडिया
जनकपुरी, नई दिल्ली—110 058

प्रस्तुत पोथीक समस्त चरित्र आ घटना काल्पनिक अछि। एकर कोनो व्यक्ति अथवा घटना सँ कोनो सम्बन्ध नहि छैक।

—लेखक

KEDAR NATH CHOUDHARY
Hidden Cottage, Bengali Tola
Laheriasarai, Darbhanga–846 001
Mob. : 93349 30715

ISBN : 81-89450-09-3

प्रकाशक
इंडिका इन्फोमीडिया
जनकपुरी, नई दिल्ली–58
फोनः 2811 1555, 93509 51555

लेखक
केदार नाथ चौधरी

प्रथम संस्करण, 2004
द्वितीय संस्करण, 2007

मूल्य
70 टका

आवरण
शशि शेखर, श्रीकांत

मुद्रक
संदीप प्रेस
नारायणा, नई दिल्ली–110 028

CHAMELIRANI,
A Maithili Fiction
by Kedar Nath Choudhary

समर्पण

ओहि समग्र मैथिली प्रेमी कैँ जे अपन सम्पूर्ण जिनगी मे अपन कैंचा खर्च क' मैथिली-भाषाक कोनो पोथी-पत्रिका किनने होथि।

—लेखक

एक

–"रे हे अरजुनमा! नकुलवा कैँ संग नेने ने जाहिन्ह! देखै नहि छिहिन्ह जे ओकरा दाढ़ी-मोंछ पनैप गेलैहें। ओ कहिया बालिग हेतै?"

अर्जुन घुमि कैँ पाछां तकलक। ओकर बाप कमचीबला मचान पर बैसल बड़बड़ा रहल छैक। बाप यानी कीर्तमुख।

कीर्तमुख कैँ सात वर्षक भीतर पांचटा बेटा जनम लेलकै। ताहि कारणे ओकर जिगरी यार कन्टीर विचार देलकै जे पांचो पाण्डव बला नाम बेटा सबहक राखि दहक। सुभिता हेतौ।

पहिल बेटा युधिष्ठिर छलै। युधिष्ठिर मुसरी घराड़ी पर अड्डा बनौलक आ सब बंदोबस्त क' ठीक-ठाक क' लेलक। उड़ैत चिड़ैया पकड़ि क' बियाहो क' लेलक। आब मुसरी घराड़ी सँ जीरो माइल तक ओकर एकछत्र राज छैक।

दोसर बेटा भीमा। निसानक पक्का। एक माणिकचंद सुपारी राखि दियौ। पाइन्ट टू टू पिस्तौल होइ वा एके सैंतालिस राइफल। मजाल की जे निसान चुकि जाए। पछिला इलेक्शन मे कानू सिंह, जे स्वयं पैघ अनुभवी डकैत रहि चुकल छल, ओकर जौहर कैँ चिन्हलक। कहलकै–"मेरा बडीगार्ड बन जाओ।" भीमा आब सरकारी नौकरी मे सरकारी आवास मे रहैत अछि। कानू सिंहक मनीस्टर बनलाक बाद भीमाक रुतबा बहुत बढ़ि गेलैक अछि। ओ मालदह जिलाक रतुआ धोबिके बेटी रधिया पर आँखि गरौने अछि। एक ने एक दिन बियाह हेबे करतैक। भीमाक गलमोच्छा मे घी चुपड़ल रहैत छैक आओर देहाती लोक ओकरा देखिते डरि क' पाथर बनि जाइत छै।

तेसर बेटा अर्जुन। देखब त' मोन होयत कि देखिते रही। परम सुन्दर कायाक मालिक। मजबूत कद-काठी, लम्बा बरछीसन जुल्फी आओर गरदनि मे झुलैत चानीक तमगा। अर्जुन हाइवे पर डकैतीक काज करै अछि। एखन तक कोनो बड़का माल हाथ नहि लगलै अछि। मुदा, आस पर दुनिया जीवै अछि।

चारिम बेटा नकुल। कद-काठी मे ठमकल। थोड़ेक तोतराइत सेहो अछि।

बाप के कहलकै–"चिन्ता नहि करह। तोहर पाँचो बेटा मे हमही नामबला हेब।" हमर काटल अहुरिया काटि क' प्राण त्याग करत।

पाँचम बेटा सहदेवा। सबसँ बेसी सुन्नर। पान सन कोमल। कीर्तमुखक आँखि मे सिनेहक नोर। हे परमेश्वर! एकर जीवन कोना कटतैक। जन्मेकाल ओकर माय शनिचरी मरि गेलैक। नीके भेलै। जाहि स्पीड सँ ओ बेटा सबहक जन्म द' रहल छल से अधिक दिन जिबैत रहैत त' कीर्तमुख कँ बेटा सबहक नाम पाण्डव बला छोड़ि धृतराष्ट्र बला राख' पड़ितैक।

आब शनिचरीक खिस्सा सुनू। बेतिया मे एकटा अंग्रेज हाकिम छल डेम्सफोर्ड। ओकर एक खबासिन छलै रूपकुम्मरि। साहेबक मोन, अंग्रेजक राज, शराबीक नजरि आ ताहू पर रूपकुम्मरिक लहकैत जवानी। रूपकुम्मरि कँ एकटा बेटी जन्म लेलकै। चमड़ी अंग्रेज सन, रूप हिन्दुस्तानी। आजादीक समय जखन डेम्सफोर्ड इंग्लैंड वापस जाय लागल त' रूपकुम्मरि कँ बीच बाजार मे एकटा घर कीनि देलकै। ऊपर सँ चानीवला एक सौ रुपया द' क' ओ अपन पाप कँ हल्लुक केलक।

रूपकुम्मरिक बेटी कँ बड़का-बड़का आँखि। ओकर नाम की हौउक? डेम्सफोर्ड गेलाक बाद बहुतो वीर रूपकुम्मरिक दलान मे कुश्ती केलक। ओही मे सँ कियो ओकर बेटीक नाम राखि देलकै–सुनयना।

सुनयना कनेक चेस्टगर भेल, दोकान-दौरीक काज करए लागलि, तखनहि ओकरा पर विधाताक लाठी बजैर गेलैक। रूपकुम्मरि डेम्सफोर्डक वियोग बहुत दिन तक नहि सहि सकलि। चटपट विदा भ' गेलि।

आब की होअए? मुदा सुनयनाक गात मे अंग्रेजक सोनीत। ओ कनेको ने घबड़ायल, ने ओझड़ायल। ओ बीच बाजारक घर बेचि, बेतिया शहरक एक कात मे, एक छोट सन घर कीनि लेलक। संगहि सतुआक दोकान सेहो खोलि लेलक। आब सतुआक सोहनगर गमक आ सुनयनाक रूपक पसाही, दोकान नीक जकाँ चलय लगलै। समय बितैत गेलै। सुनयना कँ एकटा बेटी भेलै। बेटी कोना भेलै से ककरो नहि बुझल छैक आओर अहूँ के बुझक काज की? बेटीक जन्म शनि दिन भेलैक आ ओकर नाम पड़लै शनिचरी। ओहि काल मे दिन-दुनिया कंग्रेसियाक पाँजर मे दबकल छल। सुस्लीस्ट पार्टीबला कखनहूँ झोपड़ी मे त' कखनहूँ गाछ पर नुकायल रहैत छल। हँ, बेतियाक सुनयनाक सातुक दोकान सुस्लीस्ट भाइ लोकनिक अड्डा बनि चुकल छल। आठ आनाक साउत-नोनक घोर पीबि ओ सब विचार करैत

छलाह, जुगुत लगबै छलाह जे अगिला इलेक्शन मे कोना कंग्रेसिया कैँ पछाड़ब।

समय ककरो रोकने ने रूकै छै। आब सुनयना पचासक धक मे आ शनिचरीक बुझू सोलहम।

सुस्लीस्ट भाइ सब ओहिना थाकल-चूरल। मुदा, ओहि दिन एकटा विलक्षण बात भेलै। साँझक समय, कनिएँ काल पहिने बिहारि उठल छलै, फेर एक अछाड़ पानि सेहो बरसल छलै। ओहीकाल एक कम उमिरक सुस्लीस्ट भाइ सुनयनाक दोकान पर आयल। सुनयना परिचय-पात पुछलकै, आगत-स्वागत केलकै त' पता चललै जे हिनकर नाम रामठेंगा सिंह 'चिनगारी' छनि।

चिनगारीजीक गाम मिरचैया, बछबाड़ा टीसन सँ आध कोस पच्छिम। गाम मे हुनका सात बीघा जमीन आओर दूरा पर दूटा महीस। चिनगारीजी पहिने कम्युनिस्ट बनलाह। मुदा चक्काजामक मिटिंग मे सिपाहीक से ने डांग हुनका पीठ पर पड़लनि जे तत्काल कम्युनिस्ट पार्टी छोड़ि चिनगारीजी सुस्लीस्ट बनि गेलाह। ओ पार्टीक मीटिंग मे बेतिया आयल छलाह। एतए अबिते पता लगलनि जे बैकुण्ठ भगत, माने सुस्लीस्टक शिरोमणि, एकटा धाकर कँग्रेसिया नेताक चालि मे फंसि क' पार्टी छोड़ि काँग्रेस मे प्रविष्ट क' गेल छथि।

आब की होअय? चिनगारीजी भुतियाति-भुतियाति सुनयनाक सातुक दोकान मे पहुँचि गेलाह। सुनयना चिनगारीजी कैँ देखिते मोने-मोन किछु निश्चय केलनि आ पुछलकनि—"औ चिनगारीजी, रौआ ठीक-ठाक बोलब। रौआक बियाह भेल हए कि ना?"

चिनगारीजी टकटकी लगाक' शनिचरी कैँ निहारि रहल छलाह। इच्छा भेलैन्ह जे आध-मन भारी झूठ बाजी। कहियैक जे हमर की, हमर बापोक बियाह नै भेल रहन्हि। मुदा सम्हरि गेलाह। मात्र एक पावक झूठ बजलाह जे एखन तक कुमारे छथि।

सुनयना आओर शनिचरी मिलि क' चिनगारीजीक खातिर करै लागलि। राति मे सुतै सँ पहिने सुनयना चिनगारीजी कैँ बुझबैत कहलकनि—"रौआ, हमर बात के धियान से सुनल जाओ। सुस्लीस्टक जमाना आ गेल बा। उचक्का, जेबकतरा आ डकैत सब अही देश के नागरिक। सबकैँ समान अधिकार। तू बड़ काबिल त' एक भोट, हम मूरख त' एक भोट। रौआ भोट कैँ संग-संग जात कैँ चिन्ही, पाँत कैँ चिन्ही। बाध-बोन मे गोइठा छिड़िआल बा। ओकरा जमा करी आ सब चौक-चौराहा पर जला दीं। समूचा प्रदेश मे आग अपने-आप पसरि जाइ।"

सुनयना थोड़ेक सुस्ता क' फेर बाजलि—"रौआ, सुनली की ना? आजादीक तपतपायल एकटा बुढ़बा नेता राजधानी मे आ गेल वा। जा, जाके ओकरा गोर मे नोर बहाब'। ओकर आशीर्वाद पड़ी त' पटना के साथ-साथ दिल्लीक राज तोहार।"

औरो सुनल जाओ। सुनयनाक फिरंगी भूत ओकर माथ पर चढ़ि के बाजि रहल छल।

—"पुरना कँग्रेसिया मर-खप गेल। ओकर लड़िकन नेता बनैक वास्ते मैदान मे उतरल वा। सरौं सब आँखि मे सुरमा लगाबयबला, सोना कैँ चेन मे रूद्राक्षक माला पहिरैबला आऊर मौगिक माफिक माथक बीच मे सौंथ करैबला, आब राजनीति का करिहेएँ। कँग्रेसियाक जमाना खत्मे बुझीं आओर सुस्लीस्टक जमाना दमकैबला बनल बा।"

चिनगारीजी सुनयना सन महान गुरुआनिक उपदेश सुनि नतमस्तक भ' गेलाह आ एक दिन सुनयनाक बेटी शनिचरीक हाथ पकड़ने बछबाड़ा टीसन पर पहुँचि गेलाह।

बछबाड़ा टीसन पर पहुँचलाक बाद चिनगारीजी कैँ होश भेलनि—'अरौ बाप रौ बाप। गाम कोना जायब। घर मे कनियाँ आ तकर एकटा बेटा।'

चिनगारीजी बछबाड़ा टीसनक उतरबरिया सिगनल लग शनिचरी संग बैसल तम्बाकू थूकै छलाह आ सोचैत छलाह—'मानलहुँ नेतागिरी मे थोड़ेक जोश हेबो करैत छैक। मुदा, ई कोन जोश भेलै? गाम जाइत देरी बुझू जे नाम गेल, जाइत-पाति मे धाख गेल आ नेता बनबाक सपना चूर-चूर भऽ गेल। शनिचरी कैँ अपना संग आनि बड़का आफद बेसाहि लेल।'

राति एक पहर बीति गेलै। चिनगारीजी कैँ ओहुना चारू कात अन्हार देखाइ पड़ैत छलनि। कहबी छै, भगवान बेर पर सबहक मददि करैत छथिन्ह। खास क' ओकर जकरा नेता बनैक होइक, देशक बागडोर संभारक होइक। चिनगारीजी कैँ एकाएक मोन पड़लनि—कनही मोदियानि।

कनहि मोदियानिक डेरा हाइवे सँ पाव भरि जमीन पाँछा आओर रेलवे पटरी सँ कनिकबे हटल, तीन बटिया रस्ताक मोहार पर बेस पाँच-छः कट्ठा जमीन मे पसरल रहैक। पाँचटा महींस, सात-आठ टा गाय आओर बोतू संगे एक दर्जन बकरी। एखन तक लाइन होटलक चलती नहि भेल छल। कनही मोदियानिक ओहिठाम खेबा-पिबाक सब इन्तजाम। सोनहाइत दूधक खीर वा पच्चहतरि नम्बर बला दारू। जे चाही से भेटत। नगद सेहो, उधार सेहो। रात्रि-विश्राम, नेवारबला

खाट, गंगाकातक पवित्तर छौंड़ी, सब किछु ओतए उपलब्ध छलै। ट्रक ड्राइवर, पनपैत छोटका बड़का नेता, सबहक जमघट छल कनही मोदियानिक लग।

जखन शनिचरीक हाथ धेने चिनगारीजी कनही मोदियानिक डेरा पर पहुँचला त' राति एके पहर बाँकी छलैक। इजोरिया उगि गेल रहैक। इजोरिया मे शनिचरी ओहिना चमकैत रहअय जेना सिनेमा मे हिरोइन।

कनही मोदियानि मे सबसँ बेसी खूबी छलै ओकर धैर्य आ अकाश तक देखैक गुण। ओ धियान लगाक' चिनगारीजीक सब गप सुनलक। फेर बाजल– "वाह! तूँ सरिपों चिनगारी छह। नेता बनैक सबटा नक्षत्र तोहर कपार मे लिखल छह।"

फेर कनही मोदियानि शनिचरीक चतरायल जवानी कैँ निहारि मुँह मे मिसरी घोरैत बाजलि–"तोँ एकरा हमरा जिम्मा छोड़ि जा। तुरंत पटना जा क' ओहि बुढ़वा नेताक शरणागत हुअ'। हम शनिचरी कैँ पेटार मे झांपि क' राखब। तोँ जखन विधायक बनि जेबह, त' अबिह। शनिचरी कैँ तहतर्ज हम वापिस क' देबह। तोरा कोनो खरचा नहि लगतह। हँ, पटना जेबा लेल, नेता बनै लेल, एखन एक सौ टाका दैत छिअ। घट' त' औरो मांगि लिह'।"

चिनगारीजी गदगद भ' क' कनही मोदियानिक चरण धूलि माथ मे लगौलनि आ बिदा भ' गेलाह। कनही मोदियानिक उधारी मे सब दिन बरक्कत भेलैए।

चिनगारीजी पटना पहुँचलाह। ओहि बुढ़बा, अजादीक लड़ाइक विख्यात सिपहसलारक चरण मे समर्पित भेलाह। ओना, पहिने सँ ओहि नेताजीक अपियारी मे बहुतो बुआरी, सौउरा आ कबई सब कुदि रहल छलै। चिनगारीजी ओही झुंड मे सन्हिया गेलाह।

प्रान्तक राजनीति कैँ के कहअय, देशक राजनीति मे भयंकर भूकम्प एलैक। अहि देशक प्रजातंत्र अपन असली तंत्र कैँ प्रगट केलक। सुस्लीस्ट भाइ लोकनि सब दिन तिरस्कृत रहला, एलेक्शन जीत गेलाह।

कँग्रेसिया पिछड़ि गेल, बुझू रसातल मे चलि गेल। चारू कात एकेटा गप। होली बीतल गाली मे, कँग्रेसिया खसल नाली मे।

ठक्कन मोची, चनमाँ साफी, किरांइ मुसहर, जगुआ केऔटक संगहि संग राम ठेंगा सिंह 'चिनगारी' सब विधायक आ फेर मनीस्टर। चिनगारीजी विधि मंत्री बनलाह। शपथ लेबा काल हुनक ठोंठ मे बग्घा लागि गेलनि। मंत्रीक कुर्सी पर बैसलाह त' पोनक गिरगिट माथ मे पैसि गेलनि आ विधिक अर्थ बुझै मे हुनका जे

कष्ट भेलनि तकर हाल की कहल जाय। सुपती गाँथ' बला बनबिलाड़ बनल।

मुदा ओहि सभ काज मे दू वर्षक समय बीति गेलनि तखन चिनगारीजी कैं एकाएक मोन पड़लन्हि–शनिचरी। शनिचरी मोन पड़िते ओ ब्याकुल भ' मोदियानिक अड्डाक हेतु प्रस्थान केलनि।

कनही मोदियानि हुलास सँ चिनगारीजीक स्वागत करैत बाजल–"रे चिनगारी! तोहर अमानत कैं हम ओरियाक' राखल। मुदा गारल असर्फी कैं लेबा सँ पहिने अगिला-पिछला हिसाब चुकता क' दे।"

चिनगारीजी भावुक भ' उठला, आँखि सँ नोर टपकय लगलनि, कंठ अवरुद्ध भ' गेलनि। ओ गड्डीक गड्डी नोट कनही मोदियानिक पयर पर पसारि देलनि। फेर एकटा पैघ सूटकेश कैं आगाँ करैत बजलाह–"अहि मे अगेली-पिछेली सोनाक गहना आ वस्त्र भरल अछि।"

कनही मोदियानिक आँखि फाटि क' बाहर निकल' लगलै। ओ आश्चर्य सँ चिनगारी कैं निहारय लागलि। चिनगारी अत्यन्त नम्र वाणी मे बजला–"हम जे किछु छी से अहाँक परसादे। अहाँ ई किएक बुझलियैक जे हम अहाँक स्वागत मे खाली हाथे आयब। हयै मोदियानि! चिनगारी अहाँक सेवक, अहाँक अज्ञाकारी।"

कनही मोदियानि कैं सुइद-मूर सँ कइएक गुणा बेसि भेटि गेलै। ओ हँसैत बाजलि–"एकटा औरो बात जानल जाए हे मनीस्टर साहेब! गंगा-कात सँ एकटा मनुक्ख कैं आनि, जकर नाम छियै कीर्तमुख, शनिचरीक बियाह करा देलियैक अछि। आखिर समाज सँ, लोक-लाज सँ अहाँक रक्षा करब आवश्यक छल। कीर्तमुख कैं सहवास करैक लूरि नहि छैक। शनिचरी सँ बच्चा अहाँ जन्माउ आओर बाप बनत कीर्तमुख।"

हे, एकरा कहै छैक बुद्धि। कनही मोदियानिक सोचब, भविष्य कैं काया-कल्प बनेबा मे के सकत।

चिनगारीजीक विभागक गाड़ी, बडीगार्ड आ पीए आदि सभ कियो पटना वापस भेल। चिनगारीजी बहुतो दिन तक कनही मोदियानिक अड्डा मे अटकल रहलाह। मध मे घोरल शुद्ध शिलाजीतक बुकनी, मिसरी देल ललका अरहुलक मोरब्बा आओर गिलासक गिलास बकरीक दूध मे बादाम, केसर आ हफीम फेंटल पेय कैं चिनगारीजी उदरस्त करैत रहलाह एवं कनही मोदियानिक व्यवस्था मे जमकल रहलाह। परिणाम भेल, युधिष्ठिरक आगमनक सूचना।

बिदाह हेबाकाल चिनगारीजी कनही मोदियानि कैं बुझा क' कहलनि जे

शनिचरीक खरचा, होइबला बच्चाक खरचा, कीर्तमुखक खरचा आ आन सब खरचा मासे मास पटना सँ आयल करत। कोनो बातक चिन्ता जुनि करब। सत्ते, मनीस्टर की ने क' सकैत अछि?

कालक्रमे युधिष्ठिरक अहि भूलोक मे पदार्पण भेलनि। मुदा हुनक जन्मक बाद चिनगारीजी फेर कनही मोदियानिक अड्डा पर वापस नहि आबि सकलाह।

पटनाक नेतागणक बीच यद्यपि चिनगारीक कीर्ति-पताखा बड़ उच्च मे फहराइत रहैन्ह, मुदा ओ एकटा पैघ पाप क' बैसलाह, तकर प्रायश्चितो नहि क' सकलाह। सबटा नसीबक दोष।

पहिल केबिनेटक मीटिंग। सीएम गुलाब मिसिरक भाषण भेल–"भाइ लोकनि, हम जो कुछ बोलता हूँ उसको आप सभी धियान से सुनने का कष्ट करें आऊरो सचेत हो जायें। हमरा एक मंत्र है, सातू खाते रहो, राज करते रहो। कँग्रेसिया सातू छोड़ा, खाने लगा पोलाव। नतीजा क्या हुआ? सब मैटर आपके सामने है। हम फिर दोहराता हूँ सातू जिन्दाबाद! सातू जिन्दाबाद!"

मुदा, चिनगारीजी अपन नेताक गुरुवाणी बिसरि गेलाह। पोलाव, बिरयानी, मूर्ग-मोसल्लम कटिया भरल ठर्रा। पहिने हुनका ब्लड प्रेसर धक्का देलकनि, फेर डाइभीटिज। डाक्टर भेटलनि चाइबासाक सेडूल्ड ट्राइब्सक नम्बर दूक डा. पी. के. मूरमूर।

डाक्टर मूरमूर जखन पहिल मेडिकल परीक्षा मे दाखिल भेल छलाह त' कुल मार्क्स एलनि एगारह। हुनकर सहोदर भ्राता हेल्थ मनीस्टर छलथीन। हुनका परम आश्चर्य भेलनि–"कुछ हो, एग्गारह नम्बर तो लाया। अब मेरा भाई डाक्टर बनकर रहेगा।"

डाक्टर मूरमूर चिनगारीजीक जाँच केलथिन्ह आओर उपदेश देलथिन्ह–"बड़ा आदमी का निसानी है ब्लड प्रेसर और डाइबीटिज। दवा लिख दिया है, खाते रहिए और देश का काज करते रहिए।"

एलोपैथी दवाइ खाइबला केँ जँ भोरुका उखराहा मे मुँह मे खटमिट्ठीक स्वाद अबैक त' सचेत भ' जेबाक चाही। मुदा, चिनगारीजी मनीस्टर। हुनका चेतबाक फुर्सति कहाँ?

ओहि दिन चिनगारीजी रतुका खुमारी तोड़ैक लेल पहिने ललका रमक एक गिलास पिलनि। फेर ब्रिटानिया बिस्कुट केँ चिकेन सूप मे भिजा क' मुँह मे रखलनि की पेट मे हूक उठलनि। कनिएँ कालक बाद पेट मे मरोड़। पेटक वस्तु बाहर हेबा

लेल भगवान मनुक्खक शरीर मे दूटा द्वार देने छथिन्ह। चिनगारीक दुनू द्वारक पट एकहि संग खुजि गेलनि। पछिला रतुका खेलहा—अखरोट, छहोड़ा, किसमिस साबुत निकलय लागल। डा. मूरमूर एलाह आ चिनगारीजी कँ देखिते बजलाह—"इसको तुरंत अस्पताल भेजो। मरीज बहुत गन्दा है।"

अस्पतालक नाम भेल अभावक पराकाष्ठा। चिनगारीजी अस्पतालक अव्यवस्थाक कौतुहल मे फंसि गेलाह आ मुँह-बाबि दम तोड़ि देलनि। कियो कहलक हार्ट फेल हो गया। दोसर कहलक—"नही, नही, पेट मे भुरकी हो गया।" कियो किछु त' कियो किछु।

किछु होउक, मनीस्टर बला बात। आध दर्जन डाक्टर गहन छान-बीन केलाक बाद निर्णय देलक—"चिनगारीजी मर चुके हैं। सच तो यह है कि अस्पताल आने के मार्ग में ही इनकी मृत्यु हो चुकी थी।"

संध्याकाल सीएम रेडियो पर भाषण देलनि—"चिनगारीजी एक करमठ, इमानदार, त्यागी और प्रान्त के महान नेता थे। हमलोगों को भवसागर में छोड़कर चले गए। उनके रिक्त स्थान की पूर्ति कोई नहीं कर सकता है। हम उनके आत्मा की शान्ति का प्रार्थना करता हूँ।"

कनही मोदियानि कँ जखन चिनगारीक मृत्युक समाचार भेटलै त' ओ आकुल भ' क' बफारि तोड़ब शुरू केलक। नवका नोटक फरफराइत गड्डी ओकरा आँखि मे स्वप्नवत घुम' लगलै। मुदा, बहुत जल्दीए ओ अपन धैर्य कँ बाकुट मे समेटलक। अरे! विधाताक बनाओल विधि व्यवस्था सबसँ ऊपर।

कनही मोदियानि शनिचरी कँ बजा क' कहलकै—"चूड़ी नहि फोड़, रह' दे, सेनूर नहि पोछ', ललका-पिअरका नुआ पहिरते रह'। आइ तक तूँ परतंत्र छलह। आब हे रूपवती शनिचरी! तूँ स्वतंत्र छह। सौंसे संसार मे उड़'। अपनो प्रसन्न रह' आ हमरो प्रसन्न करैत रह'।"

शनिचरी कँ स्वतंत्र होइत देरी कनही मोदियानिक आमदनी मे इजाफा भेलैक। ओम्हर आमदनी बढ़ैत गेल आ एम्हर शनिचरी क्रमशः चारिटा आओर बेटाक जन्म देलक। मुदा, अन्तिम बेटाक जन्म-काल, बुझू धरती फाटि गेलै आ शनिचरी ओहि मे समा गेलि।

कीर्तमुख आब पाँच सन्तानक पिता छल। कनही मोदियानि जामे तक जिअल ओकर सिनेह, ओकर देख-भाल मे कोनो कमी नहि आयल।

कीर्तमुखक नकुलवाबला गप सुनि क' अर्जुन कँ प्रचण्ड तामस भेलैक। क्रोध

सँ ओकर आँखि लाल भ' उठलै। पिछला दू अन्हरियाक पाँच हजार टाका थानाक बाँकी छैक। कतेक नेहौरा केलाक बाद थाना प्रभारी एक आओर अन्हरिया उधार देलक। डकैतीक काज मे की कोनो लज्जत रहि गेलै हें? ट्रकबला सब पलटनक गाड़ी जकाँ कतार मे चलैत छै। इलाका ओहिना दरिद्दर। तखन त' बाहरक कोनो भुतिआयल मुसाफिर फँसल त' किछु झड़ल।

अर्जुन आइ एक घंटा चूल्हाइक महावीर मंदिर मे मनौती केलक, तखन डकैतीक धन्धा पर विदा भेल छल। बीचहिं मे टोक। हे महावीर! एहन निर्दयी बाप ककरो ने हो।

—"रे हे अरजुनमा! किछु बाजै नहि छएँ। टुकुर-टुकुर तकला सँ की हेतौक? पोसि-पालि क' सबकेँ पैघ केलिऔक। आब नकुलबा के रास्ता पर अननाइ तोहर फर्ज बनै छौ। छोटका, सहदेवा एखन चरबाही करै अछि, ठीके अछि। आब हम बूढ़ भेलिऔ। अपन जिम्मेदारी केँ कम कर' चाहैत छी।"

अर्जुन फेर घूमि केँ बाप दिस तकलक, बाजल—"बेसी टेएँ-टेएँ करब' ने त' अखुन्ते आबि क' गर्दनिक हड्डी तोड़ि देब'।"

कीर्तमुख अपन गरदनि पर हाथ रखलक त' ओकरा मोन पड़लै जे ओकरा गरदनि छलैहे नहि। सही मे, कीर्तमुखक शरीरक बनाबट अजीब रहैक। लग्गा सन नम्हर-नम्हर दुनू टांग, घोंकचल पेट आ छाती, कन्हा पर पौड़ल मूड़ी गरदनि नदारत। पीठ पर कुब्बर। तें भीख मंगै काल कियो ओकरा घेंचू त' कियो ढँचू कहैक। कीर्तमुख केँ कनिओ बुझल नहि रहैक जे ओकर माय-बाप के? गंगा-कात मे भीख मंगैत ओ पैघ भेल आ गंगा-कातक पण्डा ओकर नामकरण केलकै, कीर्तमुख।

भगवान सबकेँ देखै छथिन्ह। सभहक इन्तजाम करैत छथिन्ह। कीर्तमुख जखन चेस्टगर भेल त' गंगा नदीक कछेर मे माँछ पकड़ए लागल। आध-आध मनक रहु आ भाकुर ओ हाथे सँ पकड़ि लिअए। ई गुण ओकरा अपने-आप आबि गेल छलै। ओही माँछ के बेचैक क्रम मे ओकरा कनही मोदियानि सँ परिचय भेलै।

आ एक दिन कनही मोदियानि कीर्तमुख केँ बुझा-सुझा क' कहलकै—"कतेक दिन तक बौआइत रहब'। आब ठेकाना पकड़ि लैह।"

ठेकाना भेल कमचीबला मचान, पत्नी भेटलै शनिचरी आ बेटा भेलै पाँच। कोनो चीजक मिसियो भरि कमी नहि। बुझल जाउ, पूर्व जन्मक कमायल नीक कर्मक भोग कीर्तमुख केँ अनायास प्राप्त होब' लगलै।

मुदा, आइ अर्जुनक गरदनिक हड्डी तोड़ै बला गप सुनि क' ओकरा बड्ड दुख भेलै। एहन मर्माहत बला दुख ओकरा कहिओ ने भेल रहैक। ओ चारू कात नजरि खिरौलक–ओकर बतारीक कियो नहि छैक।

अर्जुन कैँ ओ निहारि क' देखलक। कीर्तमुखक आँखि मे चोन्हा-मोन्हा लागि गेलैक। साँस सेहो ठमकि गेलैक। असल मे, कीर्तमुख अइँठ क' मुँह बाबि देलक।

खैर, कीर्तमुख कैँ की भेलैक से त' सहदेवा जखन राति मे ओकर खेनाइ ल' क' आओत तखन पता चलतैक। सहदेवा, कीर्तमुखक सबसँ छोट नेना, चिनगारीजीक असलिका बेटाक ओहिठाम चरबाही करैत छल। भोरका पनपिआइ, दिनका कलउ आ रतुका खेनाइ ओकरा जे भेटैक ओहि मे सँ आधा ओ खाइ छल आओर आधा कीर्तमुख कैँ खुआबै छल। मजाल की जे कीर्तमुख एको साँझक भूखल रहि गेल हो। सहदेवा कैँ अपन बापक प्रति जे ममता छलै से संसार मे व्याप्त सिनेहक उत्तम उदाहरण छल।

आब सब किछु कैँ छोड़ू। चलू अर्जुनक संग डकैतीक अभियान पर।

अर्जुन सबसँ पहिने गोपियाक पसिखाना पहुँचल। जाहि दिन सँ ताड़ी पर सँ एक्साइज हटलै, ताहि दिन सँ डिबियाक स्थान पर पेट्रोमेक्स जड़ैत अछि। चारू कात भकभक इजोत।

अर्जुनक शागिर्द मे पहिल नम्बर पर छल भूल्ला। अर्जुन कैँ देखिते भूल्ला बाजि उठल–"आह! ओस्ताद आबि गेलाह।"

भूल्ला एक गिलास मे उज्जर, फफनाति ताड़ी ल' क' अर्जुन लग पहुँचल आ रिपोट देब' लागल–"बेगुसराय बला उधार गोली नहि देलक। कहलक पिछला उधार चुका, तखन अगिला उधार ले।"

अर्जुनक गिरोह मे सात नौजवान छलै। मुदा, ताहि मे कुल पाँच देशी रिभालवर आ तकर मात्र तीनटा गोली। आब अहीं कहू, डकैतीक काज कोना हैत? सब काज मे पूंजी चाही। पूंजीक अभाव अर्जुन कैँ पनपै मे महाबाधक छल।

–"तखन?" अर्जुन ताड़ीक गिलास भूल्लाक हाथ सँ लैत प्रश्न केलकै।

–"तखन की। सरपट मुसरीघराड़ी पहुँचलहुँ। अहाँक भैयाक गोर छूलऊँ। दुखड़ा कहलियै। ओ भरल एक पॉकिट गोली द' विदा केलनि आ कहलनि–'अर्जुन से कहना, उसका भतीजा पैदा हुआ है। फुर्सत मिले तो आकर देख जाय'।"

अर्जुनक मोन गदगद भ' उठलैक। ओ भूल्लाक पीठ ठोकलक। ताड़ी कैँ चुरुक मे ल' आचमनि केलक, एक घोंट ताड़ीक कुरुर केलक आ थोड़ेक ताड़ी हाथ

मे लय सम्पूर्ण देह पर छिटि लेलक।

अर्जुन ताड़ी नहि पिबैत अछि। असल मे अर्जुन कोनो निशा करिते ने अछि। मुदा, डकैतीक काज मे भभकैत ताड़ीक गन्ध जरूरी होइत छैक, तँ ई टोटमा।

अर्जुन हाथ मे लागल ताड़ीक चिपचिपाहटि कात करोट मे पोछैत भूल्ला सँ कहलक—"तों सब तैयार रह। हम हेड ऑफिस कैँ खबरि क' क' तुरंत वापिस आबि रहल छी।"

हेड ऑफिस यानी चमेलीरानीक अड्डा।

कनही मोदियानि अपन एकमात्र सन्तान चमेली कैँ बरौनी रिफाइनरीक इंगलिस स्कूल मे नाम लिखा क' हॉस्टल मे राखि देने छलैक। ओ जखन मरल त' चमेली दसमाक परीक्षा द' देने छलै।

कनही मोदियानिक मृत्युक बाद, चमेली पुरना डीह-डाबर कैँ बेचि हाइवे पर फैल जगह देखि नवका अड्डा बनेलक। नवका जमाना, नवका विचार। चमेलीक पक्का दूमंजिला मकान। रहैक, सूतैक, खाइ-पिबैक आ गुलछर्ड़ा करैक अलग-अलग कमरा। सब इन्तजाम फस्ट-क्लास। किछुए मास मे हाकिम हुक्काम, मंत्री-संतरी, चोर-उचक्का, पंडित-कसाइ सबहक माइ डियर 'चमेली'।

चमेलीक माथ पर भूखन सिंहक बरदहस्त। रिफाइनरी सँ हथिदह तक, सबसँ खूंखार डकैत भूखन सिंह, चमेलीक धर्म-पिता छल। दिआराक चन्हाई, क्यूलक बच्चा भाइ आ मोकामाक धोहरलाल तोपबाला—सब भूखन सिंहक मातहत, मानू भूखन सिंहक आगू खपटा।

चमेली कैँ ककरो परबाहि नहि। ओकर जवानी अंगार भ' क' दहकि रहल छलै। ऊपर सँ पढ़ल-लिखल, फटाफट अँग्रेजी बजैबाली, तेज-तर्रार आ मुँहफट। परगना भरिक डकैत पहिने चमेलीक अड्डा पर जेबे करत, हरी झण्डी लेत, फेर आगाँ पयर उठाओत, सैह नियम छलैक।

अर्जुन जखन चमेलीक अड्डा पर पहुँचल तखन मात्र सात बाजल रहैक। ओना अन्हरिया, अन्हार कैँ झंपने किछु बेसिए अन्हार भ' चुकल छलै।

दू टा पावरफूल लैम्पक बीच बैसलि चमेली। कान मे झुमका, नाक मे नथिया, गरदनि मे सोनाक हार, नहि किछु नहि, एकोटा गहना चमेली नहि पहिरने छल। ने पाउडर, ने स्नो आ ने काजर। किछु नहि, मात्र एकटा बिन्दी ललाट पर दमकैत रहैक।

अर्जुन चमेलीक सपाट चेहरा पर नजरि अँटकेलक। ओकर नजरि पिछड़ि

गेलै। मुदा, ओकरा स्पष्ट भान भेलै जे एकटा हँसीक लहरि चमेलीक आँखि मे काँपि गेल होइक। ओना अर्जुन कँ धोखा सेहो भ' सकैत छै। किंतु, चमेलीक बिन्दी सँ एकटा ज्योति पसरि रहल छलै, अहि मे कोनो धोखा नहि छलै।

अर्जुन दिस चमेली एकटक निहारि रहल छलीह जाहि मे कोनो विशेष निमंत्रणक अन्दाज छलै। चमेली बजलीह–"कौन है? रे, कुकुरमुत्ता तुम हो?"

'कुकुरमुत्ता' सम्बोधन अर्जुनक लेल छलै। कनही मोदियानि जीबिते रहै। चमेलीक उमिर तेरह-चौदह। अर्जुन बुझू पन्द्रह-सोलह। ओहि काल बज्र दुपहरिया रहैक। चमेली कनखी मारि अर्जुन कँ इशारा केलकै। फेर पछबरिया अन्हार कोठरी मे एसगरे ल' गेलैक, बिलैया सेहो चढ़ा देलकै। तकरा बाद, भीतर कोठरी मे की भेल से त' प्रायः देवतो कँ पता नहि लगलनि। बाहर आबि चमेली बिहुँसैत अर्जुन दिस ताकि क' बजलीह–"कुकुरमुत्ता।"

कुकुरमुत्ता सम्बोधन सुनि अर्जुनक नजरि झुकि गेलैक। ओ चुपचाप ठार रहल।

–"तुम्हारे वास्ते, कुकुरमुत्ता, दूसरा ऑडर है। कुछ देर पहले हुकुम आया है। आज रात को सेभेन्टी वन अप के स्लीपर में डकैती का कार्यक्रम है। तुमको उसमें जाना है। हाइवे डकैती में कुछ माल नहीं है। थाना को भी खबर है कि दो अन्हरिया का पहुँचौआ तुमने नहीं पहुँचाया है। तुम पर बड़े साहब ददू की आँख है। तुम युधिष्ठिर के सगे भाई हो, जवान हो, दिलदार हो, तभी तो चान्स मिला है। इस काम में तुम्हारा टेस्ट है। सफल होने पर एक धाकड़ मर्डर का काम मिलेगा। समझो तुम्हारे किस्मत का दरवाजा खुल गया है।"

चमेलीक मुँह सँ फहरी लाबा बनल शब्द निकलय लागल। एम्हर अर्जुनक माथ मे घंटी बाजब शुरू भ' गेल। मर्डरबला चान्स बड़ कठिने भेटैत छैक। भूखन सिंहक एहन कृपाक लेल सैकड़ों लाइन मे ठारे रहि जाइत अछि।

–"बोलो, तैयार हो?"

–"एकदम सँ तैयार छी। कहू त' गोपियाक पसिखाना सँ हम अपन गिरोह कँ बजा लाबी।"

–"फिर कुकुरमुत्ता जक्ती बात बोलता है। अरे, ट्रेन डकैती का काम अलग है, जोखिम का है। सड़क डकैती करने वाला उसमें फेल हो जाएगा। यहाँ जथ्था तैयार है। छोकड़ा-छोकड़ी मिलाकर बीस और तुम आ गया तो एक्कीस। रात के बारह बजे रबाना होना है। अभी चार-पाँच घंटा का देरी है। तुम अन्दर जाओ और

तैयारी मे जुट जाओ।"

अर्जुन भीतर प्रवेश केलक। विशाल आंगन। साफ-सुथरा, इजोत मे झलकैत। चारू कात काज भ' रहल छैक। एके सैंतालिस राइफलक ढेरी एक कात। एक गोटे ओकर चेकिंग मे लागल। दोसर कात छोटका-बड़का बमक नुमाइस। खेबा-पिबाक सामग्री दिस थोड़ेक छौंड़ा-छौंड़ी बैसल खा-पी रहल अछि। बहुत कात मे, मुदा पूर्णतः इजोत मे एक जोड़ा अपन बैटरी चार्ज कर' मे मस्त छल।

अर्जुनक मददिक लेल एकटा छौंड़ी आयल। ओकरा अपन काज सँ मतलब। 'कपड़ा बदलना है, हथियार कहाँ रखना है, एक्सट्रा मैगजीन जरूरी है।'

सबटा काज केँ निष्पादन क' क' वैह छौंड़ी एकटा मुँह झँपना आनि क' अर्जुन केँ देलकै आ ताकीत केलकै–"इसको इस तरह टाइट बाँधो कि आँख छोड़कर पूरा चेहरा ढक जाय।"

ठीक बारह बजे राति। सन-सन बहैत हवा अन्हरियाक छाती केँ विदीर्ण क' रहल छल। चमेलीक टाइट पेन्ट-सर्ट मे, पाँछा लटकल चमड़ाक चमौटी मे रिवाल्बर। चमेली अर्जुनक मुआयना करैत बाजलि–"मेरे पीछे बैठ जाओ।"

अर्जुन मोटर साइकिल पर चमेलीक पाँछा बैसल। ठीक ओहीकाल, वैह छौंड़ी जे पछिला चारि घंटा सँ अर्जुनक देहक समस्त पूर्जा केँ टीप-टाप क' क' ओकरा तैयार केने छल, अर्जुनक पाँछा मे आबि मोटर साइकिल पर बैसि गेलि। चमेली अर्जुन केँ फेर टोकलक–"कुकुरमुत्ता, मुझे कसकर पकड़ लो।"

मोटर साइकिल फरफरा क' स्टार्ट भेल। संगहि औरो मोटर साइकिल स्टार्ट भेल। अर्जुन कृष्णा आ कावेरीक बीच फँसल जा रहल छल।

अर्जुन पजिया क' चमेली के धेने छल आ सोचै छल। की कहलियै, अर्जुन ट्रेन डकैती द' सोचै छल जी नहि, ओ एतबे सोचै छल जे जखने चमेली अवसर देत ओ कुकुरमुत्ता सँ छोड़ि घोड़मुत्ता बनि क' देखा देतैक। पछिला छौंड़ी अलगे अर्जुनक देह मे घुसियेबाक बियोंत मे छल। मुदा, अर्जुन कइये की सकैत छल, चुपे रहल।

जमाना बदलल जा रहल छल। सब काज मे छौंड़ा सँ छौंड़ी आगू। ओ सब जखन कटवासाक गुमती लग पहुँचल त' अर्जुन सबटा मोटर-साइकिल केँ गनलक–कुल दस टा।

गुमती मैन रेलवेक लालटेनक ललका बत्ती केँ तेज करैत बाजल–"बस, पाँच मिनट। ट्रेन आने ही वाली है।" ट्रेन आयल। आस्ते भेल। फटाफट सब चढ़ि गेल।

डकैती शुरू भेल। तीनटा स्लीपर लुटल गेल। केवल कैश, गहना आ दामिल असबाव। पाँच बोड़ा में सबटा पैक। कुल बीस मिनट लागल। कोनो बिरोध नहि, कोनो अवरोध नहि। पसिन्जर सब डेरायल, नुकायल, औंघायल आ चुपचाप। मात्र चमेलीक रिभाल्वरक खलिया फायरक प्रतिध्वनि चारूकात पसरल छल। फेर ट्रेन आस्ते भेल, बहुत आस्ते भेल। एकैसो व्यक्ति उतरि गेल। ट्रेन स्लो सँ फास्ट भेल आ आँखि सँ ओझल भ' गेल।

उतरै काल चमेलीक वामा पायर मे मोच पड़ि गेलैक। ओ नंगराए लागलि। अर्जुन कैँ अपन वीरता देखेबाक सुअवसर भेटलैक। ओ चमेली कैँ कन्हा पर लदलक आ फूल-सन सुकुमारि कैँ नेने दुलकी चालि मे चलैत वापस कटवासा गुमती लग पहुँचल। सब जा चुकल छल।

गुमती मैन अर्जुनक कन्हा पर चमेली कैँ देखि बिफरि क' हँसि पड़ल। ओकर अगिला दाँत में सोनाक कील ठोकल रहै। बिना किछु कहने अर्जुन मोटर-साइकिल स्टार्ट केलक। चमेली पाँछा मे बैसि अर्जुन कैँ पजिया क' पकड़ि लेलक। ओहि मोटर-साइकिलक तेसर सवारी पहिने जा चुकल छलै। डकैतीक कानून, 'वापसी मे किसी के लिए रुको नहीं, भागकर अड्डा पर पहुँचो।'

चमेलीक शरीर सँ एकटा अत्यंत अजूबा मादक सुगंधि विसर्जित भ' रहल छलैक। अर्जुन कैँ ताड़ीक भभकैत गन्धक कतौ अत्ता-पत्ता नहि रहलैक। ओ आपसी मे मोटर-साइकिल बहुत तेज चला रहल छल। चमेलीक गर्म सांस ओकर पीठक हड्डी कैँ छलनी केने जाइत छलै।

जखन अर्जुन आ चमेली अड्डा पर आपस आयल त' भोर भेल नहि छलै, भोर होबहिबला छलै।

चमेली एकटा कोठरी मे जा क' टेलीफोन सँ ककरो पूरा रिपोट पहुँचौलक, फेर आदेश ग्रहण केलक आ आपस अर्जुन लग आयल।

—"यह है दस हजार रुपैया, तुम्हारा हिस्सा। साहेब यानी ददू का हुकूम है वापिस घर जाओ। अगिला आदेश का इन्तजार करो।"

अर्जुन रुपैया कैँ दहिना पेन्टक जेबी मे ठुसलक आ टकटकी लगा क' चमेली दिस ताकय लागल। अर्जुनक नजरि मे एकटा पैघ नजरिया साफ देख' मे आबि रहल छलै।

भोरुका समय, पुरबा बसात मे सिहरन, अतृप्त कामक प्रचण्ड वेग। ताहि पर सँ कामदेव देशी पिस्तौल सँ ताबड़तोड़ फाइरिंग क' रहल छलाह। चमेली एकटक

अर्जुनक आँखि मे देखि रहल छलीह। प्रकृति पुरुष मे समर्पणक लेल आतुर भ' रहल छलीह। एक क्षण त' एहनो अभास भेल जे डकैतीक सरदारीन, चमेली बेबस भ' रहलीह अछि।

मुदा, वाह रे चमेली! ओ कामक वेग केँ मूलाधर चक्र पर बजारि एक अद्‌भुत विवेकक परिचय देलनि। हुनक मुखाकृति पर आभाक विस्तार होमय लागल। शायद भविष्यक गर्त मे नुकायल कोनो पैघ कार्यक सम्पादन होयत तकर आभास सहजहिँ दृष्टिगोचर होबय लागल। चमेली अँटकल ओ फँसल अबाज मे बजलीह– "जानते हो अर्जुन, मैं तीन वर्षों से डकैती का काम कर रही हूँ। सैकड़ों डकैती का अनुभव मुझे बतला रहा है कि यहाँ के लोग आलसी किंतु शांतिप्रिय हैं। मैं भी इन्हीं लोगों के बीच से आई हूँ। इस तरह के लोगों की भलाई इन पर शासन करके ही किया जा सकता है। और यह भी सच है कि इन पर शासन करना कुछ भी कठिन नहीं है।"

चमेली पढ़लि-लिखलि, अर्जुन मूर्ख। चमेली की बाजि रहल छथि, अर्जुन केँ बुझै मे किछु नहि ऐलैक। चमेली फेर बजलीह–"इस सपाट मैदान मे सिर्फ घास ही घास है। लेकिन, बहुत जल्द एक विशाल पेड़ उगने वाला है। वह पेड़ मैं बनूँगी। सभी मेरी छाया में आयेंगे। मैं सबका भाग्य लिखूँगी। सच पूछो तो मैं इस प्रान्त की रानी बनने वाली हूँ। जिस रास्ते मैं चल रही हूँ और चलने वाली हूँ, मुझे अच्छी तरह पता है कि वह कहाँ तक पहुँचता है। हाँ, यह भी सच है कि मुझे एक मर्द की जरूरत होगी। समय आने पर मैं तुमको अपने पास बुला लूंगी। मेरी आवाज सुनकर तुम आओगे क्योंकि मैं तुमसे प्यार करती हूँ। तुम ही मेरा पहला और आखिरी प्यार है, समझे।"

एखन अर्जुन किछु नहि बुझलक। ओकर समझक आगाँ एकटा पाथर छल, पियासल ओ पसरल। ओकर कान मे चमेलीक आबाज फेर टकरेलै–"और अभी की बात जान लो। तुम औरत के गले का गहना नहीं छीन सका। डकैती के उसूल के विरुद्ध। इसी से तुमको मर्डरवाला काम नहीं दिया जाएगा। तुम इस काम को करने की योग्यता नहीं रखते हो। तुमको अभी और निडर-निष्ठुर बनना पड़ेगा। तुम्हारे अंदर कोई देवता है जिसे मारपीट कर भगाना पड़ेगा। सफलता के लिए जो भी काम करो उसमें इमानदारी का होना जरूरी है।"

अर्जुन के मोन पड़लैक, ट्रेन मे डकैती काल ओहि नववधुक गरदनि मे सोनाक गहना पर हाथ देलक त' ओ बाजि उठल छलै–'ई मंगल सूत्र थिक। एकरा

जुनि लैह।'

फेर ओहि नववधुक आँखि सँ करुणाक इनहोर नोर ओकरा हाथ पर खसलैक। ओ हाथ छीप नेने छल।

अर्जुनक मोने ई बात कियो ने देखलक आ ने बुझलक। मुदा, से नहि। डाकूक मुखिया, चमेलीक नजरि सँ किछु नुकायल नहि रहि सकैत छलै। अर्जुन कँ अपन गलतीक एहसास भेलैक। ओकर आँखि आओर कातर भ' उठलैक।

अर्जुनक दयनीय दशा देखि चमेलीक हृदय मे कतहु सँ एक आना दयाक भाव जगलैक। ओ चुचकारी दैत बजलीह—"खैर, जो हुआ सो हुआ। तुम दुखी मत होओ। एक बैंक लूटने का प्लान बन रहा है। अभी फाइनल नहीं हुआ है। फाइनल होते ही मै उसमें तुमको शामिल करने का प्रयास करूँगी। अब तो खुश! अब सीधे घर जाओ।"

खिसिआयल महादेव कँ परचारैत अर्जुन अपन गाम मिरचैया लेल विदा भेल। आकाश मे चकमैत भोरुकवा तारा दिस तकैत ओ सोचि रहल छल जे चमेलीक अन्तिम बात जँ सत्य हेतैक तखने ओकर भाग्य जगतै। तामे बहुत रास दुख ओकरा छपने रहत।

पहिल दुख जे बहुतो प्रयास केलाक बादो ओ कुकुरमुत्ता सँ घोड़मुत्ता नहि बनि सकल।

दोसर दुख जे मात्र एकटा मंगलसूत्रक कारणें ओकरा मर्डरबला काजक चान्स हाथ अबैत-अबैत खिसकि गेलैक।

आओर तेसर दुख! गाम पहुँचि क' तेसर दुख परिलक्षित भेलैक। कमचीवाला मचानक नीचा, उत्तर मुंहें सिरमा केने, कीर्तमुख मुँह बौने मरल पड़ल छलाह। उज्जर नवका कपड़ा सँ हुनक देह झाँपल छल आ सिरमा लग गोइठाक धुआँ आकाश मे बिलीन भ' रहल छल।

अर्जुन कँ देखिते नकुल आ सहदेवा, 'भैया, होउ भैया' कहैत ओकरा सँ लेपटा गेलै। अर्जुनक ठोर पटपटा उठलै—'बाप, बाप मरि गेल। आइ हम टुअर भ' गेलहुँ।'

❖

दू

—"रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीताराम। अजी, ओ महाराज जी, तनी हटू। हमारा अन्दर जाए दिअ।"

कह' बला व्यक्ति गेरुआ वस्त्रधारी, ट्रेनक फस्ट-किलास डिब्बा मे चढ़ैक प्रयत्न क' रहल छथि। मुदा डिब्बाक दरबज्जा लग एक व्यक्ति हाथ मे स्टेनगन नेने ओहि महात्मा कँ चढ़ै सँ रोकि रहल अछि।

अभागल प्रान्तक अति अभागल टीसन, निर्मली। भोरुका करीब आठ बजेक समय। जेठक रौद्र सूर्य, आकाश मे फनैत आगि उझील रहला अछि। एखन एहन गर्मी त' दुपहरिया मे केहन रौद तकर मात्र कल्पना सँ देह काँपि उठैत अछि।

अठबज्जी ट्रेन निर्मली सँ खुजय लेल तैयार। ट्रेन मे लार्ड डलहौजी समयक बनल एक मात्र फस्ट किलासक डिब्बा। डिब्बाक एक बर्थ पर एकटा स्मार्ट करीब बीस वर्षक युवक, टाइट पेन्ट-शर्ट मे। हुनका संगे करीब चौदह वर्षक परम रूपवती एकटा नवयुवती। ओहो टाइट पेन्ट-शर्ट मे, मुदा शर्टक ऊपरका दूटा बटन खुजल। दोसर बर्थ पर एकटा केचुआयल, करीब साठि वर्षक, मोटरी जकाँ तोंद आ लगातार तीन एसेम्बलीक इलेक्शन जीतै बला विधायक, उज्जर जाजीम पर लम्बा-लम्बी पड़ल। विधायकजीक समग्र ध्यान सामने टाँग पर टाँग रखने नवयुवतीक सौन्दर्य मे केन्द्रित छल।

विधायकजीक बर्थक ठीक नीचा, हुनक राजस्थानी कमानीदार जूताक बगल मे, हुनकर बडीगार्ड एक हाथ मे गिलास तथा दोसर हाथ मे तौलिया मे लपटाओल स्कॉचक बोतल नेने बैसल छल। बडीगार्डक हथियार यानी स्टेनगन ओहि ठाम ओकर बगल मे पड़ल छलै।

विधायकजीक दोसर बडीगार्ड, डिब्बाक दरबज्जा लग, स्टेनगन तनने आगन्तुक महात्माजीक रास्ता रोकने कहि रहल छलै—"देखता नहीं है, यह फस्ट क्लास है? दूसरे में जाओ।"

नवयुवतीक ध्यान महात्मा दिस गेलै। ओ मूड़ी झुका खिड़की सँ महात्मा कँ

देखबाक प्रयास केलक। मुदा अही प्रयास मे, ओकर उपरका दूटा खूजल बटनबला कमीज सँ गोल-मटोल, चिक्कन, विधायकजीक करेज मे बरछी भोंकैबला, विद्यापतिक जुगल कुच छहलि क' बाहर आबि गेलनि। नवयुवती झपटि क' अपन वस्त्र दुरुस्त केलनि आ खिड़की सँ मुँह सटा क' जोर सँ बाजि उठलीह–"स्वामीजी!"

जेना वीणाक सब तार एके बेर झंकृत भ' उठल होअय, तहिना ओहि युवतीक स्वर-ध्वनि सम्पूर्ण निर्मली टीसनक प्लेटफार्म कैँ झनझना देलक।

टीसन पर लोकक भीड़ जमा भ' गेलै। लोक सबहक एक बिताक गरदनि मे तुलसीक कण्ठी, ठरका चानन, फहराइत टीक आओर फाटल आँखि। सब कियो ओहि फस्ट किलास डिब्बा दिस ताकय लागल। ओहि विरान टीसन पर एहन अजगुत बात।

विधायकजीक बडीगार्ड अपन कर्तव्य वहन करैत ओहि स्वामीजी कैँ डिब्बा मे चढ़ै मे पूर्ण बाधा उपस्थित केने छल। युवतीक खिड़की दिस घुमलाक कारणे विधायकजीक तंद्रा एकाएक भंग भ' गेलनि। जखन सँ ओ अहि डिब्बा मे आयल छलाह, हुनक समग्र चिंतन, सांख्यमार्गी जकाँ, ओहि युवतीक उठैत-खसैत, नोकदार खूंटी मे टाँगल छलन्हि। व्यवधानक कारणे प्रान्तक महान आ यशस्वी नेता कैँ क्रोध भ' उठलनि। ओ खिसियाति बजलाह–"काहे रोकते हो, आने दो।"

स्वामीजी डिब्बाक भीतर आबि खाली तेसर बर्थ पर पलथी मारि क' बैसि रहलाह। गाड़ी सीटी देलक आ धकधका क' धक्का दैत विदा भेल।

–"स्वामीजी, कत' के यात्रा में प्रस्थान कलियै अछि?" प्रश्न पुछैत युवती सुभ्यस्त भ' क' सोझ भेलीह। विधायकजीक आँखिक दूरबीन ठीक एंगिल मे आबि गेल। आब कोनो चिन्ता नहि। ओ नीचा मे दाँत निपोरने बैसल बडीगार्ड, जे किछु काल पूर्व विधायकजी सँ आँखि बचा कैँ स्कॉचक बोतल सँ पैघ दू घोंट उदरस्त क' चुकल छल, सँ कहलनि–"रहमान, दवा दो।"

रहमान नामक बडीगार्ड बोतल सँ आधा गिलास स्कॉच ढारलक, फेर थर्मस सँ बर्फ निकालि क' मिलेलक आ गिलास विधायकजीक हाथ मे पकड़ा देलक। किछु काल पहिलका झंझट सँ विकल विधायकजी सम्पूर्ण गिलासक पेय कैँ एकहि सांस मे घोंटि गेलाह। फेर पूर्ववत अपन सुरमादार आँखि कैँ युवतीक मनचुम्भी मारूक स्थान पर केन्द्रित क' निश्चिन्त भेलाह।

–"हम त' हरिद्वार जा रहल छी।"

स्वामीजी पलथी पर राखल मोटका किताब सँ नजरि हटा क' युवती कैँ

जबाब देलथिन आ फेर प्रश्न केलनि—“मुदा ओ अइ मैना, अहाँ काकेक संग अहि अतिकाल मे कत' विदाह भेलऊँ अछि?”

अर्थात युवतीक नाम मैना आ युवकक नाम काके। ओहि तीनूक बीच वार्तालाप होबय लागल। ट्रेन अपन फुल स्पीड अर्थात पाँच-छः किलोमीटर प्रति घंटाक गति मे जा रहल छल। अँग्रेजक बनाओल पटरी आ बिनु बजाओल प्रत्येक वर्षक कोशीक जानलेबा बाढ़ि। समस्त इलाका मे अभाव आ दरिद्रताक साम्राज्य। भविष्य मे कोनो परिवर्तन होयत तकर दूर-दूर तक कोनो आशा नहि। धहधह जरैत बाध बोन। कतौ-कतौ गाछ वृक्षक दर्शन। ओना चारू कात त' अकाले पसरल रहै।

सत्य वा झूठ। स्वामीजी, काके आ मैनाक गप-सप सँ पता चलल जे ओ सब भारदाक सटल कटकी ग्रामक निवासी छलाह। काके मेडिकल टेस्ट दिअ पटना जा रहल छल। मैना जिद्द पसारि देलक आओर काकेक संग विदा भ' गेलीह। ओ सब मौसीक डेरा पर दू दिन रहि वापस होयत। स्वामीजी समस्तीपुर सँ हरिद्वारक बोगी पकड़ि क' प्रस्थान करताह।

ट्रेन एक-दू टीसन रुकैत आगाँ बढ़ल। ओहि फस्ट-क्लासक डिब्बा मे धीरे-धीरे आलस्य पसरि गेल छलै। सब कियो गुमसुम। मैना काकेक गरदनि पर मूड़ि रखने चुपचाप पड़ल छलीह। हुनक काजर पोतल आँखि बन्द छलनि। काके कखनोकाल एम्हर-ओम्हर ताकि लैत छल। स्वामीजी एकाग्र भ' किताबक पन्ना मे अध्यात्मक तत्त्व कैँ ताकि रहल छलाह।

मुदा, विधायकजी मे कोनो परिवर्तन नहि भेल। हुनक समस्त वासना जे हुनक साठि वर्षक उमेरक कारण आँखियेटा मे रहि गेल छलनि, मैनाक सौन्दर्यक निर्लज्ज अवलोकन मे व्यस्त छल।

बारम्बार विधायकजीक चर्चा भ' रहल अछि। ताहि कारणें हुनक जीवनक देदीप्यमान इतिहास जानब आवश्यक।

लार्ड कर्नवालिसक चलाओल जमींदारी व्यवस्था बहुतो प्रथाक जन्म देलक। ओहि मे भेल खबास-खबासिनक प्रथा। भखरांइवाली अपन समयक प्रसिद्ध खबासिन छल। ओकरा दूटा बेटी छलै—चानो आ मानो। चानो सासुर मे बसैत छल। मानोक बियाह पछिला अगहन मे भेलै बियाह क' पाहुन कलकत्ता गेलाह से आब एगारह मासक बाद एकटा बैरन चिट्ठी पठौलनि—बाद समाचार जे कोठीक मलकाइन बिस्वास देलक हें जे अगिला मास फागुन मे एक महीनाक छुट्टी देत। हम भरिसालक दरमाहा आ जिनिस-पत्तर ल' क' फगुआ तक आयब।

भखरांइबालीक करेज खुशी सँ फाट' लगलैक। ओ हिसाब जोड़लक, आब त' फगुआक दिन बीस दिनक भितरे। ओ अपन बेटी मनियाँक केश मे गमकौआ तेल देलक, काजर केलक आ स्नो-पाउडर लगा क' ओकरा परी बना देलक। फेर मनियाँ कँ बुझबैत कहलक—जो, जाके बाबू साहेब सँ एक सय मंगने आ। मास भरिक सिदहा एखने कीनि लेब से ठीक। पाहुन कलकत्ता सँ पहिने एतहि औताह। हुनका अबिते की कोनो वस्तुक कमी रहत!

मनियाँ जखन बाबू साहेबक दलान पर पहुँचलि त' ओ मसनद पर ओंगठल अखबार पढ़ैत रहथि। आंगन सँ हुनकर तेसर पत्नी, जे भागलपुर जिलाक बौंसी सँ आयल छलखिन, तिनकर कर्कश आबाज आबि रहल छलै। ओ अपन दुनू सौतीन संगे वाक्युद्ध क' रहल छलीह—"गइ, तोहें की बजै छौ? हमे छी राजाक बेटी आ तोहें छौं, दरिदरक बेटी। चुपे रहौं, नहि त' आबि कँ झोंटा नोचि लेबहौं।"

बाबू साहेब अर्थात ठाकुर त्रिलोकीनाथ सिंह। भारत स्वतंत्र भ' चुकल छलै, मुदा जमींदारी नहि गेल रहैक। बाबू साहेब तीस-पैंतीस तौजीक मालिक। महराजक सम्बन्धी, दुमहला भवन, चारूकात कइएक बीघा मे पसरल आम, लीची, कटहर, जामुन आ फूलक बगान। अपन पोखरि आ पिराभिट महादेव मन्दिर। तीन बिआह केलनि मुदा सन्तानक मुँह एखन तक नहि देखि सकल छलाह। आब चारिम बिआहक जोगार मे रहथि कि भखरांइबाली खबासिनक छोटकी बेटी, मनियाँ सोझा मे ठार भ' गेलनि।

—"अच्छा, एक सय टाका चाही?" बाबू साहेब आँखि सँ मनियाँ कँ तजबीज कर' लगलाह, मुदा कान पथने रहथि आंगन मे। समय आ अवसरक पारखी बाबू साहेब कँ निश्चय भ' गेलनि जे आंगन मे पसरल वाक्-युद्ध जल्दी समाप्त होब' बला नहि। ओ मनियाँ कँ दलानक भीतरबला कोठरी मे ल' गेला। ओकरा हाथ पर सय टाका राखि देलनि, संगहि चारिम बियाहक कल्पना मे कँपैत संतानक सम्पूर्ण इच्छा कँ सेहो मनियाँक कोखि मे उझील देलनि।

मनियाँ छिड़िआयल टांग कँ समटैत, आँचर सँ आँखिक काजर कँ पोछैत आ माथक बिन्दी कँ तकैत जखन अपन आँगन मे पहुँचलि त' ओकर माय भखरांइबाली सूप मे चाउर फटकै छलै। पुछलकै—"टाका देलकौ?"

'हँ' कहैत मनियाँ मायक हाथ मे सय टाका राखि देलकै आ फेर फूटल चूड़ी आ मसकल आंगी दिस सेहो इशारा केलकै।

भखरांइबाली टाका कँ खूट मे बन्हैत कहलकै—"जे भेलौ से बिसरि जो।

डिगडिगिया पिटैक कोनो काज नहि। ई सब कने-मने होइते रहै छै। मुदा ध्यान द' क' सुन। ओहि कोढ़ियाक दलान दिस फेर मुँह नहि करिहएँ। पाहुन कँ कलकत्ता सँ आबै मे आब दिने कतेक छैक। पाहुन कँ अबिते सब किछु सरिया जेतौक, निश्चिन्त रह।"

मुदा, पाहुन कोनो कारणें नहि आबि सकलाह। बाबू साहेबक सन्तानक चरम इच्छा मानियाँक पेट मे परिलक्षित होब' लागल। आब, एहन अवस्था मे कयले की जा सकैत छलै।

मनियाँ ठीक समय पर गोर-नार, एकटा सुन्नर बेटा कँ जन्म देलक। मुदा, बेटाक जन्मकाल ओकरा किछु भ' गेलैक। बंगाली डाक्टर बाद मे कहलकै जे मनियाँ टिटनस बिमारीक चलते मरि गेल। टिटनसक कोनो दबाइ नहि छै।

भखरांइबाली जेना-तेना ओहि नेनाक सेवाक-खेबाक इन्तजाम केलक। नेना टनमनाइत पाँच-छह वर्षक भेल। भखरांइबाली आब शरीर सँ लचरि गेल छल। ओ हिम्मत हँसोति क' एक दिन बाबू साहेबक ओहिठाम पहुँचलि।

ओहि दिन ठाकुर त्रिलोकीनाथ सिंह अपन सतमायक सराधक जयवारी भोज मे बाझल रहथि। हजारो नोतहारी पंघति मे बैसल सटासट जीम रहल छल। बासमती अरबा चाउरक भात, आमिल देल राहरिक दाइल, सात तरहक तरकारी, बेस फूलल-फूलल बड़ी आ ओरिका सँ परसल देशी घी। बुझू बहुत दिनक बाद एहन रमनगर भोज हाथ लागल छल।

की हल्ला भेलै। भखरांइबाली हाथ नचबैत चिचिया-चिचिया क' बाजि रहल छलै–"औ बाबू साहेब, हम सत्य बजै छी। ई अहींक जनमाओल बेटा छी।"

भोज मे लूटन झा अदौरी-भाटा परसैत छलाह। ओ दालिक बारीक बिलट झा कँ रोकि पुछलनि–"कथिक हल्ला छै? अँए हौ, की बात छै?"

बिलट झा सविस्तार सब बात लूटन झा कँ बुझबैत जवाब देलकनि जे बाबू साहेब एकर प्रमाण माँगि रहलखिन अछि।

–"उचिते की ने। बिना प्रमाणक ई गप्प सिद्ध कोना हैत। हौ, प्रमाणे सँ अदालत चलै छै ने।"

बारिक अपन काज में व्यस्त भ' गेलाह। भखरांइबाली लोहछल नेनाके पहुँचा पकड़ने वापस भ' गेलीह। ओ टोले-टोल, गाम-गाम सबकँ सविस्तार सूचना द' एलै। मुदा, ओ प्रमाण नहि जुटा सकलि।

प्रमाण तकैत-तकैत भखरांइबाली एक दिन अहि धरती कँ त्यागि देलक। ओ

नेना आब टोल-पड़ोस मे, फेर गाम-गाम घुमि भीख मांगि क' समय बितब' लागल। ओ प्रायः सदिखन नांगट रहै छल। ताहि कारणे कियो ओकर नामकरण क' देलकै– ठाकुर नांगटनाथ सिंह।

किछु समयक बाद भीख मांगैक क्रम मे नांगटनाथ झंझारपुर पहुँचल। झंझारपुर मे बिर्रो अधिआइ छलै। दू वर्षक बाद बटेर सिंहक 'दिलबहार' नौटंकीक आगमनक सूचना झंझारपुर कैँ अपन गिरफ्त मे ल' नेने छलै।

सब ठाम एकेटा गप्प। दालमण्डीक तीन आओर चतुर्भुज स्थानक दू, कुल पाँच नवकी नर्तकी इजोतक पूरा इन्तजाम, नवका परदा, जंगल-सीन अलग आ महल-सीन अलग। आब आरो की चाही? अइ बेर चौआनियाँ टिकटबला पाछाँ बैसत आ अठनियाँ आगाँ। सबसँ आगाँ ठीक हरमोनियम आ तबला मास्टरक बगल मे थोड़ेक कुर्सी रहतै जाहि पर जिलाक हाकीम फ्री मे नौटंकी देखताह।

बटेर सिंह पहिल दिन 'लैला-मजनूं' खेलायत। फेर 'सिरी-फरहाद', 'नल-दमयन्ती', 'कटी पतंग' आदि खेलाइत अन्त मे 'सुल्ताना डाकू'। नौटंकीक महीना भरिक प्रोग्राम झंझारपुरबला कैँ हर्षित आ प्रफुल्लित केने रहत।

ओही हरबिर्रो मे नांगटनाथ भीख मंगैत-मंगैत बटेर सिंहक सोझा मे आबि ठार भ' गेल।

बटेर सिंहक उमिर साठिक धक मे। छपरा दिसका रहनिहार। ओ चौकी पर बैसल छल। ओकर खास नोकर झरोखिया ओकर घुट्टीक मटर फोड़ि रहल छलै। बटेर सिंह किछु काल तक अपलक नांगटनाथ कैँ देखैत रहल। फेर झरोखिया कैँ हुकुम देलकै–"लौंडा को नौटंकी मे भर्ती कर लो।"

नांगटनाथ बटेर सिंहक दिलबहार नौटंकी मे की भर्ती भेल जे ओकर नसीबक पेटार खुजि गेलैक। नीक आ भरिपेट भोजन, साल-दू साल जाइत-जाइत नांगटनाथ कैँ पुरुष बना देलकै।

बटेर सिंहक जवानीक प्रेमिका छलै पटोरमणि। आब पटोरमणि कोनो पाट नहि करै छै, मुदा रहै छै नौटंकीए मे। कखनहुँ काल जखन बटेर सिंह मूड मे आबय तँ पटोरमणि सँ हँसी-मजाक क' लिए, बस। नांगटनाथ पटोरमणिक दुलरुआ बनि गेल। तकर कारण छलै पटोरमणिक गठिया दर्द। नांगटनाथ मोन लगा क' घंटो पटोरमणिक गठियाबला स्थान कैँ जाँत-पीच करै छल आओर पटोरमणिक हिस्सा सँ सेर भरि दूध ओकरे हाथे पिबैत छल।

परिवर्तन त' समयक विधान थिक। सालक साल समय बितैत गेल आ

गाम-गाम, नगर-नगर घुमैत दिलबहार नौटंकी पूसा रोड सँ कनिकबे पश्चिम कटोरिया गाम मे अपन खुट्टा गाड़लक। नांगटनाथक नौटंकीक प्रत्येक विभाग पर पूर्ण आधिपत्य रहैक, मुदा आमद खर्च पर एखनो बटेर सिंहक कब्जा छलैक। पांजरक हड्डी जागल, कोहासन पेट, चोटकल गाल, आ कंकाल बनल बटेर सिंह जखन सबकेँ महिना बाँटय त' नांगटनाथक मिजाज मे पसाही लागि जाइक–'हे परमेसर! कहिया बटेरबा मरत।'

बटेर सिंह मरल। नांगटनाथक मददगार भेलैक झरोखियाक बेटा ननखेसरा।

ननखेसरा नांगटनाथ कँ बुझबैत कहलकै–"कहिया तक बाट तकब'। ई बटेरबा त' नेने मे कौआक जी पीस क' पी नेने अछि। बाप रौ बाप। एतेक दिन कियो मनुक्ख जीबए।"

रातिक अन्तिम पहर छल। मसनद सँ चांपि, बटेर सिंहक इहलीला कँ समाप्त क' देलक आ कन्तोर सँ लगभग बीस हजार टाका लए नांगटनाथ आ ननखेसरा सरपट भागल। भगैत-भगैत गंगाकात जा क' साँस लेलक।

गंगाकात मे एकटा मलाह चिचियाति छलै–"पाँच रुपैया खेबा मे, गंगा पार जेबा मे। आबि जाउ, नाव खुजैबला छै।"

बीच गंगा मे लहरि भौर मारै छलै। नांगटनाथ आ ननखेसरा कँ डर सँ घिग्घी उठि गेलैक। ओकरा दुनू कँ अपन पाप कर्मक बोध होम' लगलैक। बटेर सिंहक बहरायल आँखिक पीड़ा डिम्हा आगाँ मे नाच' लगलै। आब जे करथि गंगा माता।

वाह रे गंगा माइ। हिनकहिं असीम कृपा सँ दुनू गोटे पटनाक रानीघाट पर सकुशल पहुँचि गेल। दुनू स्नान केलक, फेर भरिपेट जिलेबी खेलक। एक कात एकान्त मे जा क' आधा-आधा रुपैया बँटलक। फेर ननखेसरा नांगटनाथ सँ बाजल–"हम एक कात जाइत छी। तों दोसर दिस जो। आब एकर आगाँ अपन-अपन नसीबक भरोसा।"

ननखेसराक गेलाक बाद, नांगटनाथ बिदा भेल। जेम्हर-जेम्हर सड़क ओकरा ल' गेलैक ओ जाइत रहल। पैघ शहर, चौड़ा रस्ता, लोकक भीड़, मोटरक पीं-पां। नांगटनाथ कँ किछुओ ने पता रहैक जे कोन पूव आ केम्हर पश्चिम। बस, चलैत गेल।

विधाता मनुक्खक कपार पर भाग्यरेखा अंकित केने छथिन्ह। सब काल आ सब दशा मे भाग्य संगे रहैत छैक। नांगटनाथ बौआइत-ढहनाइत एकटा पैघ मैदान मे पहुँचल। ओत' लोकक अपार भीड़। सबहक हाथ मे दूरंगा झंडा, माथ पर दूरंगा

टोपी आ पयर हलचल। नांगटनाथ कैँ भान भेलैक–हो न हो इहो कोनो नौटंकिए ने होअए।

किछु कालक बाद लोकक भीड़ पंक्तिबद्ध भ' एक कात सँ सड़क पर प्रस्थान केलक। 'देश का नेता कैसा हो, गुलाब मिसिर जैसा हो', 'मेरा छाप कबूतर छाप' आदिक नारा आरम्भ भेल। नांगटनाथ ओहि लोकक झुण्ड मे सन्हिया गेल।

थोड़ेक कालक बाद, नौटंकीक माजल बटेर सिंहक लौंडा, अपन समस्त प्रतिभा कैँ उजागर कर' लागल। किछुकालक बाद नांगटनाथ गुलाब मिसिरक बिन हुडबला जीप पर उल्टा मुंहे ठार छल आ गरदनिक सिरा कैँ फूलौने आगाँ-आगाँ बाजि रहल छलै–"देश का नेता कैसा हो?" फेर समग्र भीड़ बजैत छलै–"गुलाब मिसिर जैसा हो!"

राति मे एरिगेशन डिपार्टमेंटक रेस्ट हाउस मे, एकटा पलंग पर थाकल-चूड़ल गुलाब मिसिर पट पड़ल छलाह। आओर नांगटनाथ पूर्ण मनोयोग सँ हुनका जाँति रहल छल। पोटरमणिक गठिया जाँतपीच करैत-करैत नांगटनाथ कैँ जाँतैक पूर्ण दक्षता प्राप्त भ' चुकल छलैक। जीवन मे प्राप्त अनुभव कहियो व्यर्थ नहि होइत छैक। नांगटनाथ गुलाब मिसिरक प्रत्येक मांसपेशी मे सन्हिआयल तनाव कैँ विश्रामक स्थिति मे आनि देलक। गुलाब मिसिर कैँ निन्न भ' एलै।

गुलाब मिसिर प्रातःकाल जखन उठलाह त' पूरा फ्रेस छलाह। हुनका आगाँ नांगटनाथ चाहक कप नेने ठार छल।

गुलाब मिसिर मे नेताक गुण। एकहि नजरि मे ककरो चिन्हैक निपुणता। बिना कोनो प्रश्न पुछने, बिना कोनो परिचय प्राप्त केने ओ अपन नजरि सँ नांगटनाथक अवलोकन केलनि आ मोने-मोन बजलाह–"साला, वर्णशंकर लगता है। मेरे काम का है। इसे साथ मे रखना ठीक होगा।"

नांगटनाथ गुलाब मिसिरक खासम-खास खबास बनि गेल। नांगटनाथक जाँतैक कला मे दक्षता ओकर जीवन कैँ उच्च शिखर पर पहुँचेबा मे मुख्य कारण बनल।

गुलाब मिसिर जखन मुख्यमंत्रीक कुर्सी पर आसीन भेलाह त' नांगटनाथ आओर प्रभुताबला बनि गेल। पी. ए. कैँ के कहए, गुलाब मिसिरक पत्नियो कैँ भेंट करैक परमिशन नांगटनाथ सँ लिअ पड़ैक।

एक समयक गप थिक। गुलाब मिसिर पानक पाउज करैत कुर्सी पर बैसल छलाह। हुनक नजदीकी सम्बन्धी जे पार्टीक महामंत्री सेहो छल, अगामी इलेक्शन

सँ पार्टीक कैन्डिडेटक फाइनल लिस्ट बना रहल छल। तइमे एक सीट पर जीच भ’ गेलै। गुलाब मिसिर अपन बादशाही लहजा मे कहलनि–“शास्त्री को टिकट नहीं देना है। वह पाजी है।”

महामंत्री झुंझला क’ बजला–“त’ ककरा टिकट देबैक? कियो कटगर व्यक्ति अहि सीटक दाबेदार नहि अछि। कही त’ नांगटनाथ के टिकट द’ दिअनि।”

महामंत्रीक व्यंग्य नांगटक लेल वरदान बनि गेलै। गुलाब मिसिर महामंत्री कैँ जबाब देलनि–“ठीक तो है। इसी साले को टिकट दे दो।” नांगटनाथ सहजहि विधायक बनि गेल।

नांगटनाथक गात मे ठाकुर त्रिलोकीनाथक सोनित, भखरांइबालीक पालन-पोषण, मुँह पर बटेर सिंहक नौटंकीक डायलॉग, हाथ मे पटोरमणिक गठियाक अजमायल कलाक प्रवीणता आ ताहू पर विधायकक कुर्सी। सभ बात विलक्षण। ओ मात्र किछुए वर्षक भीतर ट्रान्सफर, पदोन्नति, ठीका पर जान लेब, ठीका पर पुल बनबैक, अर्थात् शासनक प्रत्येक दाव-पेंच मे माहिर भ’ गेल।

मुदा नांगटनाथ मंत्री कहिओ ने बनि सकल। विधायक बनलोक बाद ओ गुलाब मिसिरक खबासी मे जीवन यापन करैत रहल।

आब खिस्साक आदि मे आउ। ओहि दिन एकांत मे गुलाब मिसिर नांगटनाथ कैँ कहलनि–“जरूरी भी है और मेरी मजबूरी भी है। इस काम के लिए इच्छा नहीं रहते हुए भी तुम्हारा चुनाव करना पड़ा। इस तारीख को भारदा से आकर तीन जन तुम्हें सूटकेश देगा। उन तीनों सूटकेसों को ट्रेन से तुम झंझारपुर लाओगे। वहाँ स्टेट प्लेन रहेगा। उसमें तुम तीनों सूटकेस लेकर पटना आओगे और सीधे मेरे पास पहुँचोगे। तुम दिन-रात पीते हो और लफन्दरी में भी तुम्हारा अच्छा नाम है। मैं तुम्हें सचेत करता हूँ कि काम के वक्त न शराब छुओगे और न ही लफंगा बाला काम करोगे। सुरक्षित तीनों सूटकेस मेरे पास आना है, बस। समझे या फिर से समझावें।”

नांगटनाथ नतमस्तक भ’ गुलाब मिसिर कैँ विश्वास दियौलक–हजूर, कनिओ चिन्ता नहि। हम अहाँक आदेशक अनुसारे काज करब। हम तीनू सूटकेस संगे सुरक्षित अहाँक सेवा मे उपस्थित होयब से निश्चय बुझल जाए।

मुदा नांगटनाथ कैँ अपन नेताक आदेश बिसरा गेलनि। वैह विधायक नांगटनाथ, बर्थ पर चित पड़ल, गिलासक गिलास स्कॉच पिबैत, मैनाक अद्भुत सौन्दर्यक पान करबा मे बेकल छलाह। तीनू सूटकेस ऊपरका बर्थ पर राखल छलै।

नांगटनाथक बुढ़ायल शरीर मे सहस्त्रो पंचर छलै। मात्र शिकोहाबादक झुम्मन मियांक सुरमाक प्रतापे ओकर आँखिक रोशनी ठीक छलै। संविधान साधारणतः विधायक कैँ सम्पूर्ण प्रान्त आ खास क' अपन क्षेत्रक सेवाक कार्यक हेतु आदेश देने छल। मुदा नांगटनाथक एक मात्र लक्ष्य छलै जे कहुना मैना कैँ अपन आलिंगन मे ल' जीवन सार्थक करी।

नांगटनाथक इच्छा पूर्तिक सुअवसर तुरंते उपस्थित भेलै। काके उठि क' डिब्बाक बाथ रूम मे प्रवेश केलक कि नांगटनाथ चिचिया उठलै–"रहमान"।

अपन नाम सुनिते रहमान कैँ कर्तव्य बोध भ' गेलैक। ओ स्टेनगन नेने ठार भेल। बाथ रूम, जाहि मे काके भीतर गेल छलै, कैँ बाहर छिटकी लगा क' बन्द क' देलक आ जोर सँ दोसर बडीगार्ड कैँ सम्बोधन करैत बाजल–"बूढ़े महात्मा को कवर करो।"

अगिला जे घटना भेलै से मात्र किछु सेकेण्ड मे सब किछु घटित भ' गेलै। नांगटनाथ जोश मे आबि मैना के अपन पाँज मे समेट लेलक। दोसर बडीगार्ड स्वामीजीक कनपटी मे स्टेनगनक मुंह सटा क' निशाना फिट केलक आ सतर्क भ' गेल।

मुदा नांगटनाथक दुनू बाँहि सँ मैना छिहलैत नीचा खसलि आ फेर छिहलैत रहमानक दुनू पैरक बीच सँ बाथ रूमक फाटक तक पहुँचलि। मैना फाटकक छिटकिनी कैँ खोलि देलनि। काके बिहारि जकाँ बाहर आयल त' अपन दुनू हाथक गफ्फा सँ रहमानक गरदनि पकड़ि ऊपर मुंहे झटका देलकैक। काकेक झटका मे एतेक ने बल छलैक जे रहमानक माथ भराम द' डिब्बाक छत सँ जा टकरायल। ओकर हाथक स्टेनगन नीचा खसि पड़लै। रहमानक माथक हड्डी चकनाचूर भ' गेलैक आ ओ बेहोश भ' क' फर्श पर पसरि गेल। एम्हर मैनाक हाथक कराटेक चाप नांगटनााथक गरदनिक नीचा आ कालर बोनक ऊपर पड़लैक। एकटा शब्द भेलैक कड़ाक। बुझा गेलैक जे नांगटनाथक गरदनिक हड्डी दू फाँक मे टूटि गेलैक।

अहि सभ क्रियाक बीचहि मे स्वामीजीक किताब सँ फायर भेलैक। ओहि मे सँ निकलल बुलेट दोसर बडीगार्डक दहिना हाथ कैँ विदीर्ण क' देलक। सोनितक धार बहि गेल। स्टेनगन फेकैत ओ बफारि तोड़ैत नीचा बैसि गेल। स्वामीजी एतबे सँ निश्चिन्त नहि भेलाह। ओ उठि क' ओहि पुस्तक कैँ अतिवेग सँ दोसर बडीगार्डक माथ पर प्रहार क' देलनि। ओकर चिचिएबाक प्रलाप बंद भ' गेलैक आ ओ मूर्छित भ' क' फर्श पर चित भ' गेल।

एक क्षणक लेल स्वामीजी, काके आ मैना ठहरि क' तीनू बेहोश कैँ निहारलनि। ट्रेन अपना गति सँ जा रहल छलै। फस्ट किलासक डिब्बा मे भेल घटना सँ ककरो कोनो मतलब नहि छलैक।

आश्वस्त भ' काके नांगटनाथक ऊपरका बर्थ सँ तीनू सूटकेस कैँ अपन बर्थ पर अनलनि। स्वामीजी अपन झोड़ा सँ मूठ लागल एक इंचक फलबला ब्लेड कैँ बाहर केलनि। ब्लेड एहन ने तेजगर छलै जे कनिकबे प्रयासे गोहिक चमरा सँ बनल तीनू सूटकेस दू फाँक भ' क' ओदरि गेल।

सूटकेस मे सौ-सौ बला डॉलर कैँ नोट बंडल मे पतियानि सँ सैंतल छलै। स्वामीजी अपन झोड़ा सँ दूटा मजगूत प्लास्टिकक बोड़ा निकालि तीनू सूटकेसक तमाम अमेरिकन डालर भरि लेलनि। सूटकेसक पेंदी सँ एगो कागज निकलल जाहि पर लिखल छलै—टोटल टेन मिलियन। अर्थात् एक करोड़ डॉलर।

स्वामीजी फेर अपन झोड़ा सँ फाटल पुरान ओ माटि मे लेटायल बोड़ा बाहर केलनि आ क्रमशः दुनू प्लास्टिकक बोड़ा कैँ ठूसि मजबूत जौउर सँ बनहन द' क' बान्हि देलनि।

आब तीनू अपन-अपन वस्त्र परिवर्तन मे लागि गेलाह। मैना बाथरूम गेली। तीनूक नवीन ड्रेस देखल जाए। स्वामीजी कैँ ठेहुन तक फाटल धोती, माथ पर डालर बला एकटा बोड़ा आ बगल मे मझोला मैल झोड़ा। काकेक डांर मे धरिया, देह मे हरियर गंजी, गला मे तामक तगमा। मैनाक ड्रेस सबसँ लाजवाब। श्याम रंग मे रंगल हुनक सर्वाङ्ग देह, डांर मे ठेहुन सँ बित्ता भरि उठल घघरी, उनटा मुंहे बान्हल केस और कन्हा पर एकटा छोट सन लग्गा जाहि मे घोंपल एकटा बिज्जी।

ओ तीनू अपन-अपन असबाब संगे इत्मीनान सँ चलती ट्रेन सँ उतरि गेलाह। स्वामीजी अपन झोड़ा सँ अपन किताब निकालि एक विशेष पन्ना उनटौलनि। ओहि पन्ना मे कम्पास फिट छलैक। ओ पश्चिम-दक्षिण कोनक ठेकान करैत आंगुर सँ काके आ मैना कैँ इशारा केलनि। तीनू सामनेक पगडंडी पकड़ि द्रुत गति सँ बिदा भेलाह।

जेठक प्रखर आ प्रचंड रौउद, दुपहरियाक समय। रौउद मे चिलमिलिया चमकैत रहअए। मनुक्ख संगे चिड़ै-चुनमुनियोक दरस नहि। चारू कात जीवबिहीन सुन्नाहट। एतेक बिकराल रौदक सामना के करितय? सभ छांह मे नुकायल। खेत-खरिहान, गाछी मे चलबाक एकटा सरसराहटि।

ओ तीनू बेग सँ चलैत रहल। आगू मे काके, बीच मे बिज्जी घोंपल लग्गा कन्हा पर लेने मैना आ सतर्क स्वामीजी सबसँ पाछाँ।

करीब तीन-चारि घंटा चललाक ऊपरांत, आमक गाछीक कात मे एक ठूठ गाछक नीचा, एकटा औंघायल चापाकल कँ देखि तीनू ठहरि गेलाह। काके माथक बोरा कँ एक कात राखि हुमैच-हुमैच क' चापाकलक हेण्डिल कँ चलोलनि, तखन भुभुआक' पानि खस' लगलै।

तीनू चुरुके-चुरुके चापाकलक पानि पिलनि आ हाथ-पयर धोलनि। मैना अपन डाँरक बटुआ सँ बिस्कुट निकालि क' स्वामीजी आ काके के देलनि आ अपनो खेलनि। तीनू बिस्कुट खा क' फेर सँ पानि पिबैत गेला। फेर आबि क' एक झमटगर गाछक छाया मे बसैत गेलाह।

स्वामीजी अपन झोड़ा सँ मोटका किताब निकालि ओहि मे सँ विभिन्न तार कँ जोड़लनि। एक बहुत छोट सन हेडफोन कान मे फिट क' क' सांकेतिक भाषा मे रिपोट पढ़' लगलाह।

रिपोट केलाक बाद सांकेतिक भाषा मे हुनका चमेलीरानीक संदेश आ आदेश प्राप्त भेलन्हि। ओ ध्यान सँ सभ सुनि, वायरलेस सेट कँ पूर्ववत किताब मे समेटि झोड़ा मे राखि लेलनि। संदेशक भावार्थ काके आ मैना कँ कहलथिन्ह जे जखन ओ सभ नट-नटिन बनि ट्रेन सँ उतरि बिदा भेलाह तखने बगलक कम्पाटमेन्ट सँ एक व्यक्ति उतरि पाछाँ करब शुरू केलक। ओ बराबर पाछाँ करैत आबि रहल अछि। ओ व्यक्ति उज्जर पेन्ट, कारी कोट आ नम्हर जुल्फी रखने अछि। अन्दाजन ओ व्यक्ति अपन काज मे माहिर आ होशियार बुझि पड़ैत अछि। ओकरा सम्बन्ध मे अधिक जानकारी नहि अछि।

स्वामीजीक बाजब स्थिर आ शान्त छलनि। ओ फेर आगाँ कहलनि—"हमर सभहक एखुनका मंजिल मात्र कोस भरि आगाँ अछि। रस्ताक डाइरेक्शन सेहो ठीक अछि। मुदा चमेली बिटिया कँ कहब छन्हि जे ओहि करिया कोटबला सँ फरिया ली। या त' भौकी द' ओकरा भुतिया क' आगाँ बढ़ी वा आवश्यकता भेला पर ओकरा समाप्त केलाक बादे अपन ठेकाना मे प्रवेश करी।"

भय आ चिन्ता नामक कोनो भाव ओहि तीनूक लेल नहि छलै। केवल कर्तव्यक पूर्ति आ चमेलीरानीक आदेशक पालन अभीष्ट छलै। ओ तीनू आगाँ अपन मार्ग पर बिदा भेलाह।

कनिए आगाँ एकटा पैघ गाछी छलै। गाछीक आरम्भ मे एकटा विशाल,

करीब दू कट्ठा मे पसरल पुरान बड़क गाछ छलै। तीनू ओहि बड़क गाछतर आबि अपना मे मंत्रणा केलनि आ अपन-अपन मोटरी संगे ओहि बड़क गाछ पर चढ़ि गेलाह। गाछ वेश झोंझरिबला छलैक। ओ तीनू उपयुक्त स्थानक तजबीज क' अदृश्य भ' गेलाह। पाछाँ करैबला आगाँ बढ़ि जाए त' ठीक, अन्यथा अही गाछतर ओकरा खतम क' दी सैह हुनक निर्णय भेल छलनि।

किछुए मिनट बितल रहैक की उजरा पेन्ट, करिया कोटबला ओहि विशाल बड़क गाछ तर पहुँचि गेल। गाछक नीचा पहुँच क' ओ अकबका गेल। नाकक थुथना सँ चारू कात सुंघलक आ फेर अचम्भित होइत ओ बड़ेक नीचा ठार भ' गेल। गाछक झोंझरि मे नुकायल तीनू गोटे दम सधने निचलका व्यक्ति कैं देखि रहल छल कि एकटा अजीब घटना घटित भ' गेलैक।

बड़क एकटा मोटगर डारि पर स्वामीजी आ काके अपन-अपन बोड़ा कैं टेकने ठार छल। ओहि डारिक छीप पर लग्गा मे बिज्जी घोंपने मैना दोसर झोंझरि मे नुकायल छलीह। हुनक बिज्जीबला लग्गा ओहि सँ ऊपरका डारिक झोंझरि मे ठेकि गेल रहैक। ऊपरका झोंझरि मे एक जोड़ धामन साँप छलैक। दुनू साँप लग्गा आ लग्गा मे घोंपल बिज्जी कैं देखिते खोंखिया क' झपटा मारलक। धामन साँप विशाल आकृतिक होइत अछि आ ओहि मे एक छोड़ि दूटा। मैनाक हाथक लग्गा साँपक वजनक कारणे छुटि गेलनि। हुनका अपन देहक बैलेन्स सेहो गड़बड़ा गेलनि।

बड़क गाछक नीचा ठार व्यक्तिक दायां ओ बायां दुनू कात ओ साँप खसल। साँपक भयंकर आकृति देखि ओ बाप-बाप करितय कि तखने ओकर माथ पर मैना खसली। मैनाक घघरी हुनक सम्पूर्ण मूड़ी कैं झाँपि देलक। ओ मैना कैं नेने-देने मुँहे भरे आगाँ खसलाह। मैना फुर्ती सँ अपन घघरी कैं हुनक मूड़ी सँ अलग क' उचकि क' आगाँ कूदि गेलीह।

मैनाक हालत देखि, स्वामीजी आ काके अपन बोड़ा संगे धपाधप कूदि गेलाह। स्वामीजीक हाथ मे कतौ सँ पिस्तौल आबि गेल।

—"अरे, दादा रे दादा। ई कीया हो गया?"

बाजब आ उच्चरण सँ स्पष्ट भ' गेल जे पाछाँ केनिहार बंगाली छथि। स्वामीजीक हाथ मे पिस्तौल देखि ओ घिघिया उठल—हमारा जान लेने से पहले साँप को मारो।

स्वामीजी अनिश्चयक स्थिति मे छलाह, पहिले बंगाली कैं मारी कि साँप कैं

मारी। ओहि काल मैना चिचिया उठलीह–"स्वामीजी साँप पर फायर करू।"

स्वामीजीक हाथक पिस्तौल दू बेर ठाँय, ठाँय केलक आओर ससरैत, फुफकारैत दुनू धामनक मूड़ी चिथड़ा उड़ि गेलै।

आब स्वामीजीक पेस्तौल ओहि करिया कोटबला दिस घुमल। ओ साँप मरलाक बाद थोड़ेक अपना कैँ सुभ्यस्त अनुभव कयने छल। ओ पेस्तौल कैँ अपना ऊपर तानल देखि, बिना कोनो भय कैँ बाजल–"हमारा पास सभ खबर है। थोड़ा देर पहले तुमको बायरलेस पर मुझे जान से मारने का ऑडर मिला है। तुम्हारा कोडेड मैसेज अनकोड होकर मुझको मिल चुका है। ठीक, तुम हमको मारेगा और हम मरेगा। वैसे हम भी तैयार है। हमारा पास इतना ताकत है कि हजार आदमी भी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता है। लेकिन नहीं, तुम मारेगा आउर हम मरेगा। मरने के पहले हम थोड़ा बात तुमको कहना चाहता है। उस बात को सुन लो। तुम्हारा पास टाइम जास्ती नहीं है। फिर भी हमारा बात सुन लो। हमारा बात तुमको लाभ देगा। हम तुम्हारा दोस्त है, नहीं तो तुम्हारा आखरी मेसेज के बाद हम तुम्हारा पिछु-पिछु नहीं आता।"

स्वामीजी पेस्तौल कैँ हिलबैत बंगाली कैँ अपन बात कहबाक इशारा केलनि। काके आ मैना अत्यधिक सावधान भ' क' ओहि बंगालीक बात सुन' लगलाह। बंगाली जल्दी-जल्दी बाजब शुरू केलक–"मेरा नाम विश्वनाथ भट्टाचार्य है। हम बंगाली मानुष है। निर्मली मे मेरा रेडीमेड कपड़े की दूकान है, 'निहारिका'। कपड़ा का दूकान मेरा मुखौटा है। असल मे हम पक्का जासूस है। हम केजीबी के लिए काम करता है। बैंकॉक से सूटकेस चला, भरदा पहुँचा, उसमें कैसा माल है, सभी कुछ का खबर हमको है।

–"हमको इनटरफेयर करने का ऑडर नहीं है। फिर भी, हमारा इलाका मे क्या कुछ होता है उसका खबर रखना हमरा काम है। तुम तीनों का हम निर्मली से फौलो करता है। तुम उस एमएलए आउर उसके दोनों बडीगार्ड को घायल किया, बेहोश किया, माल लिया, ट्रेन के नीचे आया तो हम भी ट्रेन का नीचा आया। फिर जब तुम तीनों जहाँ थोड़ी देर रुका था वहाँ पहुँचा आउर नाक से तुम सबका गन्ध सूंघा। हमको गन्ध सूंघने का स्पेशल ट्रेनिंग है।

–"उसके बाद हम सारा मैसेज को ट्रान्समीट कर दिया, फिर तुम्हारा छोड़ा गन्ध को सूंघते-सूंघते तुम्हारा पीछा किया। हमने जो मैसेज मास्को ट्रान्समीट किया उसमे तुम्हारा हुलिया, तुम्हारा ड्रेस सभी कुछ का कर दिया। हमारा मैसेज मास्को

रिसीभ किया आउर उसका कनफरमेशन आ गया। मास्को उस मैसेज को दिल्ली भेजा होगा आउर दिल्ली पटना को। पटना का इनटेलिजेन्स ऑपरेशन थोड़ा कमजोर है। फिर भी खतरा तो बढ़ गया है। तुम्हारा पास टाइम बहुत कम है।

—"तुम्हारा पिछु-पिछु आया। दादा ओ दादा, इस घाम में तुम लोग कितना तेज चलता है जिराफ का माफिक। हमको तो ट्रेनिंग है लेकिन तुम्हारा कैसा ट्रेनिंग है, सोचने की बात है।

—"हम सोचा, फिर कीया हुआ सो सुनो। हम काली माँ का पूजा करता है। काली माँ मेरा सब कुछ है। माँ ने दिमाग में झटका मारा। मेरा दिमाग ने सोचना छोड़ दिया, फिर ठीक होकर सोचने लगा। दिमाग में माँ बोलता है, अरे! तुम किसको पिछु करता है? तुम किसका नुकसान करता है? ये लोग अपना वतन का दिवाना है। देश को वास्ते, अपना प्रान्त को वास्ते, जान हथेली पर रखकर निकला है। मेरा माथा में सब बात साफ हो गया। फिर माथा बोला—भट्टाचार्य तुम इनका कितना बड़ा नुकसान कर दिया। अरे! अभी तक तो सभी पुलिस, कुत्ता का माफिक, इसको पकड़ने वास्ते निकल चुका होगा। ये हमने कीया किया?"

भट्टाचार्य कैँ निर्मलीक लोक भाटाजी कहैत छलैक। भाटाजी फूटि-फूटि क' कानय लगलाह। हुनक आँखि सँ अश्रुधार बहय लगलनि। तकरा बाद भाटाजी जे कहलनि तकर भाव छल—भाटाजी, कलकत्ताक एकटा धाकर कम्यूनिस्ट नेताक पुत्र छलाह। इलेक्ट्रॉनिक इन्जीनियरिंग पढ़ै लेल ओ रूस देश गेलाह। मेधावी छात्र छलाह। हुनका रूस देश मे अनेको स्कॉलरसीप भेटलैन्ह। ओ संचारक क्षेत्र मे अनेको किस्म आ उपयोगी यंत्रक आविष्कार केलनि। फेर ओ एकगोट रसियन कन्या सँ विवाह केलनि आ ओही देशक नागरिक बनि रूसहि मे रहए लगलाह। हुनक प्रतिभा सँ प्रभावित भ' केजीबी हुनका अपना मे समेटि लेलक। अति कठिन ट्रेनिंग भेल आ ओ केजीबीक पैघ ऑफिसर बनि अनेको देश मे कार्यरत रहलाह। उमिर बढ़ला पर आ विशेष क' बंगाली रहलाक कारणें हुनका अपन मूल देशक प्रेम जागृत भेलनि। केजीबीक प्रधान लग अपन आरजू पठौलनि तखन निर्मली मे हुनक पोस्टिंग भेलनि। निर्मली मे ओ बारह वर्ष सँ रहि रहलाह अछि एवं परिवार कलकत्ता मे रहै छथिन। मोटगर तनखाह भेटैत छनि, आर्थिक दृष्टि सँ सम्पन्न छथि।

भाटाजी अपना पर नियंत्रण करैत बजैत गेला—"बाबा, तुम लोग कीया करता है, किसके वास्ते करता है, हम अभी नहीं जानता है। लेकिन तुम्हारा संचार बहुत

कमजोर है। आज के युग मे तुम्हारा काम बहुत अच्छा, बहुत सफोस्टीकेटेड संचार सिस्टम का मांग करता है। संचार को इम्प्रूभ करने मे हम तुम्हारा मदद करेगा। काली माँ का भी ऑडर है आउर जीवन के अन्त मे कुछ अच्छा काम करने का इच्छा रखता है। इसी वास्ते तुमसे मिलने का हम रिस्क लिया। नहीं तो तुम्हारा आखिरी अनकोडेड मैसेज के बाद हम कभी भी अपना लाइफ को डेनजर मे नही डालते। माँ काली का शपथ खाकर बोलता है, मेरा फेथ करो। तुम्हारे वास्ते काम करेगा, यह मेरा ऑफर है।"

स्वामीजी पिस्तौल कैँ काकेक हाथ मे पकड़ा वायरलेस सेट कैँ ठीक केलनि। फेर चमेलीरानी कैँ सभटा सविस्तार रिपोट द' अपन मन्तव्य देलनि–"बिटिया रानी, भाटाजी अपन जरूरत कैँ पूर्ति करताह से हमर सोचब अछि।"

प्रायः चमेलीरानी स्वीकृति देलथिन। स्वामीजी भाटाजी दिस घुमैत बजलाह– "कन्टेक्ट फिरिक्वेन्सी?"

–"फ. म. अस्सी हजार दसमलव फोर।"

–"ठीक। वेश, अहाँ वापस जा सकैत छी, भाटाजी।"

भाटाजीक मोन प्रफुल्लित भ' गेलनि। ओ मैना दिस तकलनि आ फेर गरदनि हँसोथि बजला–"बाबा, यहाँ रास्ता में मुरही का भी दूकान नहीं है। पूरा एरिया बंडल है।"

मुस्की छोड़ैत मैना अपन बटुआ सँ छोट-छोट बिस्कुट निकालि भाटाजी कैँ देलनि। भाटाजी प्रसन्न होइत वापस अपन रस्ता पकड़ि लेलनि।

भाटाजीक कारणे बिलम्ब आ हुनकर सूचनाक कारणे अन्देसा। तें ओ तीनू बहुत तेज गति सँ अपन गंतव्य स्थानक हेतु बिदा भेलाह।

एकटा छोट, पुरान आ चहरदिवारी सँ घेरल महादेवक मंदिर। गाम सँ हटल आ आमक गाछ सँ घेरल। मंदिरक आगाँ पोखरि आ पाछाँ दूटा खोपड़ीनुमा घर। मंदिरक प्रांगण साफ-सुथरा, फूल पत्ती सँ सजल आ परम पवित्र।

नट-नटिन कैँ अबिते पुजारी हड़बड़ा क' ठार भेलाह। आवश्यक निर्देश देलनि। निर्देश देबाक आतुरता अहि बातक संकेत दैत छल जे सतर्कता अनिवार्य बनि गेल अछि।

किछुए कालक बाद, स्वामीजी पिअर धोती, उज्जर कुर्ता आ लाल गमछा संगे त्रिपुण्ड चानन आ पैघ सिनुरक ठोप केने मंदिरक अगिला हन्ना मे वैह मोटका किताब कैँ अपना आगाँ राखि दूर्गा पाठ क' रहल छलाह।

अन्दर खोपड़ीनुमा घरक एक कोठली मे काके बरक परिधान मे तथा मैना नव कनिआँक भेषभूषा मे एकटा खाट पर बैसल गप-सप क' रहल छलीह। डालरबला दुनू बोरा हुनक खाटक नीचा जाजीम सँ झांपल राखल छल। ओ सभ कियो कोनो अनहोनी घटनाक प्रतीक्षा मे पूर्ण तैयार ओ साकांच छलाह।

सूर्यास्तक समय, अतिशय गर्मी आ उमसक कारणें पुजारीजी गमछा सँ घाम पोछै मे व्यस्त छलाह। मंदिरक दक्षिण बरिया दुआरि पर पुजारी जाहि पटिया पर बैसल रहथि ओकर आगाँ दूटा थार राखल छलै। पहिल थार मे फूल, फूलक माला आ घसल चानन तथा दोसर थार पेड़ा सँ भरल।

ओहीकाल आशाक अनुरूप एकटा भीसण्ड मोट दरोगा तथा ओकरा संगे एकटा दुब्बर, पांजरक हड्डी जागल, सिपाही हहाइत ओतए पहुँचल। दरोगाक फूलल पेटक वामा कात पिस्तौल लटकल छलै। सिपाहीक हाथ मे ओकरे सन हकन कनैत बेंत, चेहरा पर पसीना तथा आँखि मे एहन भाव जे ओ एक पन्द्रहिया सँ अन्नक दरस नहि केने होअय।

दरोगा अबिते गरजि उठल–"हई पुजारी बाबा! रौआ बताँई जे इहाँ के सब आयल बा?"

पुजारीजी दुनू हाथ जोड़ैत ठार भेलाह आ कलपैत स्वर मे बजला–"सरकार, एतए त' कियो नवीन लोक नहि एलाह अछि। हम पुजारी, पाठ केनिहार महात्मा एतए महिनो सँ रहै छी। भीतर हमर खोपड़ी मे हमर बालक आ हुनक कनिआँ। बस आओर किओ नहि।"

दरोगा अपन आबाज कैँ औरो कर्कश बनबैत बाजल–"का बोले तार' हो पुजारी बाबा। हमरा घसबैनी सँ खबर मिलल बा जे दू जन नट आ एक जन नटिन एम्हरे आईल बा। उपरका अरजेन्ट हुकुम बानी। हमरा के ओ नट-नटिन के एरेस्ट करै के बा।"

पुजारी औरो नम्र होइत चुचकारीबला स्वर मे दरोगा कैँ उत्तर देलनि–"सरकार, हम अहाँ कैँ चिन्हैत छी। अहाँ सन इमानदार हाकिम कैँ के नहि चिन्हत? जहिया सँ अहाँ थाना पर एलहूँ अछि, चोर-उचक्का लापता भ' गेल। मुदा सरकार, हमरा पर विश्वास करू, हम अहाँक शपथ खा क' कहैत छी जे कोनो नट-नटिन एम्हर पयर नहि देलक हेंए। ओहुना एतए नट-नटिनक कोन काज? एत' त' मात्र एकटा काज भोलेनाथक पूजा।"

पुजारीजीक जबाब सुनि दरोगा अइँठल मोछ कैँ औरो अइँठलक, फेर अपना

संग आयल सिपाही कैँ ताकीत केलक–“कृपलबा! तुम सावधानी से इन दो लोगन पर नजर रख। हम अंदर चेकीन करता हूँ।”

दरोगा मंदिरक पाछाँ बनल खोपरी दिस बिदा भेल। कृपलबा नामक सिपाही ससरि क’ पुजारीजी लग आयल। पुजारीजीक आगाँ थार मे राखल पेड़ा पर ओकर आँखि जेना गरि गेलैक। ओ ओहीठाम बैसि रहल, बाजल–“ई सरौं, अपनो मरिहें औरो हमरो जान खतम करिहें। पुजारी बाबा, थार मे की बा? बड़ा गम गम करेला।”

पुजारीजी स्वामी दिस ताकैत छलाह। दुनू कैँ आँखिक भाषा मे गप भ’ रहल छल। सिपाहीक प्रश्न सुनि पुजारीजी हड़बड़ाइत पटिया पर बैसि गेलाह आ कहलनि–“परसाद थिकै सिपाहीजी। भोग लगाउ।”

पुजारी जी दूटा पेड़ा कृपलबा नामक सिपाहीक हाथ मे राखि देलथिन आ कान कैँ दरोगाक गतिविधि पर पथने चुप भ’ रहलाह। हुनक माथ पर चिन्ताक सिकुरन स्पष्ट झलकै छल।

दरोगा पहिले दुनू खोपड़ी कैँ बाहर घुमि जाँच-पड़ताल केलक। मूड़ि नमरा क’ चारू कातक हाव-भाव के निहारलक। फेर आयल ओहि कोठलीक दरबजा लग जाहि मे काके आ मैना छलीह।

दरोगा सटायल केबाड़ कैँ भराम दए खोलि भीतर ढुकि गेल। अन्दर काके आ मैना कोन अवस्था मे छलीह, दरोगा की देखलक से दरोगा जानए। मुदा, दरोगा चिचियाति आ बफारि कटैत बाहर आयल आओर पलटनिया दैत पुजारीजी लग पहुँच गेल। हँफैत बाजल–“हे पुजारी बाबा, ई मंदिर बानु? ई भगवान का फ्लेट बानु? अन्दर कोन खेल होत बा। हम जे देखली, राम राम, आब अहाँ से का कहीं। हमार त’ नजरिए झौआ गेल बा।”

गर्मी आ उमस पराकाष्ठा पर छलै। दरोगाक शरीर मोट आ भारी-भरकम। ओ काके आ मैनाबला कोठली सँ भगैत आयल छल। ओकर सम्पूर्ण देह पसीना सँ लथपथ छलै।

पुजारीजी फेर हाथ जोड़ैत बजला–“सरकार, कोठली मे हमर बालक आ हुनकर कनिआँ। हमर बालक बिआहो ने करैत छल। कतेक परतारने त’ अहि बेर शुद्धक समय मे दिल्ली सँ एलाह। हुनकर बिआहक त’ दसो दिन ने भेलनि। कहू त’ अहाँ की कर’ भीतर गेलौं? छिया, छिया।”

–“अरे, हमनी का करब? हमनी के ड्यूटी बड़ा बेढंगा बा।” कहैत दरोगा

बैसक उपक्रम कर' लागल। ओ पहिने एक हाथ रोपलनि, फेर दोसर हाथ रोपि, देहक बैलेन्स ठीक केलनि। तखन लूद द' बैसि गेलाह।

पुजारीजी अन्दाज केलनि जे दरोगाक वजन तीन, साढ़े तीन मन सँ कम नहि हेतैक।

कृपलबा दुनू पेड़ा कैँ मुँह मे ठुसि नेने छल। पेड़ाक साइज बेस पैघ छलै। ओ कहुना क' पेड़ा घोंटबाक प्रयास क' रहल छल।

दरोगा पटिया पर बसैत देरी पेड़ाबला थार कैँ दुनू आँखिये निहार' लागल। ओ बाजल–"पेड़ा बानु?"

–"हँ सरकार! अहीं सभहक लेल बाबाक परसाद थिक। भोग लगबियौ।"

कहैत पुजारीजी पेड़ाक थार घुसका क' दरोगाक आगाँ मे क' देलथिन।

–"सुगन्धी त' बड़ा नीमन बा। गाय का दूध मे बनल ह' तो?"

–"हँ सरकार! सामने देखिऔक मुसहर टोली। सदाय भाइ सभ महादेवक भक्त। सभहक दूरा पर मुलतानी गाय। तखन दूधक कौन कमी। खाक' देखल जाए।"

दरोगा एकटा पेड़ा मुँह मे देलक–"वाह! वाह!! पुजारीबाबा। सबाद बड़ा अच्छा बा। बहुत दिनन के बाद अइसन पेड़ा खाई के मौका मिललबा।"

दरोगा थारक सभटा पेड़ा उदरस्त क' लेलक। पेड़ा मे पुष्ट सँ नवका भांग मिलाओल रहैक। पुजारीक देल पानि सेहो दरोगा पीब गेल। तखने पुजारीजी पुछलथिन–"हाकिम, ई नट-नटिन बला की मजरा थिकै?"

दरोगा पहिने पूरा मुँह बाबि ढेकार केलक। फेर बाजल–"आब रौआ से का छिपायब। वायरलेस पर अरजेन्ट खबरि आयल बा। ओ नट-नटिन बड़का डकैत। कोनो मारवाड़ी के लाखो टाका का जेबर गहना लेके भागल बा। सोंचली, सरौं के पकड़ब त' आधा माल डकार जायब, आधा माल जमा करब। के सार बुझिहेंए? बहुत दिन हो गेइल, कोनो बड़का माल हाथ नहिखे आईलबा।"

पुजारीजी मोने-मोन बजला–'बस एक घड़ी आओर। भांग जखन भिजतौक तखन नट-नटिन कैँ तकिहेंए रे सार।'

दरोगाक माथ सुन्न होबए लगलै। ओ डपोरशंख जकाँ चुपे एककात देख' लागल। किछु काल पहिले काके आ मैनाबला दृश्य ओकर मानस पटल पर थिड़क' लागल। ओकरा अपन बियाहक गप मोन पड़' लगलै। जखन ओ पहिल बेर अपन कनिआँक मुँह देखलक–कारी, उठल आ मोटका थूथून। ऊपरका दाँत निचला ठोर

कैँ छपने, डिग्गासन पितरिया आँखि। ओकरा जिनगी सँ विरक्त भ' गेलैक। ओ संन्यास लेबा लेल तैयार भ' गेल।

मुदा, एखन जे दृश्य देखलक। वाह! छौकड़ी राधा रानी त' छौकड़ा किसन-कन्हैया। मन कैँ हर्षित क' देलक।

रंग त' अनलक नवका भांग। किछुए कालक बाद भिसिण्ड तोंदबला दरोगा पटिया पर चित पड़ल नाक सँ डिगडिगिया बजा रहल छल। थोड़बे हटल कृपलबा बीड़ी मुँह मे दबने बेहोश पड़ल, मोंछ के चिबा रहल छल।

ई सब कार्य पूर्ण अनुशासित आ पटुताक संग होशियार व्यक्तिक देख-रेख मे भ' रहल छल। कनेक आओर सांझ जकाँ भेलै त' कतहु सँ पाँच युवक आ पाँच युवती, कुल दस, कमरियाबला पिअरका वस्त्र पहिरने कामर कैँ कन्हा पर उठौने आयल। आगन्तुक युवक-युवतीक उमेर काके आ मैनाबला छलै। सब तहिना चुस्त-दुरुस्त आ शांत।

तुरंते पुजारीजी, स्वामीजी, काके एवं मैना कमरियाबला ड्रेस मे आ कामर कैँ उठौने तैयार होइत गेलाह। डालरबला दुनू बोरा कैँ छोट-छोट मोटरी बना क' सब कमरियाक कामौर मे लटका देल गेलै। सब वस्तु ल' क' कमरिया टोली मे जोर सँ हुंकार देलक पाछाँ कमरियाक टोली ओहि मंदिर सँ प्रस्थान केलक। मंदिर मे रहि गेला फोंफ कटैत दरोगा आ टिटहीबसंत सिपाही कृपलबा।

कमरियाक टोली भरि राति चलैत रहल। टोलीक नेतृत्व केनिहार आ पुजारी बनल अमृतलाल। अमृतलाल जाहि जाति या संप्रदायक प्रतिनिधित्व करै छल ओ पुस्त दर पुस्त सँ चोरि विद्या मे पारगंत होइ छल। अमृतलाल भुखन सिंहक खास पियादा रहए। ओ चतुर आ भुखन सिंहक विश्वासी मातहत छल। कठिन अवसर पर भुखन सिंह अमृतलाल कैँ खास किस्मक काज करक लेल नियुक्त करै छलाह। प्रस्तुत अभियान मे अमृतलाल अपन निपुणताक सहज परिचय द' रहल छल।

अमृतलाल कैँ ओहि इलाकाक पूर्ण ज्ञान छलैक। ताहि कारणे कमरियाक टोली कोनो गाँव वा शहर मे प्रवेश नहि केलक। बाघ-बोन, गाछी-बिरछी, मरचरही, धारक कछेर होइत भोरहवा मे निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचल। ओतए सभ तरहक इन्तजाम छलैक। भरि दिनक विश्रामक बाद कमरियाक टोली फेर दोसर राति अमृतलालक नेतृत्व मे चलैत रहल आ भोर होइत चमेलीरानीक अड्डा पर पहुँचि गेल।

स्वामीजी सभटा डालर सुरक्षित अर्जुन कैँ सुपुर्द क' चमेलीरानी सँ भेंट

करबाक उद्देश्य सँ बिदा भेलाह। रस्ते मे हुनका चमेलीरानी सँ भेंट भ' गेलनि।

चमेलीरानी झुकिक' दुनू हाथ जोड़ि स्वामीजी कैँ प्रणाम केलनि आ कहलनि–"बज्जर काका, ददू अहाँ के अबिलम्ब बजौलनि अछि।"

ददू अर्थात् भुखन सिंह, चमेलीरानीक धर्म-पिता। स्वामीजी अर्थात् बज्जर कका भुखन सिंहक दाहिना हाथ। चमेलीरानीक आग्रह पर भुखन सिंह ठाकुर नांगटनाथ सिंह नामक अभियान मे बज्र नाथ कैँ पठौने छलाह।

चमेलीरानी बज्जर कका कैँ बड़ आदर करैत छलि। सदिखन हिन्दी आ अँग्रेजी बाजैवाली चमेलीरानी भुखन सिंह, बज्जर कका एवं औरो पैघ हस्ती लग मैथिलीए टा बजैत छलीह। चमेलीरानीक व्यवहार मे नम्रता आ कोमलता बज्जर कका कैँ बड़ सोहाइत छलनि।

बज्जर कका चमेलीरानीक प्रणामक प्रतिउत्तर मे हाथ उठा क' आशीर्वाद देलनि आ कहलनि–"काके आ मैनाक संग काज करबा मे नीक लागल। फेर कहिओ हुनका संगे कोनो अभियान मे जेबा मे हमरा प्रसन्नता होयत। सब ठीक बिटिया, हम अबिलम्ब बिदा भ' रहल छी।"

बज्जर ककाक प्रस्थानक बाद चमेलीरानी ओतए पहुँचली जतए काके आ मैना कमरियाबला ड्रेस मे चुपचाप मूड़ी गारने बैसल छलीह। किछु दिन पूर्व हुनका दुनू संगे बड़ पैघ अत्याचार भेल छलनि तकर वृत्तांत सेहो सुनि ली।

ठाकुर नांगटनाथ सिंहक अभियानक पहिने चमेलीरानीक संसार मे बहुत किछु परिवर्तन भेल छलै। पछिला ट्रेन डकैतीक बाद हुनक जे अर्जुन संगे वार्तालाप भेल छलै से हमरा ज्ञात अछि। तकर बादे चमेलीरानी खास किस्मक निर्णय लेलनि। ओ अर्जुन सँ विवाह केलनि। बिआहक अवसर पर कीर्तमुखक पाँचो बेटा उपस्थित छल। ओहि पाँचोंक समक्ष चमेलीरानी अपन योजनाक स्पष्टीकरण केलनि। सभहक विचार मे मेल-मिलाप भेलै। सब मिलि क' सभहक सहयोगे कार्य करबाक हेतु तत्पर होइत गेलाह।

कलकत्ता आ मद्रास सँ दूटा स्पेशल जपानी ट्रेनर कैँ आनल गेल। अहि ट्रेनर कैँ पैघ तनखाह आ सब तरहक सुविधा उपलब्ध कराओल गेल। आधुनिक युगक सब आधुनिक उपकरण आनल गेलै। खास स्थान पर ओइ दुनू जपानी ट्रेनरक देख-रेख मे अत्यधिक कठिन आ परिश्रमबला ट्रेनिंग आरंभ भेलै। ट्रेनिंग लेनिहार छल कीर्तमुखक पाँचो बेटा आ चमेलीरानी। ट्रेनिंग छह मास तक चलल। पाँचो भाइ अर्थात् युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुलवा आ सहदेवा संगे चमेलीरानी अपन

शरीर एवं मनक पूर्ण तैयारी केलनि जे अगिला योजना कँ क्रियान्वित करबा लेल जरूरी छलै।

अही छह मासक भीतरे पाँच सुरक्षित स्थानक चयन भेल। प्रत्येक स्थान मे दू बीघा जमीन कीनल गेल। फेर ओकर तैयारी कएल गेलै। करीब एक सय छात्र-छात्रा कँ रहबाक लेल अलग-अलग हॉस्टल, व्यायामशाला, सुन्दर मैदान इत्यादिक संगे भवन पाँचों ट्रेनिंग कैम्प कँ लेल बनाओल गेल। पाँचो ट्रेनिंग कैम्प कँ नवीनतम उपकरणक संगे कम्प्यूटरीकरण कयल गेल। सम्पूर्ण प्रान्त मे चोरि, डकैती, रंगबाजी, अपहरण, गुटबाजी आदिक गृह-उद्योग पसरल छल। अतः पाँचो ट्रेनिंग सेन्टरक हेतु पाँच सय युवक-युवती कँ ताकए मे कोनो अरचन नहि भेलै। युवक-युवतीक चयन मे अति सावधानी राखल गेलै। सबहक उमेर चौदह सँ बीस वर्षक अन्दरे रहै तकर ध्यान राखल गेल।

आब ओहि पाँचो कैम्पक उद्देश्य, कार्यक्रम आ अपन प्रान्तक लेल समर्पण इत्यादिक बखान आगाँ कयल जायत। सम्प्रति काके अर्थात् सहदेवा एवं मैनाक संग भेल अत्याचार कँ स्पष्ट करी।

सहदेवा जाहि कैम्पक इनचार्ज छल ओहि मे मैना ट्रेनिंग ल’ रहल छलीह। ओही ठाम दुनू कँ नैन-मटक्का भेलै। एकर सूचना तत्काल चमेलीरानी कँ देल गेल।

चमेलीरानी अबिलम्ब दुनूक बियाहक तिथि निश्चित केलनि। फलाँ तारीख क’ सहदेव वल्द कीर्तमुख निवासी मिरचैयाक मैना वल्द बेनाम निवासी अनामकक बियाह होयत। सभ कँ हकार, सभ कँ स्वागत।

पैघ मंडप बनल। सजाबट, खेबा-पिबाक नीक इन्तजाम, पाँच सयक लगभग गेस्ट। बियाह भेल। सहदेव आ मैना सभकँ प्रणाम करैत आ आशीर्वादक मोटरी उठबैत कोहबर दिस प्रस्थान केनहिए छल कि नांगटनाथ बला योजनाक सूचना आयल—“सूटकेस बैंकाक से चलने वाला है।”

योजना मास पूर्वे बनि चुकल छलै। ओहि मे सहदेव कँ काके बनि क’ तथा मैना कँ भाग लेबाक छलैक। अस्तु, कोहबर मे जेबा लेल तैयार ओ दुनू बज्जरकका संग निर्मली पहुँच गेल। भेलै ने अत्याचार?

चमेलीरानीक इशारा पाबि सहदेव आ मैना हुनक सोझा मे आबि ठार भ’ गेल। हे भगवान! अब कोन हुकुमनामा चमेलीरानी सुनौती से नहि जानि।

चमेलीरानीक ठोर पर मृदुल हँसी। ओ हुकुम देलखिन—“अहाँ दुनू हमर कोठली मे जाउ। ओतए सब किछुक इन्तजाम छै। एक मास धरि अहाँ दुनू ओहि

कोठली मे निवास करी से हमर आदेश।”

सहदेव चुपे रहला। मुदा, मैना दबले मगर देखार, खिखिया उठली। ओ दुनू चमेलीक स्पेशल कक्ष मे प्रवेश केलनि।

❖

तीन

–"हौ मामू! मामूजान, दरबज्जा खोल।"

समय करीब चारि बजे भोर। पूसक महीना। साफ-साफ किछु देखाइ नहि पड़ैत। कुहेसक सघनता चारू कात पसरल। अत'तह जाड़क प्रकोप।

एकटा खोपड़ीनुमा घरक आगाँ एक गोटे कियो कनटोपा पहिरने केबाड़ी पीट रहल अछि।

घरक अन्दर रहैत अछि लियाकत आ बलाकत। दुनू भाई–भाई एक, मुदा बाप दुनूक अलग-अलग। लियाकत आ बलाकत पेशा सँ चोर छल। किंतु जाड़क प्रचण्डताक कारणे ओ दुनू अपनहि खोपड़ी मे फाटल पुरान ओढ़ने दुबकल छल।

अन्दाज करिऔ, थर-थर कँपबैत जाड़। मनुक्ख कैँ के कहअय, जीव मात्र सुटकल, दुबकल कोनो कात मे कहुना अपना कैँ जीवैत राखि प्रगाढ़ निन्न मे पड़ल छल। एहन स्थिति मे आगन्तुक लियाकत आ बलाकतक केबाड़ पीटि रहल छल।

लियाकत आ बलाकत मे सँ कियो कहलैक–"के हौउ भाइ? ऐसन टेम मे त' कौओ खोप मे रहेला। तूँ कहाँ से आ गइल' रे भाई। केबाड़ खुजा हई। अन्दर चल आब'।"

आगन्तुक पच्चीस वर्षक छौड़ा। कपड़ा सँ ऊपर विन्डसीट सँ सम्पूर्ण देह झाँपल। कन्हा पर बेस पैघ झोड़ा। भीतर अबिते ओ बाजल–"नाम मेरा हैइ हमीद। बखतियारपुर का झोटन मियां त' महरूम हो गये। उन्हीं का लैड़की रसूलनबाई का नाम सुना है न?"

बखतियारपुर आ झोटन मियांक नाम सुनिते लियाकत आ बलाकत उठि क' बैसि गेल। अद्भुत जिज्ञासा दुनूक आँखि मे प्रगट भ' गेलै।

–"लेकिन, तूँ के हौउ भाइ?"

–"रसूलनबाई का लड़िका। हमीद बोल' या हमीदबा।"

हमीद आबि दुनूक बीच मे बैसि गेल। फेर ओकरा सूचित केलक जे जामे तक झोटन मियां जीबैत रहल, कोनो वस्तुक कमी नहि रहै। झोटन मियां चोरक

ओस्ताद, चोरिक इल्म मे माहिर। सेन मारनाइ, सुरंग कोरनाइ, कोन समय केहन हथियार राखी, कोन बोली कखन बाजी जाहि सँ साथी चौकस आ सावधान भ' जाय, ई तालीम ओ अपन शागिर्द कैँ सिखबैत छल। ओकर सैकड़ो चेला, दूर-दूर तक चोरि करए जाइत छल आ झोटन कैँ हिस्सा पहुँचाबैक। ककरो इमान मे कोनो खोट नहि तैँ झोटनक झोड़ा सदिकाल भरल रहैक।

मुदा, झोटन मियांक इन्तकाल भ' गेलै तकरा बाद दुनिया बदलि गेलै। ओकर बेटी रसूलनबाई कैँ खेबा-पिबाक तकलीफ होब' लगलैक। ओ रुदला चोरक संगे निकाह केलक, मुदा रुदला धोखा द' देलकै। रसूलनबाइक गोदी मे जखन हमीदवा चिहौं-चिहौं करैत छलै, रुदला अरब देश पलायन क' गेल।

हमीद अपन खिस्सा कहैत-कहैत झोड़ा सँ एकटा बड़का दारूक बोतल निकालि क' लियाकतक हाथ मे पकड़ा देलकै आ कहलकै—"आधा-आधा दुनू मामूजान चढ़ा जाओ, जाड़ा भाग जाइ।"

बिना कोनो उजूर केने लियाकत आ बलाकत आधा-आधा बोतल पीबि गेल। फेर हमीद दिस ताकए लागल। हमीद अपन रामकहानी कैँ आगाँ बढ़बैत बाजल—"अम्मा अपन आखरी वकत मे हमरा कहलक, अब्बा का सबसे अच्छा शागिर्द रहलै हेंए लियाकत आ बलाकत। उतना इमानदार चोर आज तक ने होलै। ओकर गाम हैइ खैरा, नोनही, जामघाट, सगुनियाँ औरू इजरहट्टा सँ घिरल तुगलकाबाद। पूरा मुसलमान का बस्ती। घोड़ासाहन टीसन से दस कोस उत्तर।"

—"हँ, त' मामूजान। अता-पता करिके, तोहर नाम के ठेकाना पर इहाँ पहुँचली है। आब तूँ हमरा के आसरा द' आ भगा द', ई तोहर मर्जी।"

पूसक जाड़, भोरुका समय, बोतलक निशा आ झोटन मियांक औलाद। लियाकत आ बलाकत एकहि संग बाजि उठलै—"ना, ना, बेटा। तूँ यहीं जगह रही। तोरा अब बखतियारपुर जाइ के कोनो जरूरत नाहीं। तोहर सब मुराद हिआं पूरा होइ।"

—"का कहत हौउ मामू? एक दफा त' बखतियारपुर जाइ के होइ। हे ई देख'।" कहैत हमीद झोड़ा सँ एकटा चमकैत सोनाक कंगन निकाललक आ बाजल—"बखतियारपुर का सटल हैइ तुरही टोला। ओतए बन्हकी के काम मे मस्त हैइ सिआबर चौधरी। ओकरे घर मे सेन मारली। अल्ला हो अल्ला, गहना के पहाड़ से माथा ठेक गेल। ओहि जगह से एकटा गहना उठा लैली हेंए।"

लियाकत आ बलाकत सोनाक कंगन कैँ देखैत देरी कोकिंआय लागल—"बड़ा

कीमत बला दिख हैइ?

—"वही तो। एक बार दुनू मामू के साथ जायब। तीनू जन तीन बोरा गहना उठा के ले आयब। इहाँ कोठा बनाइब औरू मस्ती मे जिनगी जीअब। अही खातिर त' मामूजान के हिआं आना हुआ है। अकेले का काम ना न' हइ।"

—"कब जाइ का होइ रे हमीदबा?"

—"आज शाम को सफर चालू कर' त' काल तक ठिकाना पर पहुँचब। एक दिन लागेला औजार जुटे मे। तब ओकरे बाद सेन्ह मारब। ओही सोच मे अइली हएँ।"

लियाकत आ बलाकत टकटक सोनाक कंगन दिस तकैत बाजल—"जैसन भगिना बोलत, हम करब।"

हमीद ठामे पयर पसारि क' बाजल—"थाका हैइ। एक-दू घंटा सूत लेब त' मिजाज दुरुस्त होइ।"

हमीद अपन झोड़ा कैँ गहिया क' पकड़ि सुति रहल। सुतैत देरी ओ निसभेर भ' गेल। लियाकत आ बलाकत बेरा-बेरी सोनाक कंगन कैँ तजबीज करैत रहल।

लियाकत आ बलाकत पाँच-दस कोस तक चोरि करै लेल जाइत छल। तुगलकाबादक नजदीकी बस्ती मुसलमानक तथा किछु हटल हिन्दूक आबादी छलैक। मुदा, कंगाली एकहि तरहें सम्पूर्ण इलाका मे पसरल छलै। ओहि दरिद्रताक माहौल मे लियाकत आ बलाकत कहुना किछु अन्न आ फूटल-भांगल चोरा क' अनैत छल जाहि सँ गुजरो ने होइत छलैक। बगलक खोपड़ी मे दुखनी मौसी रहै छलै। ओ कुजरनी छल आ पैकारीक सब्जी कीनि घरे-घर बेचि किछु टाका, किछु अन्न उपार्जन करै छल। बुझू जे ओकरे मददि सँ लियाकत आ बलाकत कहुना भोर सँ साँझ आ साँझ सँ भोर करै छल।

तुगलकाबाद चारू कात मुसलमानक गाम सँ घेरल। एकोटा हिन्दूक घर नहि। पछिला अनेकों वर्ष सँ अहमदुल्ला खांक एकक्षत्र राज, समूचा इलाका पर ओकर हुकूमत।

अहमदुल्ला खां सांसद छल। चारि मन वजन, छह फीट ऊँचाइ, कारी थुथूर, कसाइक चेहरा, पूरा राक्षसक प्रतिरूप। जखन ओ हँसय वा बाजए त' चारू कात बसात मे थरथरी व्याप्त भ' जाइक।

तुगलकाबादक मध्य मे करीब पाँच-छः बीघा जमीन मे घेरल ओकर हबेली। हबेलीक चारू कात दू मंजिला इमामबाड़ी, दस टा मस्जिद, पाँचटा मदरसा आ

चुनल पहलमान टाइप मनुक्खक घर। अहमदुल्ला खांक हबेली दस फूट ऊँच छहरदिवारी सँ घेरल पुरना किला जकाँ देख' मे अबैत छल। छहरदिवारी तारक काँट सँ छाड़ल जाहि मे सदिकाल बिजलीक करेन्ट दौड़ैत रहैक। मात्र पश्चिम कात एकटा गेट। दू गुम्बजक बीच विशाल लोहाक फाटक। फाटकक रक्षाक भार बीस गोट शातिर, छँटल पाकिस्तान आ बंगलादेश मे टेरेन्ड एवं आधुनिक अस्त्र-शस्त्र सँ सुसज्जित पलटनक जिम्मा। अहमदुल्ला खांक हबेली मे बिना हुकुमनामा कैँ एकटा गिरगिटो प्रवेश नहि क' सकैत छलै।

इलाका भरिक जमीन पर अहमदुल्ला खांक जायज वा नजायज कब्जा। ओहि जमीन जथा कैँ देख-रेख करै लेल तहसीलदार करिन्दा आ नोकर-चाकरक फौज।

अन्दर हबेली मे दस कट्ठाक एकटा पोखरि पक्काक घाट सँ घेरल। पोखरिक एक कात छः-छः इंचक दूटा बोरिंग। बोरिंग ऊपर पैघ आकारक टंकी। पोखरिक दोसर कात वायरलेसक गगनचुम्बी टावर। थोड़ेक हटल, एक कात अपन बिजली पैदा करैक मसीन घर।

हबेलीक मध्य मे अहमदुल्ला खांक शानदार महल। महलक बनावट ओ सजावट मुगलकालीन बादशाहक महल कैँ मात करै बला। महलक वास्तुकला अरब सभ्यताक प्रतीक छलै।

महलक पूरब गैरेज आ ओकर बगल मे विशाल बाबर्चीखाना। अहमदुल्ला खांक अपन बाबर्चीखाना अलग। कादिर खां नामक बाबर्ची ओकर मुखिया छल। गोस्त, मुर्गा, बटेर, सेबई, बैगुन भाजा, कोफ्ता, कबाब–कहैक अर्थ जे छप्पन प्रकारक भोग अहमदुल्ला खांक लेल नित्य बनैत छल। बाँकी सभ नोकर-चाकर लेल गायक गोस्त आ भात।

महलक एक कात करीब बीसटा एक पतियानी मे कोठली। ओ छलै अहमदुल्ला खांक हरम जाहि मे मुस्लिम, हिन्दू, नेपाली, नेवाड़ी, भूटानी, चीनी आ ईरानी सुन्दरीक जकिरा। अन्दाज पचास सँ अधिक नवयुवती अहमदुल्ला खांक हरम मे सदिखन ओकर हवस पूर्तिक लेल तैयार आ तत्पर रहैत छल। हरमक इन्चार्ज छलै रजिया नामक एकटा खूंखार जनानी। सदिखन ओ हाथ मे चमड़ाक चाबुक नचबैत रहए। अहमदुल्ला खां राक्षस छल त' रजिया राक्षसनीक पर्याय छल।

आमोद-प्रमोद, नाच-गाना, निशा-पानी, बैठक खाना, खास-खास मेहमानक

लेल अराम आदि अलग-अलग कोठली मे होइ छलैक। अहमदुल्ला खांक निजी कक्ष सबसँ अलग रहै। ओहि मे सुतबाक घर सँ एकटा सटल घर रहै जाहि मे वायरलेसक विभिन्न रिसिभर, पतियानी मे राखल कम्प्यूटर, चारू कात देवाल पर स्क्रीन, खास-खास हथियार आ एकटा मखमली कुर्सी छलै। ओही मखमली कुर्सी पर बैसि क' अहमदुल्ला खां हबेली, हबेली सँ बाहर तथा दुनिया सँ सम्पर्क रखै छल। अहमदुल्ला खांक निजी कक्ष मे जेबाक हुकुम किछु चुनल नोकर-नोकरानी कँ रहै। ओही निजी कक्ष सँ तहखाना मे जेबाक रास्ता छलैक। एकर जानकारी मात्र अहमदुल्ला खां कँ रहैक।

अहमदुल्ला खां बुझू जे निर्विरोध सब बेर सांसद चुनल जाए। के ओकर विरोधक साहस करितैक! ओकर संसदक चुनाव क्षेत्र मे छह टा विधायक सीट रहै। सभ कँ सभ मुसलमान आ अहमदुल्ला खांक खुशामदी। प्रान्तक सबटा मुसलमान सांसद आ विधायक अहमदुल्ले खां कँ अपन नेता मानने छलै। राजनीति सिमटि क' भोट मे सन्हिया गेल छलै, भोटक महाराजाधिराज बनि गेल छल अहमदुल्ला खां। तकरा ल' क' आनो राजनीतिक पार्टीबला मुसलमानक भोट अपना पक्ष मे करबा लेल अहमदुल्ला खांक खुशामद मे बेहोश रहै छल। प्रजातंत्रक अजीब समाखा बनि गेल छलै अहमदुल्ला खां।

ई सब त' देखार गप भेल। एकरा द' त' सम्पूर्ण प्रान्तक लोक कँ थोड़-बहुत खबरि रहबे करैक। मुदा, अहमदुल्ला खांक असली परिचय जे रहैक तकर दिग्दर्शन त' करी।

अहमदुल्ला खांक हबेली मे जमीनक अन्दर विशाल तहखाना छलै। ओकर कुंजी प्रभारी आ जानकारी मात्र ओकरे टा रहैक। इलाका भरिक थानाक प्रभारी आ आन सभ अमला अहमदुल्ला खांक इशारा पर नियुक्त होइत छल। बंगलादेश सँ खेपक खेप हथियार तथा राइफल, बन्दूक, पिस्तौल, बुलेट पेटीक पेटी आरएसडी, हथगोला, डिटोनेटर, टाइमर आ विभिन्न तरहक ड्रग्स ट्रक सँ अबैत छल आ अहमदुल्ला खांक तहखाना मे भरल जाइत छल। ओतहि सँ सम्पूर्ण प्रान्तक संगहि-संग दक्षिण भारत तकक आतंकवादी कँ अस्त्र-शस्त्र निर्विरोध सप्लाइ होइत छलै। कनेक-मनेक एकर जानकारी रहितो ककर मजाल जे ओकरा पर आंगुर उठा सकैत। भोटक राजनीति आ नेताक स्वार्थ, सम्पूर्ण प्रान्त कँ पीसि भरकुस्सा क' देने छल। ओहि हथियारक खरीद-बिक्री सँ अहमदुल्ला खां कँ अरब मे आमदनी छलैक।

पाकिस्तानक आइएसआइक नियंत्रण अहमदुल्ला खां कैँ छलैक। नेपालक सीमा संगे त्रिपुरा राज्य तक, प्रत्येक पुल, तेल प्रतिष्ठान आ सेनाक अड्डाक खबरि आ नक्सा अहमदुल्ला खांक बपौती सम्पत्ति जकाँ छलै।

अमहदुल्ला खांक इन्तजाम पोख्ता छलै। ओ अपन खोल मे सुरक्षित, अइयाशीक पराकाष्ठा मे जीवि रहल छल। ऊपर सँ प्रान्त सरकार, विदेशी जासूस आ धर्मान्ध मुसलमानक प्रचुर सहयोग पाबि ओ अजेय बनि चुकल छल। लूट-पाट, बलात्कार, अपहरण आ आतंकक राक्षस सम्पूर्ण प्रान्त मे पसरल छल। बाहरक लोक एतय आब' मे जानक खतराक अनुभव करैत छल। प्रान्तक छोट-पैघ व्यापारी एक-एक क' पड़ा चुकल छल। कोनो कानून नहि, कोनो व्यवस्था नहि, शासन जातिवाद, गुटवाद, चोर, भ्रष्ट आ ठगक अधीन भ' गेल छल।

अहमदुल्लाक खांक विरुद्ध बजनाइक अर्थ भेल जे अहाँ अल्पसंख्यक विरोधी छी। ओकर विरुद्ध सोचनाइक अर्थ भेल जे अहाँ प्रजातंत्र पद्धति सँ चुनल सरकारक अहमियत कैँ नकारि रहल छी। मात्र भोटक दुनिया। जेना हो भोट बटोरी आ ओहि मे बाधा आबय त' ओकरा आगि लगा क' डाहि दी।

अहमदुल्ला खांक तहखाना हथियारक जकिरा संगहि अकूत धन सँ भरल छलै। बोराक बोरा कैश, सोनाक छड़क ढेरी आ हीरा-जवाहरात सँ भरल अलमारी संदूक तहखाना मे सुरक्षित छल। ओ धन मात्र चुनावक समय मे खर्च होइत छल। जीतैबला पार्टी कैँ कतेक जरूरत छै? प्रत्येक विधायक कैँ जीतै मे कतेक धन चाही? हिन्दू भोट कैँ काट' मे कतेक दौलत चाही? कुल एक अरब? ठीक समय पर अहमदुल्ला खांक आदमी जगह-जगह पर पहुँचा देतैक।

अहमदुल्ला खांक व्यवस्था मे मात्र एकटा छिद्र छलैक। ओ छलैक ओकर निश्चिन्तता। 'मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है'—यैह अभिमान ओकर मगजक मणि बनि चुकल छलै।

ओहि निश्चिन्तताक छिद्र मे हमीद नामक एक युवकक पदार्पण भ' चुकल छल। तुगलकाबादक एक कात, बस्ती सँ कनिकबे हटल मात्र दूटा खोपड़ीक टोल, जाहि एक मे लियाकत आ बलाकत रहै छल तथा दोसर मे दुखनी कुजरनी। लियाकत आ बलाकत बला खोपड़ी मे हमीद निसिभेर अपन झोंरा कैँ बकुटने सुतल छल।

करीब आठ बजे दिन मे हमीदक निन्न टुटलै। सूर्य बड़ीकाल पहिले उगि चुकल छल। मुदा, कुहेसक कारणे तुगलकाबाद झांपल जकाँ छल। बहुत दूर तक

किछु देखब कठिन छलैक।

हमीद चारू कात तकलक। लियाकत आ बलाकत संगे एकटा बुढ़िया ओहिठाम बैसल छल। बुढ़िया दिस सँ हमीद कैँ तकैत देखि लियाकत बाजल–"ई दुखनी मौसी ह'। बगल का खोपड़ी एकरे हइ। ई बड़ा अच्छा औरत हैइ।"

हमीद आगाँ किछु नहि पुछलकै।

अभावक जिनगी मे लोभ राक्षस बनि जाइत छै। सोनाक कंगनक प्रभाव लियाकत आ बलाकत संगे ओकर मौसी कैँ एतेक ने जिज्ञासा भरि देने छलै जे ओ तीनू बेचैन भ' गेल छल। भरि बोतल दारुक कोनो नशा लियाकत आ बलाकत कैँ नहि भेलैक। ओ सोनाक कंगन बेरा-बेरी हाथ मे कुदबैत हमीदक जगैक प्रतीक्षा क' रहल छल। हमीद कैँ निन्न सँ जागल देखि लियाकत पुछलकै–"बबुआ, मौसी कैँ बुझा द' जे कंगन का दाम कितना होइ?"

तीनूक नजरि कंगन पर टिकल। हमीद सेहो ओम्हरे ताकय लागल छल। तकिते बाजल–"मामूजान, एगो बातका जबाब द'। हिआं बन्हकी का काम करैबला कोनो सर्राफा ह'?"

–"हाँ, हैइ ना। नाम हैइ बादशाह खां।"

–"तबे ठीक हइ। तूँ दुनू मामूजान जा औरू जाके कंगना बेच दहु। चोर के घर मे दामिल सामान रखै मे खतरा हइ।"

हमीदक प्रस्ताव सुनि लियाकत आ बलाकतक चेहरा खुशीक इजहार कर' लगलैक। दुनू कंगन ल' क' बिदा भेल।

मामूजानक गेलाक बाद हमीद दुखनी मौसी कैँ लम्बा-लम्बा सलाम केलक, फेर बाजल–"मौसी, तीन मुर्गाक इन्तजाम क' दहू। हमरा आइ मूर्ग-मोस्लम और कश्मीरी पोलाव पकेबा केह'।"

दुखनी बिना किछु जवाब देने हमीद दिस टुकुर-टुकुर तकैत रहलि। ओकर असिलका भाव बुझि हमीद पाँच गोट करकराइत पचासक नोट निकालि क' दुखनीक हाथ मे राखि देलक। करकराइत नवका नोट देखिते दुखनीक वैह दशा भेलैक जे कंगन देखिते लियाकत आ बलाकत कैँ भेल रहैक। मुर्गा छोड़ के आरो का समान का काम होइ?

–"दू किलो अच्छा चावल, तीन मुर्गा, एक पाव घी, करुआ का तेल, लाल मिरची आरू नमक। बाँकी मसाला हमारे पास हइ। औरो रुपया का दरकार होइ त' बोले के होई?"

—"न, न, हितना रुपया काफी ह'। तुँ इहाँ बैठ"। हम सब समान ले आबी। ओ का नाम हई, बादशाह खां। ओकरा कहै के हइ जे दुखनी अब उधार ना लेता। अल्ला, हमीद के ला के सब मुराद पुरा कर दिहिन हैइ।

कनिए कालक बाद दुखनीक खोपड़ी मे, ओकरे चुल्हा पर मुर्गा आ चावल पकौनाइ शुरू केलक। सुकूर भेल जे दुखनीक घर आबादी सँ हटल छलै नहि त' भिखमंगा चोरबा घरक गमक कोनो आने समस्या ठार क' दैत।

लियाकत आ बलाकत सोनाक कंगन नेने सोझे बादशाह खांक दोकान मे पहुँचल। बादशाह खांक ओहिठाम लटगेना, स्टेशनरी, रेडीमेड, लहना अर्थात् सभ तरहक कारोबार होइत छलैक। जखन लियाकत आ बलाकत दोकान मे पहुँचल त' संयोग सँ कोनो गाहक ओत' नहि रहैक। बादशाह खांक नोकर-नोकरानी एक कात बैसल चाह-बीड़ी पिब रहल छल। दोसर कात काउन्टरक पाछाँ आरामकुर्सी पर बैसल बादशाह खां हुक्का गुड़गुड़ा रहल छल। ओ बलाकतक हाथ सँ सोनाक कंगन कैँ अपन हाथ मे ल' क' थोड़ेक काल तक तजबीज करैत रहल।

लियाकत आ बलाकत चोर छल से तुगलकाबाद गामक धिया-पूता तक कैँ बुझल रहैक। चोरक करेज कमजोर होइत छैक। ओ कखनो क' कंगना कैँ निहारय त' कखनो बादशाह खांक पकलाहा भौंक नीचा अधमुनायल ओकर आँखि कैँ । ओहि दुनूक करेज धक्-धक् करैत रहैक।

—"तीन हजार!"

बादशाह खांक तीन हजार दाम सुनि बलाकत जमीन पर थूकलक आ चुपे रहल। लियाकत बाजल—"महाजन, ऐसन माल ओरू दाम तीन हजार। वापस कर दुहू।

—"पाँच हजार!"

लियाकत आ बलाकत चुप्प। बादशाह खां कनेक चुप्पीक बाद कर्कश आवाज मे कहलकै—"चोरीक माल हई औरू मोल जोल। ठीक छह हजार लो औरू दफा हो जा।"

कहैत बादशाह खां कंगन के सामने राखल कन्तोर मे रखलक, बगल महक गल्ला सँ गड्डी निकालि छह हजार रुपया गननाई शुरू केलक।

घबराइत आ हड़बड़ करैत लियाकत कहुना क' मुँह खोलकक—"जैसन तूँ ठीक समझ' महाजन। खुदा का कसम, हमरा दुनू के कपड़ा द'। जाड़ा से मरल जात ही।"

रुपया गनैत बादशाह खां अपन नोकर कैँ आवाज देलक–"अबदुल्ला, दोनो साले को पैजामा, कुर्ता औरू स्वेटर पिनहा दो। हाँ औरू सुनो, दोनों को एक फरबला टोपी भी देना। साला, गजब का ठंढ़ है!"

छह हजार रुपैया, ऊपर सँ नीचा तक नव वस्त्र आ फरबला टोपी पहिरने लियाकत आ बलाकत खुशीक ठेहुनियाँ दैत वापस आयल। तामे हमीद खाना तैयार क' चुकल छलै।

दुखनी फाटल चद्दरि बिछा क' ओहि पर उनटा केराक पात बिछौलक। फेर चारि ठाम खाना परस' लागल त' हमीद कहलकै–"मौसी, थोड़ा खाना बचा के रख लहु, हम आ मामूजान शाम के वकत चल जायब। तोरा रात का खाना हो जाई।"

लियाकत आ बलाकत कैँ प्रायः जन्नतक कोनो कल्पना नहि छलैक। मुदा आजुक अनायास उपलब्धि, छह हजार टाका, नया कपड़ा आ मुर्ग-मोसल्लमक अति विशिष्ट भोजन, निश्चय ओकरा दुनू कैँ जन्नत मे पहुँचा देलकै।

एमहर लियाकत आ बलाकत कैँ गेलाक बाद बादशाह खां अन्दर कोठली मे गेल। जंजीर चढ़ा क' कोठलीक एक मात्र केबाड़ कैँ बन्द केलक। फेर रेती सँ रेत क' कंगन कैँ दू फांक क' तोड़लक।

ओहि मे सँ निकलल सांकेतिक भाषा मे लिखल एकटा चिट्ठी। चिट्ठीक आशय छल जे घोड़ासाहन टीसनक नजदीक रेलवे इन्जीनियर बनल, टेन्ट खसौने भट्टाचार्य अर्थात् भाटाजी अड्डा बना चुकल छथि। जरूरी उपकरण सभ पहुँच चुकल छै। अहाँ जखन ई पत्र प्राप्त करब त' तकर अर्थ भेल जे हमीद यानी नकुल लियाकत आ बलाकतक खोपड़ी मे पहुँच क' अपन राज स्थापित क' चुकल होयत। आइ राति मे लियाकत आ बलाकतक अपहरण भ' जेतैक। भाटाजीक टेन्ट सँ दस युवक आ पाँच युवती चलि क' चारि बजे भोर तक लियाकत आ बलाकतक खोपड़ी मे स्थान पकड़ि लेत। नकुलक संगे सभ आवश्यक सामग्री सेहो पहुँच जेतैक।

काल्हि चारि बजे बेरिया मे कार्यक्रम आरम्भ करू। अहमदुल्ला खांक हबेली मे नियुक्त चाँद उसमानी बनल बेबी सुकोरानी कैँ जीरो ऑवरक सूचना द' दिऔक। जीरो ऑवरक उनटा गिनती चालू।

बादशाह खां चिट्ठी कैँ अंगूठी मे जरा क' बाहर अयलाह। ओ नोकर आ नोकरानी दिस तकैत सभ कैँ जमा केलनि। नोकर मे छल अबदुल्ला, करीम आ नथुआ। नोकरानी मे छलै नुरा। सब भुखन सिंहक टरेन्ड, विश्वस्त आ प्राण देब'

बला। सभहक मंत्रणा शुरू भेल। बादशाह खांक मुंह सँ मात्र एतबे टा बहरायल– "काम का वकत आ गइल।"

करीब चारि महिना पूर्वक घटना थिक। ठाकुर नांगटनाथ सिंह बला अभियानक समाप्ति पर चमेलीरानीक कल्पना मे नव-नव पल्लव प्रगट होब' लागल जाहि मे एकटा छल अहमदुल्ला खांक सत्यानाश आ करोड़ो-अरबो धनक उगाही। ओही अभियानक अन्तिम स्वरूप देबाक लेल चमेलीरानी अपन धर्म-पिता भुखन सिंहक दरबार मे हाजिर भेलीह।

भुखन सिंह अपनहि एक चतुर व्यक्ति छलाह। डकैतक शीर्ष मे पहुँच' मे हुनका बुद्धि मे कुशलता आ प्रखरता स्वभावतः आबि चुकल छलनि। चमेलीरानी द्वारा पसारल बिसात कैँ ओ तीक्ष्ण तथा एकाग्र चित सँ सुनलनि। हुनक पैघ अनुभव मे आतुरताक पूर्णतः अभाव छल। ओ प्रत्येक डेग कैँ बारिकी सँ अध्ययन क' अपन विचार आ संशोधन प्रस्तुत केलनि।

भुखन सिंह कैँ कोनो संतान नहि। ओ चमेलीरानी कैँ अत्यधिक सिनेह एवं आदर करैत छलाह। ओहिना चमेलीरानीक व्यक्तित्वक ऊर्जा सँ भुखन सिंह प्रभावित छलाह। ओ अपन डकैतीक कार्य कैँ पूर्ण विराम दैत चमेलीरानीक योजना मे धनबल, शक्तिबल आ बुद्धिबल देबाक लेल सदिखन तत्पर भ' चुकल छलाह।

समस्त योजना कैँ ठोकि-बजाक' दुरुस्त करैत भुखन सिंह अपन उद्गार प्रगट केलनि–"रिस्क त' छैक। मुदा, योजनाक उद्देश्य उत्तम आ पवित्र हेबाक कारणें एकर सफलता मे संशय करब अनुचित। ओना रिस्क लेब त' हमर सभहक दिनचर्या बनि चुकल अछि।"

अहि तरहें चमेलीरानी अपन धर्म-पिता भुखन सिंहक समक्ष तुगलकाबादक बेताज बादशाह अहमदुल्ला खां सांसदक शिराछेदनक पक्का बियौंतक निश्चय केलनि।

भुखन सिंह अपन सबसँ तेज-तर्रार शागिर्द शालिग्राम आ अद्भुत प्रतिभा सम्पन्न बेबी सुकोरानी कैँ हाजिर हेबाक फरमान देलनि। भुखन सिंहक इजलास गंगा नदीक लहरि मे पाल सँ झांपल नाव भ' रहल छल।

बज्रनाथ आ शालिग्राम भुखन सिंहक दायां-बायां हाथ छल। ठाकुर नांगटनाथ बला अभियान मे बज्रनाथ अर्थात् बज्जरकका कुशलतापूर्वक काजक निष्पादन केने छलाह। आब भुखन सिंह सोझे शालिग्रामक आँखि मे देखैत संदेश कहलनि– "चमेली हमर बेटी, हमर सभ किछु। चमेलीक नवीन योजनाक मोताबिक एकटा

दैत्यक समूल नाश कर' के छै। अहि काज सँ प्रायः हमरा सभहक पाप सेहो कम भ' जायत। हमर सभहक प्रान्त पथभ्रष्ट भ' चुकल अछि। ओकरा एक दिशा, एक मार्ग आ एक सत्य सँ परिचित करेबाक छै। ताहि हेतु शालिग्राम हम अहाँ कैँ चमेली बिटियाक मातहत करै छी। काजक समाप्ति पर अहाँ वापस हमरा लग आबि जायब।"

शालिग्राम अपन विधाता भुखन सिंहक आदेश शिरोधार्य केलनि। आ चमेलीरानीक कुर्सी लग आबि क' नावक पयदान पर बैसि गेलाह।

भुखन सिंह आब बेबी सुकोरानी दिस घुमला। बीस बर्षक अति रमणीय सौन्दर्यक मालकिन बेबी सुकोरानी अपन चंचलता कैँ नुकेबाक उद्देश्य सँ नीचा गंगाक लहरि कैँ देखैत भुखन सिंहक आदेश लेल ठार भ' गेलीह। भुखन सिंह अत्यन्त कोमल वाणी मे बजला–"योजनाक स्वरूप आ खाका त' अहाँ कैँ चमेली बिटिया कहती। मुदा अहि काज मे सबसँ कठिन पाट अहीं कैँ अदाय कर' पड़त। सम्पूर्ण प्रोजेक्ट मे अहाँक काज सबसँ खतरनाक आ जिम्मेदारी बला होयत। अहाँ सभ तरहक ट्रेनिंग पाबि चुकल छी। बाँकी चमेली बिटियाक देखरेख मे होयत। हमर आदेश जे अहि काज मे अहाँ तन-मन निछावर करी आ मृत्यु सामने आबि जाए त' ओकरा वरण करी। जा, जाके चमेली बिटियाक अधीन काज कर' ग'।"

बेबी सुकोरानी मात्र एकबेर चमेलीरानीक आँखि मे तकलनि। ओतए सँ चिनगारी निकलि रहल छलै। बेबी सुकोरानीक हृदय मे एकटा अनजान हुलास भरि गेलै। ओ मोने मोन बाजलि, आब जिनगीक असली मजा भेटतैक। वाह रे हमर नसीब। जकर आश लगौने रही सैह भेटि गेल।

शालिग्राम आ बेबी सुकोरानी मात्र एक महीनाक गहन ओ कठिन तालीमक बलें मुसलमानी मजहब कुरान सँ पुरान तक, सलाम सँ नवाज तक, सब किछु मे पारंगत भ' गेलाह। मुसलमानक बजनाइ खेनाइ, उठब-बैसब, नजाकत, इल्म, गुसूल, खंखसब आदि सब तरहक रीति रिवाज सँ वाकिफ भ' गेला।

संयोग कही जे किछुए पहिने मुंगेरक किला लग एकटा अफगान तालिबानक जासूस भुखन सिंह गिरोह द्वारा पकड़ल गेल छल जकर नाम छलै बादशाह खां। ओ थार मरूभूमि कैँ पार करैत, राजस्थानक गंगानगर जिला लग भारत मे प्रवेश केने छल। लिस्टक मोताबिक भारतक मुख्य-मुख्य आतंकवादी नेताक भेंट करैत ओ बिहार होइत नेपाल मे जेबाक फिराक मे छल। ओ रस्ता भुतिया गेल। आ मुंगेर पहुँचल छल। ओकरा काठमाण्डू स्थित आइएसआइक कैम्प मे पहुँचक रहैक।

शालिग्राम तत्काल बादशाह खां बनि ओकर जाली पासपोर्ट, ड्रेस, भाषा, बोली आ कागज-पत्तर लैत काठमाण्डू पहुँच गेलाह।

काठमाण्डू पहुँचि क' शालिग्राम कोन-कोन चक्कर चलौलनि से त' वैह जनता मुदा, आइएसआइक फरमान अहमदुल्ला खां कैं भेटलैक–"बादशाह खां अपने तीन नोकर और एक नोकरानी के साथ तुगलकाबाद मे रहेगा। उसको सभी सहुलियत देना है। जरूरी के वक्त ही इससे मिलना है, नहीं तो किसी भी तरह का उसके साथ टोका-टोकी नहीं करना है।"

अहमदुल्ला खां कैं के कहय ओकर बापो कैं हिम्मत नहि होयतैक जे आइएसआइक आदेशक अवहेलना करैत। अहि तरहें शालिग्राम बादशाह खां बनि, दोकान खोलि तुगलकाबाद मे स्थापित भ' गेल।

बेबी सुकोरानी पहुँचलीह दिल्ली। जामा मस्जिद सँ चाँदनी चौक जेबाक रस्ता मे एकटा मोहल्ला। जाहि मे औरंगजेब जमानाक पुरान, ढहल आ ढनमनायल मकानक कतार। ओही मे छल शरबती महल। संसद जखन चालू रहैत छल त' अहमदुल्ला खां कैं किछु दिनक लेल दिल्ली जाए पड़ैत छलैक। दिल्ली प्रवास काल ओ शरबती महल मे ठहरैत छल। बाहर सँ खास्ता हाल मुदा भीतर सँ सजल सब सुख-सुविधा सँ परिपूर्ण छल शरबती महल आ अहमदुल्ला खांक रक्षाक भार छलैक आइएसआइ कैं ।

मुदा दिल्ली प्रवास अहमदुल्ला खांक अत्यंत कष्टक समय बनि जाइत छलै। तुगलकाबादक व्यवस्था एतए कत' सँ पाबी। सब किछु मे तकलीफ। ताहि पर सँ असंख्य मुसलमान आ हिन्दू नेता सभ ओकर भेंट करबाक लेल आतुर, लाइन मे ठार रहैत छल। तें ओ तंग भ' क' बजैत छल–"ओ अल्ला-ताला, इन बेवकूफों से निजात दिलाओ।"

ओहने स्थिति मे जखन अहमदुल्ला खां अधीर एवं बेचैन छल, ओकर बिरान जिन्दगी मे अइयासीक पूर्ण अभाव भ' गेल छलै, ओकर दिल्लीक खिदमतगार फने खांक मुट्ठी गरम क' क' बेबी सुकोरानी अहमदुल्ला खां कैं सोझा मे पहुँचि गेलीह।

फने खां परिचय देलक–"हजूर, फिलमी दुनिया का हुर हई। अई चौहदवीं का चाँद उसमानी, कसम अल्ला का, एके खिदमत का मौका दहु, हजुर को जन्नत पहुँचा दिह।"

अहमदुल्ला खां नजरि उठा क' चाँद उसमानी कैं देखलक, बस देखिते रहि गेल। चाँद उसमानीक अदा आ नजाकत ओकरा तुरंते अवारा कुकुर मे बदलि

देलकै।

अस्सी प्रतिशत प्रूफ जीन सँ तैयार मार्टिनी, फ्रेंच बरमन सँ बनल टॉम क्वलीन, रसियन वोडगा आ टमाटो जूस बर्फ मे पिघलल ब्लडी मेरी आदि पेय अबदुल्ला खांक मोन, प्राण आ वाणी कैँ मोहि लेलक। शराबक संगहि चखना चाही। लवस्टरक कटलेट, प्राउनक लाल-लाल भूजल चिप्स आ बटेरक कोरमाँ खा-खा कैँ अहमदुल्ला खां वाह-वाह क' उठल। ओकरा संगे ओकर हरम सँ दू-तीन गोट बीबी आयल छलैक। चाँद उसमानी ओकर सजावट केलक, क्वेरा इत्रक छिड़काव केलक आ राजस्थानी लहंगा आ ओढ़नी मे जखन ओहि बीबी कैँ अहमदुल्ला खांक आगाँ पेश केलक त' ओ प्रफुल्लित भ' उठलै—"मान गये, तुम जन्नत की परी हो। आज से, अभी से बन्दा तुम्हारा गुलाम है। सच है, ऐसा मजा तो पहले कभी नहीं आया था।"

अहमदुल्ला खांक अइयासीक दिवानगी जखन अकाश छुब' लगलैक आ ओ चाँद उसमानीक भोग कर' चाहलक त' चाँद उसमानी एक अन्दाज सँ ओकरा देखैत कहलनि—'मेरा हुस्न खुदा का अमानत है। मुझे छूओगे तो जल जाओगे। वक्त आयेगा, मै अपने-आप तुम्हारे आगोश मे पहुँच जाऊँगी। अभी इन्तजार करो, सिर्फ इन्तजार करो।'

जेना बुलडॉग अपन मालिक लग नांगरि डोलबैत अछि तहिना अहमदुल्ला खां चाँद उसमानीक आगाँ नांगरि डोलबय लागल। मानसिक रूपे ओकर संतुलन डगमगा गेल छलै। ओ पूर्ण रूप सँ चाँद उसमानीक अधीन भ' गेल छल आ ओकर नकेल चाँद उसमानीक अँगुर मे पहुँचि गेल छलैक। अहमदुल्ला खांक मात्र एकटा ख्वाब रहि गेल छलै जे ओ कहिया चाँद उसमानी कैँ प्राप्त करत।

अहमदुल्ला खांक संगे चाँद उसमानी तुगलकाबाद हबेली मे पहुँचलीह। ओहि ठामक सभ व्यवस्था आ हबेली मे मौजूद सभ प्राणी सँ हुनक परिचय भेल। किछुए दिन मे सभहक मालकिन, सभहक चहेती, सभहक नीक-बेजाय पूरा कर' बाली बनि गेलीह। जखन अहमदुल्ला खां हुनकर गुलाम त' फेर मुँह उठेबाक कियो साहस कोना करितय?

आरम्भ मे थोड़ेक झंझट केलकै रजिया। रजिया कैँ भेलै जे इहो कोनो हरमक नवका बीबी थिक। ओ अपन चाबुक भँजैत ओकरा पर अपन रूआब देखाब' चाहलकै। मुदा एक दिन अनचोके में चाँद उसमानीक कराटे चाप ओकर गरदनि पर बजरलैक। ओ खूंखार जनानी होइतो बेहोश भ' क' खसि पड़ल। जखन ओकरा

होश भेलै त' चाँद उसमानी उपदेश देलनि—"सुन ओ गदही। मै तुम्हारी मालिकन और तुम मेरी जूती। समझी! आज से दूसरों की तरह हरम मे रहोगी। बिना मेरे हुकुम का अगर हरम से बाहर आओगी तो जान से मार दूंगी।"

ओहि दिनक बाद, की मजाल जे रजिया मुँह उठाओत।

आब खिस्सा कैँ एक स्थान पर आनि ओकर बिहंगम अवलोकन करी। अहमदुल्ला खांक अजय किला सदृश हबेली मे चाँद उसमानी, हबेलीक फाटक लग दोकान मे हुक्का गुड़गुड़बैत बादशाह खां, लियाकत-बलाकत खोपड़ी मे बैसल हमीद आ घोड़ासाहन टीसन लग रेलवे इन्जीनियरक भेष मे, एलेक्ट्रोनिकक प्रकाण्ड ज्ञाता आ केजीबी सँ प्रशिक्षित जासूस भाटाजी। चमेलीरानीक प्रोजेक्ट, प्लान आओर एक्शन मे कतहु ढील नहि छलै।

बादशाह खां अपन नोकर-नोकरानीक संगे मंत्रणा समाप्त केलनि। फेर एकटा कागजक पन्ना पर छोट-छोट बच्चा जकाँ लिखना लिखलनि—'कल मेरा मामा आयेगा चार बजे।'

ओहि कागत मे एक छटांक हींग राखि पूड़िया बनौलनि। पुड़िया चाँद उसमानी तक पहुँचाबैक अछि से बुझबैत पुड़िया नुरा के हाथ मे देलनि। हींगक अर्थ भेल परम आवश्यक फाइनल एक्शन।

नुरा हींगक पुड़िया ल' क' अहमदुल्ला खांक हबेलीक लोहाक फाटक लग पहुँचलीह। फाटक लग दस सिपाहीक कड़ा पहरा छल। एकटा सिपाही जिज्ञासा स्वरूप नुरा दिस तकलक। नुरा हाथक पुड़िया देखा देलनि।

ओना त' हबेलीक रसद महिना मे एक बेर कोनो आन ठाम सँ अबैत छलै। मुदा, दिन-प्रतिदिनक घटल समान बादशाह खांक दोकान सँ जाइत रहैक। एकरा द' फाटक पर तैनात सभ सिपाही कैँ बुझल रहैक।

हबेलीक अन्दर तेरह बाबरचीक मुखिया छल कादिर खां। ओकर बेटा खटोलिया अपाहिज, पोलियो सँ आक्रान्त आ बौंकची भेल शरीरक छल जे अपन बापक संग ओही हबेली मे रहैत छल। खटौलिया टुकदुम-टुकदुम करैत भरि दिन हबेली मे चक्कर कटैत रहअय। कियो ओकरा दिस कान-बात नहि दैक। चाँद उसमानीक हाथ सँ घटल वस्तुक लिस्ट ल' क' खटोलिया बड़का लोहा फाटक मे बनल छोटका फाटक कैँ पार क' जखन बादशाह खांक दोकान मे पहुँचैत छल, तखन लिस्टक सभ वस्तु देलाक बाद बादशाह खां ओकरा मुँह मे एकटा चॉकलेट राखि देथिन। सब सामान ल' क' खटोलिया जखन चाँद उसमानी लग पहुँचए त'

ओहो एकटा चॉकलेट ओकरा मुँह मे खसा देथिन। अही चॉकलेटक आकर्षण सँ खटोलिया चाँद उसमानी आ बादशाह खांक काज करबाक बाट तकैत रहैत छल। खटोलियाक माध्यम सँ चाँद उसमानी कनेक-मनेक सम्पर्क बादशाह खां सँ रखने छलीह।

नुरा कँे अधिक-काल तक प्रतीक्षा नहि कर' पड़लनि। खटोलिया अपन टेढ़का टांग पर ढ़ेकी कुटैत फाटक दिस आबि रहल छल। फाटक लग नुरा आ नुराक हाथ मे पुड़िया देखि ओ जल्दी-जल्दी चलैत आ हकमैत नुरा लग आयल। पुड़िया हाथ मे लैत बाजल–"चाँद मालकिन का समान हई ना?"

नुरा मूड़ी डोला हँ कहलथिन आ चोटे वापस भ' गेलीह।

खटोलियाक हाथ सँ पुड़िया लैत ओकरा मुँह मे एकटा चॉकलेट खसबैत चाँद उसमानी बाबर्चीखाना दिस बिदा भेलीह। हींगक महक हुनक नाक मे पहुँचल त' एलार्म बाजब शुरू भेल। हुनक देहक स्पदंन तेज भ' गेलनि। ओ एक हाथ मे हींग लैत दोसर हाथे कागत मे लिखल संदेश पढ़लनि। तुरंत सभ बातक अन्दाज हुनका भ' गेलनि। कागत कँे कुट्टी-कुट्टी फाड़ैत ओ कादिर लग पहुँचलीह आ कहलनि–"चाचा, इ हींग ह'। रातका गोस्त मे दै के होइ। औरू कोनो समान घटल होइ त' कह।"

कादिर खां चाँद उसमानीक बड़ खातिर आ अदब करैत छल। पाक शास्त्रक इल्म मे ओ अपनहि माहिर छल। मुदा चाँद उसमानीक इल्मक ओ कायल भ' चुकल छल। चाँद उसमानीक आगमनक बाद ओ बहुतो नव-नव किस्मक व्यंजन बनोनाइ सिखलक। संगहि संग सभ खाना मे तेहन ने स्वाद बढ़ि गेल जे खेनिहार चटकारि-चटकारि क' खाय लागल। नीक बाबर्चीक यैह भेल सभसँ पैघ इनाम। ओ चाँद उसमानी कँे सलाम करैत बाजल–"सब कुछ तो हई। थोड़ा हल्दी और सुखा मिरची का जरूरत हई।"

चाँद उसमानी अपन निजी कक्ष मे पहुँचलीह। ओ अपन सभ इन्तजाम कँे मोनहि मोन दोहरौलनि। प्रायः अगिला कार्यक्रम मे कोनो त्रुटि नहि छल। ओ कागत निकालि कँे लिखलनि–'हींग मिला, अच्छा हई। सुखा मिर्च आ हल्दी एक-एक किलो। इसके साथ पिछला बाँकी सभ सामान भेज त' दहू।'

खटोलिया चॉकलेट खेलक आ मिरचाइ, हरदि संगे आन समान लाब' लेल बिदा भेल।

एमहर हमीद जे दुखनी मौसीक खोपड़ी मे छल, हड़बड़ा क' उठल। पाँचे बजे

साँझ मे ओ दिनका बचल मुर्ग-मोसल्लम मे एक पुड़िया निशाबला बुकनी मिलबैत चिचिया क' बाजल–"मौ...सी...कहाँ होउ?"

दुखनी मौसी बकरी आ मुर्गी कैँ यथास्थान पहुँचा क' हमीद लग आयल। हमीद अपन झोरा सँ एकटा आओर दारूक बोतल निकालि कैँ दुखनीक हाथ मे देलकै आ कहलकै–"ई बोटली सँ थोड़ा-थोड़ा हलका मिला देबहू न त' जाड़ा भाग जाई।"

हमीद फेर मामूजान कैँ शोर पाड़लक। लियाकत आ बलाकत फुरफुरा क' उठल। ओ दुनू पैजामाक नार मे अपन-अपन हिस्साक तीन-तीन हजार रुपैया ठुसलक। फेर नवका स्वेटर आ फरबला टोपी पहिर क' चलबाक लेल तैयार भेल। बोरा मे भरि क' गहना चोराओत, पक्का दू मंजिला मकान बनाओत, निकाह करत आ कम सँ कम एगारह-एगारह गोट धिया-पूता जन्माओत। ओकर कल्पना बड़ भरिगर छलैक।

हमीद लियाकत आ बलाकत संगे सात बजे रातिक समय मे भाटाजीक तानल रेलवे राउटी मे पहुँचल। निश्चय कयल व्यवस्थापक हिसाबे लियाकत आ बलाकत कैँ डबल रोटी आ चाह देल गेलैक। ओ दुनू चाह मे मिलाओल नशाक कारणे बेहोश भ' गेल। मुदा, बेहोशी त' चाही चौबिसो घंटाक लेल। आ, तैँ दुनू कैँ एक-एक इन्जेक्शन भोंकल गेल। फेर ओहि दुनू कैँ टीसन पर खुजबाक लेल तैयार माल गाड़ीक एक डिब्बा मे उझलिया क' देल गेल। निश्चिन्त भ' हमीद आ भाटाजी अगिला तैयारी मे लागि गेलाह।

आधुनिक संसार मे मनुक्ख विज्ञानक सभ क्षेत्र मे उन्नति केलक जाहि मे संचार उद्योग सर्वोपरि अछि। ठाकुर नांगटनाथ सिंहक अभियान मे विश्वनाथ भट्टाचार्य उर्फ भाटाजी कैँ बज्जर काका, सहदेव आ मैना सँ टकराव भेलनि। तकर बादे काली माँक आदेश एवं देश-प्रेम सँ प्रेरित भ' क' भाटाजी अपन सम्पूर्ण मेधाक संग अपन सहयोग चमेलीरानी कैँ समर्पित क' देलनि। चमेलीरानी हुनका आदर सँ दादा कहि क' सम्बोधन करैत छलथिन्ह।

अहमदुल्ला खांक अभियान जखन अपन सही स्वरूप प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील छल त' भाटाजी अपन विचार प्रगट केलनि–"चमेली, तु भी अमार भेये। तुमको हम असल बात बोलेगा। अहमदुल्ला खां का इलाका पाकिस्तानी संचार तंत्र के जाल मे घीरा है। अमेरिकन सेटलिट औरो चीनी जासूस दोनों उसको मदद करने के वास्ते है। हमको बहुत सावधान रहने की जरूरत है।"

फेर भाटाजी अपन मन्तव्य प्रगट केलनि जे हुनक मुख्य संचार मशिनरी निर्मलीक नीहारिका रेडीमेड गार्मेन्ट दोकान मे रहतनि। ओतए हुनक एक सक्षम असिसटेन्ट ओकरा ऑपरेट करत। मात्र एक छोट मसीन जे छोट टेबुल घड़ी सदृश छैक से हुनक संग घोड़ासाहन टीसन मे रहतैक।

भाटाजीक इहो कहब छल जे मैसेज पठेनाइ त' खतरनाक अछिए। मैसेज रिसिभ केनाइ सेहो पाकिस्तानी आ चीनी खुफिया विभाग कैँ एलर्ट क' सकैत अछि।

भाटाजीक संचार व्यवस्था एकदम सुरक्षित बनि क' तैयार भेल। हुनक निर्मली रिसिभिंग तंत्र सँ ई ज्ञात भ' चुकल छल जे पन्द्रह दिन पहिने अहमदुल्ला खांक तहखाना मे दस ट्रकक एक काफिला हथियार पहुँचा गेल अछि। अहमदुल्ला खां वायरलेस द्वारा सभ मुख्य-मुख्य आतंकवादी नेता कैँ एकर सूचना निर्गत क' चुकल छल। आतंकवादी जवाबी संदेश अहमदुल्ला खां कैँ प्राप्त भ' चुकल छलै। सभटा हथियारक डिलेभरीक तारीख अहि अभियानक जीरो आवरक बाद मे छलै। एकर पूरा खबरि सांकेतिक भाषा मे चमेलीरानी कैँ भेटि चुकल छलनि। चमेलीरानी अभियानक आरम्भक निर्देश द' चुकल छलीह आ ताही अनुसारे हमीद लियाकत आ बलाकतक खोपड़ी मे पहुँचल रहथि।

भाटाजी अपन टेबुल घड़ीनुमा यंत्र सँ चमेलीरानी कैँ एखन धरिक सभटा सूचना पठौलनि। फेर हुनका सँ 'आगाँ बढ़ू'क आदेश प्राप्त केलनि।

तुरंते दस युवक आ पाँच युवती अस्त्र-शस्त्र, भोजन पानि आ आन आवश्यक सामग्री सँ लैस हमीदक नेतृत्व मे प्रस्थान केलक। भाटाजी तथा हुनक एक गोट असिसटेन्ट ओतए रहि गेल।

हमीदक टीम सुरक्षित लियाकत आ बलाकतक खोपड़ी मे पहुँच गेल। सभ युवक लियाकत आ बलाकतक खोपड़ि मे तथा नवयुवती दुखनी मौसीक खोपड़ी मे स्थान ग्रहण केलक। दुखनी मौसी निसा मे बुत छल। दारूक बोतल खाली पड़ल छलैक। मुर्गाक एकटा खण्ड ओकरा मुँह मे लटकल छलैक। आगामी चौबीस घंटा ओकरा होश नहि अबैक तैँ दुखनी मौसी कैँ एकटा इन्जेक्शन सेहो पड़ि गेलै।

सुरक्षा लेल दूटा पहरेदार बनि पिस्तौलक संगे तैयार दुनू खोपड़ी मे स्थान पकड़लक। बाँकी सभ अबिलम्ब घनघोर निद्रा मे पसरि गेल।

ठीक चारि बजे बेरिया मे जे पूर्व निर्धारित समय रहै, एकाएक लाउड-स्पीकरक कर्कश, खर्रखर्र मुदा स्पष्ट ध्वनि मे चिचिया उठल–'अहमदुल्ला, तुम आदमखोर

जानवर है। तुम वतन का गद्दार है। तुम हिन्दू और मुसलमान दोनों का दुश्मन है। हिन्दू तो यहाँ तुमको मिलता नहीं इसलिए तुम मुसलमान का ही लहू चूसता है। अहमदुल्ला तुमको खुदा सजा देगा, तुम्हें दोजख मे जाना है।'

जाहि लाउड-स्पीकार सँ ऊपरोक्त आवाज प्रसारित भ' रहल छल से छोट साइजक छल। लाउड-स्पीकरक मुँह चारू कातक दिशा मे बनल रहैक आ ओ हबेलीक लोहाक फाटक बनल विशाल गुम्बजक ऊपरी सिरा पर स्थापित छलै। ओहि फाटक लग सदिखन बीस अस्त्र-शस्त्र सँ लैस पहरूदारक दिन-रातिक पहरा पड़ैत छलै। तखन फेर लाउड-स्पीकर ऊपर मे कोना पहुँचल? जवाब बादशाह खां द' सकैत छथि। मुदा, ओ त' चुपचाप दोकान मे हुक्का गुड़गुड़ा रहल छथि। सभ पहरूदार भौंचका ठार भेल ओहि लाउड-स्पीकर कैँ निहारि रहल छल।

लाउउ-स्पीकर फेर भोंमिया उठल—'इस्लाम अपने वतन का गद्दारी का इजाजत नहीं देता। हिन्दुस्तान हिन्दू और मुसलमान दोनों का है। मुसलमानों का भी यह वतन है। अरे! ओ हरामखोर अहमदुल्ला, तुमने मुसलमान के पीठ पर खंजर भोंका है। खुदा तेरा गर्क करेगा। अल्ला तुम्हें कुत्ते की मौत मारेगा।'

तुगलकाबाद संगे आसपासक सब गाँव तक लाउड-स्पीकरक आवाज पहुँच रहल छल। 'ऐसा त' कभी ने होलै। का माजरा ह'? हाय! अल्ला-ताला, तोरा छोड़ के मुसलमान के के बचिबिहइ। लाउड-स्पीकर त' ठीके बोलइत हई। ई अहमदुल्ला साला का करतूत खोल रहल हई।' धीरे-धीरे लोकक भीड़ जमा होम' लागल। हबेलीक अन्दर महलक पक्का देवाल सँ लाउड-स्पीकरक गर्जना टक्कर मार' लागल। हबेलीक भीतर सभ अमलाक चेहरा आतंक आ भय सँ सर्द भ' गेल। 'ई जरूर कोनो जिन्न का काम हैइ।'

कोनो अप्रत्याशित घटना घटित भ' जाय, कोनो नहि होम' बला बात भ' जायत' त' बुद्धि भ्रमित भ' जाइत छै आ बुद्धिक पितिऔत विवेक भ्रष्ट भ' घास छिल' लगैत छै। ककरो अहि बातक चेतना भेबे ने केलै जे सभसँ पहिले लाउड-स्पीकरक आवाज कैँ बन्द क' दी। सभहक मुर्दा भेल जिज्ञासा अहि बातक लेल बेचैन भ' उठल जे सुनियै त' ई लाउड-स्पीकर की—की बजैत छै।

लाउड-स्पीकर लगातार अपन काज इमानदारी सँ क' रहल छल—'अरे! ओ हरमजादा अहमदुल्ला, सुन और कान खोलकर सुन। तुगलकाबाद और नजदीक के गाँव के लोग तुम्हारे वजह से कंगाल बन गया है। तुमने सभी का जमीन हड़प लिया है। सभी रोटी के लिए मोहताज हो गये हैं। सभी मुसलमान भूखा सोता है।

न कपड़ा, न दवा, सभी तुम्हारे खौफ में दिन काट रहा है। और साले तुम मुसलमान का रहमदार बनता है? अरे! तुमने कभी नवाज नहीं पढ़ा, तुमने कभी खुदा का इबादत नहीं किया। तुम शराब और औरत के बीच रहनेवाला शैतान है। तुम मुसलमान नहीं, हैवान है।'

करीब आध घंटा तक लाउड-स्पीकर अपन जुमला पढ़ैत रहल। फाटक लग लोकक जबरदस्त भीड़ जमा भ' गेल। तखन जा क' अहमदुल्ला खांक मगज मे लाउड-स्पीकरक मसला ढुकलैक। ओ रंजायल साँढ़ जकाँ ढेंसो-ढेंसो कर' लागल। क्रोध सँ अहमदुल्ला खां आगिक चिनगी बनि गेल।

तुरंत गैरेज सँ बिना हुडबला स्पोर्ट कार आयल। अहमदुल्ला खां ओहि पर आरूढ़ भेल। ड्राइवर गाड़ी स्टॅार्ट केलक आ लोहाक फाटक दिस बिदा भेल। अहमदुल्ला खांक कमांडो बन्दूक आ रायफल ल' क' पाछाँ-पाछाँ लपकल। बाँकी स्टाफ पहिने सँ फाटक लग एक कात आतंकित आ अचंभित ठार छल। हरमक बीबी सभ बरामदा मे बुरका पहिरने अहि तरहें ठार छल जेना पूस मासक घनघोर कुहेस मे प्रेतनीक समूह होअय।

मात्र चाँद उसमानी बिना बुरकाक स्थिर, मन्द-मन्द मुस्की दैत सभ किछुक अवलोकन क' रहल छलीह। हुनक ठोर पर अस्पष्ट किंतु बुझबायोग शब्द बहराति छल—वाह रे बादशाह खां! अहाँ त' अहमदुल्लाक पितामहक कब्र खोदि देलियैक।

जखन अहमदुल्ला खां फाटक लग पहुँचल तखनो लाउड-स्पीकर बाजि रहल छल—'रे साला अहमदुल्ला! तुम भेड़िया है। तुमने वतन का इज्जत बेच दिया। तुमने अम्मा को नंगा कर दिया। तुमने इस्लाम मजहब का धज्जियाँ उड़ा दिया। तुम मुसलमान का कफन बेचनेवाला चोर है। बहुत जल्द मुसलमान तुम्हारा टुकड़ा-टुकड़ा करके तुम्हारा गोस्त कुत्ता के आगे डाल देगा। साला, तुम तड़प-तड़पकर मरेगा।'

अहमदुल्ला खांक मोटर कार विशाल लोहाक फाटकक आगाँ ठार भेल। लोकक ठसमठस भीड़। औरत-मर्द, बुढ़-बच्चा, कनहा-नंगड़ा, सभ मुसलमान, नवाजी। सभहक चिआरल आँखि अहमदुल्ला खां मे गरल। मुदा, सभहक कान लाउड-स्पीकरक प्रलापक अर्थ कैँ माथ मे ढुकबैत। अहमदुल्ला खां पागल हाथी जकाँ चिंघारि उठल। सभहक पयरक निचाक धरती काँप' लागल। सम्पूर्ण भीड़क हृदय गति रूकि गेल। अहमदुल्ला खां भभरैत आवाज मे बाजल—"बादशाह खां यहां क्या हो रहा है? किसी की जुर्रत है कि मुझे ललाकारा है? जवाब दो?"

बादशाह खां अपन दोकानक आगाँ ठार छलाह। ओ लोकक भीड़ कैँ चिरैत अहमदुल्ला खां लग पहुँचल आ जोर सँ चिचियाति बजल—"पहले लाउड-स्पीकर की आवाज बन्द करो। कोई इसका तार काटो तो आबाज रुके।"

कियो जा' क' लाउड-स्पीकरक तार काटि देलकैक। आवाज बन्द भ' गेलैक। बादशाह खां फेर हिदायत देलनि—"अरे ओ बहूदों! अब देखो तार कहाँ तक गया है? किसके घर से लाउड-स्पीकर मे आवाज दिया जा रहा था?"

हुकुमक तामिल भेल। तारक अन्तिम कनेक्शनक खोज भेल। तार हब्बीबुल्ला खांक घर मे पैसल छल। तामे भीड़ सँ कियो बाजि उठलै—"लाउड-स्पीकर का आबाज त' अंसारी जुलाहा का बुझाता रहलै हैइ।"

अहमदुल्ला खां दहाड़ि उठल—"हब्बीबुल्ला और अंसारी को पकड़कर अभी तुरंत लाओ। इन दोनों गीदड़ के औलाद को घसीटकर मेरे सामने पेश करो।"

अहमदुल्ला खां बजैत-बजैत हाँफय लागल। समय आ हालातक भयंकरता सँ कुहेस कैँ पसीना छुटए लगलै। हब्बीबुल्ला खां अहमदुल्ला खांक सहोदर भ्राता छल। हबेलीक तहखानाक सुरंग जे कब्रिस्तान मे निकलैत छलै ओहि सुरंगक मुहानाक ओगरबाहीक जिम्मेदारीबला काज हब्बीबुल्ला खां करैत छल। ओना ओकर निजी घर फाटक सँ कनिकबे हटल इमामबाड़ी सँ पहिने छल।

अंसारी जुलाहा नब्बे वर्षक बूढ़ आ रोगी छल। ओ स्वतंत्रता सेनानी सेहो छल। स्वतंत्रता संग्राम मे ओ पैघ हिस्सा नेने छल। जखन हिन्दुस्तानक करेज दू फाँक चिरि क' पाकिस्तान बनल त' ओ बफारि काटि क' कान' लागल छल। पाकिस्तान मे बसबाक कियो बिचार देलकैक त' ओ गला फाड़ि क' बाजल छल—"हिन्दुस्तान मेरा वतन है, मेरी अम्मी है। मैं तो अपनी अम्मी की गोद मे जिऊँगा, मरूँगा। मेरा कब्र भी भारत की मिट्टी मे ही बनेगी।"

हब्बीबुल्ला कैँ हाथ-पयर बान्हि क' आनल गेल। अंसारी कैँ खाट पर लादि क' अहमदुल्ला खांक मोटर गाड़ीक आगाँ राखल गेल।

—"शेर खां, मेरा बन्दूक लाओ।"

शेर खां नामक सिपाही स्वीडन निर्मित ऊपर-नीचा बैरलबला बन्दूक अहमदुल्ला खांक हाथ मे देलकै। दुनू बैरल मे बुलेट पहिने सँ भरल छलै। पहिने फायर मे हब्बीबुल्ला खांक माथ चिथड़ा भ' गेलै। दोसर फायर सँ अंसारीक करेज फाटि क' बाहर आबि गेलै।

अहमदुल्ला खांक मोटर वापस हबेली गेल। फाटक बन्द भ' गेल। रहि गेलै

मर्माहत लोकक भीड़। सभकाज सम्पन्न होइत-होइत रातुक सात बाजि गेल छलैक। चारू कात अन्हार पसरि गेल छलै।

कहल जाइत अछि जे मुसलमानक क्रोध संठीक आगि जकाँ तुरंत भभकि उठैत छैक। गामक दू व्यक्तिक निर्मम हत्या। खास क' अंसारी सन महानतम मुसलमान जकर आदर प्रत्येक मुसलमान जी-जान सँ करैत छलैक। मुदा, अहमदुल्ला खांक अनवरत अनेक वर्षक आतंक आ आर्थिक विपन्नता मुसलमान समुदायक विवशता बनि चुकल छलै। अहमदुल्ला खांक विरोध करबाक इच्छा-शक्ति त' बहुत पहिने समाप्त भ' चुकल छलै। दुनू मुर्दा कैँ कफन ओढ़ा मुर्दा भेल भीड़ कब्रिस्तानक रस्ता पकड़लक।

अहि झंझट मध्य बादशाह खांक तीन नोकर दोकानक पाँछा बनल गुप्त रास्ता सँ विस्फोटक सामग्री उघि क' हब्बीबुल्ला खां द्वारा खाली क' देल स्थान मे राखि आयल छल। जाहि स्थान मे हब्बीबुल्ला राति-दिन पहरा दैत छल ओ गुमतीनुमा एकटा घर छलैक। ओकरे सटल एकटा मजार ओ मजार नहि भ' क' अहमदुल्ला खांक तहखानाक सुरंगक मुहाना रहैक। अही रस्ते हथियार आ ड्रग्स आदि सामान तहखाना मे पहुँचाओल जाइत छलै। बादशाह खां कैँ हबेलीक अतिरिक्त तुगलकाबादक रत्ती-रत्तीक ज्ञान हासिल भ' चुकल छलनि। यैह कारण छल जे हब्बीबुल्ला खां कैँ रस्ता सँ हटायब अनिवार्य भ' गेल रहैक।

अहमदुल्ला खां कुरूप त' छले। जखन ओकर घनगर भौं मिल जाइत छलै त' ओ औरो अधिक क्रूर देखाइ पड़ैत छल। दू टा हत्या क' क' ओ अपना कक्ष मे आयल छल आ अर्द्ध-मूर्छित अवस्था मे पड़ल छल। ककर हिम्मत छलै जे ओकरा आगाँ जाइत? मुदा, चाँद उसमानीक लेल धन्नसन। ओ शीशाक जार मे भरि क' शराब ल' अहमदुल्ला खांक लग पहुँचलीह आ कहलनि—"हजूर, गम ना करें। आपने जो किया ठीक किया। वे दोनों मरदूत उसी के काबिल थे। साहब के शान मे गुस्ताखी! कहिये तो भला।"

चाँद उसमानीक चिक्कन-चिक्कन गप आओर जारक जार शराब अहमदुल्ला खां कैँ राहत देलकै। ओ थोड़ेक संयत भेल। मुदा, ओकर सांसक दुर्गन्ध सम्पूर्ण परिसर मे व्याप्त भ' गेल छल।

चाँद उसमानी कैँ चमेलीरानीक अन्तिम संदेश सदिखन हुनका मोन मे घुमैत छलनि। अहि अभियानक सफलताक सम्पूर्ण आश हुनके पर टिकल छलै आ अभियानक सभसँ मारूक क्षण आबि गेल रहैक।

चाँद उसमानी अपन कक्ष मे पहुँचि क' शृंगार केलनि। नवीन वस्त्र धारण क' अहमदुल्ला खांक लग पहुँचैत कहलनि–"एक जरूरी बात कहै के ह'।"

अहमदुल्ला खां जिज्ञासा स्वरूप मूड़ी घुमा क' चाँद उसमानी दिस तकलक। अभिसार कएल चाँद उसमानीक सौन्दर्य प्रबल आकर्षणक विषय छल। किछु घंटा पूर्व घटल घटना कैँ ओ अनायास बिसरि गेल। ओ हर्षित भ' उठल। ओकर वासनाक आगि धू-धू क' धूधूआय लागल। ओ टकटकी लगलगा क' चाँद उसमानी कैँ देख' लागल।

–"कल जुमे रात हई। कल रात भर हम तोरा आगोश मे रहब से पक्का।"

अहमदुल्ला खां कैँ एकाएक विश्वास नहि भेलै। ओकर चिर-प्रतिक्षित अरमान जे एक दिन चाँद उसमानी कैँ प्राप्त करब, मात्र एक दिनक फासला पर रहि गेल छैक। ओकर राक्षसी प्रवृत्ति मे भयंकर उछाल आबि गेलै आ ओकर भौं सटल दुनू आँखि चाँद उसमानीक आँखि मे केन्द्रित भ' गेलै।

तखने चाँद उसमानी फेर कहलनि–"लेकिन एक शर्त ह'। आज रात तूँ रजिया कैँ मौका दहू।"

अहमदुल्ला खां राक्षस त' रजिया राक्षसनी। ओहुना अहमदुल्ला खां चाँद उसमानी कैँ प्राप्त करबा लेल कोनो शर्त कबुलत–"चाँद का हुकुम सर-आँखों पर।"

चाँद उसमानी सभसँ पहिले बाबर्चीखाना पहुँचली आ कादिर कैँ अहमदुल्ला खांक खाना तैयार करबाक हुकुम देलनि। नजरि बचा क' ओ अहमदुल्ला खांक पारस मे, प्रत्येक गोस्त बला प्लेट मे, नशाक चूर्ण छींटि देलनि।

जामे कादिर खां आ ओकर असिसटेन्ट अहमदुल्ला खांक कक्ष मे खाना पहुँचबैत, तामे चाँद उसमानी मुख्य बाबर्चीखाना मे पहुँच गेलीह। प्रतिदिन सभ स्टाफक भोजन लेल एकटा पूरा गायक गोस्त रान्हल जाइत छल। चाँद उसमानी बहादुर खां द्वारा पठाओल करीब दू किलो नशाक चूर्ण टभकैत गोस्त मे छीटि देलनि।

आब चाँद उसमानी ओहि कोठली मे ऐलीह जतए अहमदुल्ला खांक शराबक बोतल सजाओल राखल छलै। काम बेग मे प्रचण्डता आनै मे संसार भरिक दवाइ कम्पनी लागल छल मुदा सफलता भेटलै फाइजर नामक कम्पनी कैँ जखन ओ 'भियागरा' नामक दबाइ बनौलक। चाँद उसमानी ओहि भियागरा नामक पचास एमजी बला दूटा गोलीक चूर्ण बना क' एकटा चाँदीबला जार मे रखलनि आ ओकरा दू बोतल जीन नामक शराब सँ भरलनि।

अहमदुल्ला खां भोजन संगे पानिक स्थान पर शराबेटा पिबैत छल। चाँद उसमानी ओहि चाँदीबला जार कैँ अहमदुल्ला खांक भोजनक स्थान मे राखि देलनि। अहमदुल्ला खां आयल आ भोजन करब शुरू केलक। भोजन करैत-करैत ओ भियागरा मिलल भरि जार शराब पीबि गेल।

चाँद उसमानी बाहर एलीह आ कनिकबे कालक बाद पुनः वापस आबि अहमदुल्ला खां सँ कहलनि—"कोइ घबराई के बात ना ह'। बादशाह खां, आपका वफादार, का घर मे कोनो दुश्मन आग फूंक देलकै हें। लेकिन मालिक आप रात खराब ना करहू। हम हैं नु, सभी किछु सम्हाल लेब।"

भियागराक असर कहू वा जारक जार शराबक। ओहुना अहमदुल्ला खां छिन्न मस्तिष्कक भ' चुकल छल। ओ रजिया संगे कोठली मे बन्द भ' गेल।

फाटक लग बादशाह खांक दोकान मे आगिक लपट उठि रहल छलै। चाँद उसमानी हबेलीक सभ नोकर अमला कैँ हुकुम देलखिन्ह—"फाटक खोल दो। सब कोई आग बुझाने मे लग जाओ। बादशाह खां अपना खैरखाह है। उनकी मदद करो।"

हबेलीक फाटक खुजि गेल। हबेलीक सब कियो आगि मिझबै मे जान-प्राण सँ लागि गेल। चाँद उसमानी एकटा काज आओर केलनि। हरमक सभ बीबी कैँ भीतर क' कोठलीक सांकल कैँ बाहर सँ बन्द क' देलनि।

हमीदक टोली भरि दिन लियाकत आ बलाकतक खोपड़ी मे नुकायल प्रतीक्षारत रहल। दुखनी एखनहुँ तक बेहोशे छल। कनिए काल पहिले लाउड-स्पीकरक सुमधुर स्वर झोंपड़ी तक पहुँचल छलैक। मुदा, हमीदक टोली अन्दरे रहल। ओ उचित अवसरक ताक मे छल।

बादशाह खांक दोकानक आगिक चिनगारी बाहर निकलै आ चारू कात हल्ला भेलै—"आग, आग।" ठीक तखने हमीदक टोलीक सभ सदस्य गरीब मुसलमान आ मुसलमानिनिक ड्रेस पहिर एक-एक क' बाहर निकलल आ सहटैत-सहटैत अहमदुल्ला खांक हबेलीक फाटक लग पहुँचि गेल। हमीद बादशाह खांक खोज मे छल। बादशाह भेटलखिन्ह आ कहलनि—नुरा कैँ अपन जत्था मे सामिल क' लिअ।

एम्हर आगि प्रचण्ड भ' चुकल छलै। आगि पसरि क' लगक चारि-पाँच खरक घर कैँ अपना चपेट मे ल' चुकल छल। हबेलीक भितरका पोखरि एक मात्र पानिक सहारा छलै। पोखरि सँ बाल्टिए-बाल्टिए पानि आबि रहल छलै। हबेलीक सभटा अमला तथा गामक किछु लोक आगि मिझेबा मे लागल छल।

अगिलग्गीक स्थान सँ पोखरि तक लोकक समूह नाचि रहल छल। कान फाटैबला हल्ला भ' रहल छल। ओहि स्थान मे पूर्ण अफरा-तफरी मचल छलैक।

ओहि अवसर मे आगिक धुआँ, अन्हरिया एवं कुहेशक लाभ उठबैत हमीद नुरा संगे अपन सम्पूर्ण टोली के ल' महलक बरामदा लग पहुँच गेल। हमीद आ बाँकी सभ कियो बुरका पहिरने छल।

महलक बरामदाक ऊपर सीढ़ी लग चाँद उसमानी एकसरि ठार छलीह। ओ बजलीह–''बीबी लोगन मेरे पीछे-पीछे आओ।''

हबेलीक एक कात हरमक दुबगली कोठलीक कतार छलैक। ओहि मे सँ एक कोठली जे पहिने सँ खाली छलै ओ अन्हार छलै, चाँद उसमानी हमीदक समूचा टोली कँ भीतर क' बाहर सँ बन्द क' देलखिन्ह आ ताला लगा चाभी डाँर मे खोसि लेलनि। चाँद उसमानी फेर पूर्ववत बरामदा मे आबि क' ठार भ' गेलीह।

मुस्किल सँ आध घंटाक समय बितलैक कि चाँद उसमानी कँ कादिर खां आ पाछाँ सँ नंगराइत खटोलिया अबैत देख' मे एलनि। लग आबि कादिर खां रिपोर्ट प्रेषित केलक जे आगि सम्मत भ' गेल अछि। सात-आठ गोट घर जरि क' राख भ' गेल।

उत्तर मे चाँद उसमानी कादिर कँ हुकुम देलखिन–"खाना परोसना शुरू करो। सभसे पहले बीबीका खाना लाओ। फिर फाटक के पहरूदार को खाना भेजो। तुम सभ लोग खाना खाओ। जल्दी काम निपटाओ। हाकीम का मिजाज गर्म है।"

जतबा काल बीबी सभ कँ खाना परसल गेल, चाँद उसमानी पूर्ण सचेष्ट रहथि जे कोनो बाबर्चीखानाक नोकर ओहि कोठली दिस ने जाए जत' हमीदक टोली निःशब्द भेल बन्द छल।

आगामी एक घंटाक भीतरे खाना-पीना समाप्त भ' गेल। सभ सुतबा लेल अपन-अपन स्थान पकड़लक। महलक बाहर के लाइट जरा देल गेल। बारामदाक सभटा रोशनी गुल क' देल गेल।

चाँद उसमानी आधा घंटा आओर समय बित' देलनि। तकरा बाद ओ ओहि कोठलीक ताला खोललनि जतए हमीदक पूरा टोली बन्द छल। सभ कियो बुरका एवं अन्य फालतू कपड़ा कँ त्यागि विन्डसीट सँ झाँपल देह आ माथ, हाथ मे पिस्तौल, अन्य समान पीठ पर लदने तैयार भ' गेलाह। आदेश छलै जे कोनो मनुक्ख कँ देखी त' सोझे सूट क' दी। ओहि पन्द्रह युवक आ युवती कँ पन्द्रह सय दुश्मन कँ सफाया करैक क्षमता छलै। नशाक चूर्ण पूर्णरूपेण प्रयोग भेल छल।

तथापि अभियानक आखिरी मोकाम पर कोनो अनहोनी बातक लेल सभ तैयार छल। ओना सम्पूर्ण हबेली निःस्तब्ध छलैक। मात्र जेनेरेटरक घुटुर-घुटुर ध्वनि आबि रहल छलै।

चाँद उसमानी हमीद आ नुराक संगे अहमदुल्ला खांक केलि कक्ष मे प्रवेश केलनि। गलैंचा पर अहमदुल्ला खां आ रजिया नग्न पट भ' पड़ल छल। प्रणय दृश्य रसगर होइत छै। अति भेला पर ज्ञानी ओकरा अश्लीलक संज्ञा दैत छथि। मुदा, ओ वीभत्स त' कदापि ने भ' सकैत अछि? वीभत्स त' श्मशानक दृश्य कैँ कहल जाइत छैक। लेकिन अहमदुल्ला खां आ रजियाक प्रणय दृश्यक पटाक्षेप निश्चय वीभत्स दृश्य केने छल।

अहमदुल्ला खांक केलि कक्षबला कोठली सँ सटल वायरलेस आ कम्प्यूटरबला कोठली छल। चाँद उसमानीक जानकारीक मोताबिक ओही कम्प्यूटरबला कोठली सँ तहखाना जेबा लेल रस्ता छैक। यद्यपि चाँद उसमानी अहमदुल्ला खांक नित्य जीवनक अत्यंत नजदीक पहुँचि गेल रहथि, मुदा हुनक जानकारी अही सँ आगाँ नहि बढ़ि सकल छल। हँ, हुनका एतबा बातक ज्ञान भ' चुकल छलनि जे तहखानाक कुंजी अहमदुल्ला खांक डांर मे डोराडोरि जकाँ लपेटल रेशमक जलखरी मे सुरक्षित छल। ओकरा ओ अपना सँ कखनहुँ अलग नहि करैत छल।

सत्य मे अही ठाम आबि क' अभियानक माथ अन्हार मे ठेकै छलैक। अहि सँ आशा मात्र बुद्धियेटाक भरोस छलै आ अही दुआरे नुरा कैँ दल मे सामिल कयल गेल छलै।

नुराक असल नाम कंचनप्रभा छलै। ओकर माय-बाप बहुत पहिले स्वर्गवासी भ' चुकल छलथिन। कंचनप्रभाक सम्बन्धी मे मात्र ओकरा सँ दू वर्षक पैघ एकटा भाय छलै जकर नाम गौतम छलै। भुखन सिंहक छत्र-छाया मे अनेकों टुअर धिया-पूताक पालन-पोषण होइत छल। ओही मे कंचनप्रभा आ गौतम सेहो छल। भुखन सिंह गौतम कैँ मोकामा स्थित बाटा जूता फैक्टरीक बगल मे स्थापित एकटा स्कूल मे राखि देने छलखिन्ह। कंचनप्रभा कैँ भागलपुर मे एंग्लो-इन्डियन संस्था द्वारा संचालित मदर मेरी नामक स्कूल मे दाखिला भेल छलै। ओ दुनू अपन-अपन हॉस्टल मे रहैत छल आ छुट्टी मे भुखन सिंहक कैम्प मे रहि क' खेलाइत-धुपाइत छल। एकरा दुनू कैँ भुखन सिंहक प्रचूर सिनेह भेटैत रहैक। आ कोनो बातक अभाव नहि रहैक।

कंचनप्रभा जाहि स्कूल मे पढ़ैत छलीह ओतए कम्प्यूटरक वृहत् पढ़ाइ आ

ट्रेनिंगक व्यवस्था छलै। कम्प्यूटर मे कंचनप्रभा बड़ निपुणता प्राप्त केने छलीह। क्वीज कम्पीटेशन मे त' ओ प्रान्त कैँ के कहए, समग्र भारत मे प्रथम स्थान प्राप्त केने रहथि। जखन चमेलीरानी बहुतो कैम्प खोलि हजारो युवक-युवती कैँ आधुनिक युगक मांगक हिसाबे निःशुल्क प्रशिक्षित करब आरम्भ केलनि त' भुखन सिंह ओहि प्रशिक्षणक उपयोगिताक अनुमान करैत, आग्रह क' क' ओहि कैम्प मे गौतम आ कंचनप्रभा कैँ सेहो भरती करबा देने छलथिन।

चमेलीरानी कैँ कंचनप्रभाक अद्‌भुत प्रतिभाक खबरि कैम्पक रिपोर्ट सँ भेटैत छलनि। अहमदुल्ला खांक अभियान मे कंचनप्रभा कैँ सामिल करब अनिवार्य बनि गेल छलै। कंचनप्रभाक संगे गौतम सेहो ओहि अभियान मे सामिल हेबाक इच्छा केलक। अन्ततः गौतम बनलाह बादशाह खांक नोकर अबदुल्ला आ कंचनप्रभा बनली नुरा।

हमीद कैँ अहमदुल्ला खांक केलि कक्ष मे छोड़ि चाँद उसमानी कंचनप्रभा कैँ संग ल' वायरलेस आ कम्प्यूटरबला घर मे एलीह आ कंचनप्रभा सँ कहलनि–"आब अहाँक प्रतिभाक उजागर करैक समय आबि गेल अछि। वायरलेस आ कम्प्यूटर कैँ निष्क्रिय क' अहाँ तहखाना मे जेबाक रस्ताक खोज मे लागि जाउ। तहखाना मे जेबाक रस्ता अही ठाम सँ छैक से धरि पक्का। तामे हम हमीद संगे थोड़ेक काजक अन्त क' क' आबि रहल छी।"

चाँद उसमानी घुमि क' हमीद लग अयलीह। हमीदक हाथ मे माल-जाल कैँ सुइया दैबला सिरिन्ज छल जाहि मे बेहोस कर' बला दबाइ भरल छलै। ओ बेरा-बेरी अहमदुल्ला खां आ रजिया कैँ सुइ भोंकलनि आ घुमि कैँ चाँद उसमानी कैँ देख' लगला।

आब प्रश्न उठल अहमदुल्ला खांक डांर मे लपटल जलखरी, जाहि मे तहखानाक कुंजी छलै। जलखरीक हूक आगाँ छलैक। चाँद उसमानी आ हमीद पूरा ताकत लगा कैँ अहमदुल्ला खां कैँ चित केलनि।

अहमदुल्ला खां के चित होइते अजीब दृश्य उपस्थित भ' गेल। भियागराक प्रतापे उदण्ड भेल काम-यंत्र उदीप्त अवस्था मे छल। ओकर विकरालता एवं उदण्डता कैँ देखि हमीद चिचिया उठल–"अरौ बाप रौ बाप, देखिऔ अइ, अहि सारक...। कहियो ने कियो देखने हैत, से देखै छी। भौजी जे ने देखाबथि।"

परिस्थिति अपन विषम अवस्था मे छल। जीवन-मृत्युक खेल अपन उग्र रूप धारण केने छल। तइयो चाँद उसमानी अपना कैँ नहि रोकि पौलनि। हुनक हँसी

हुनक समग्र चेहरा मे पसरि गेल। बहुतो प्रयत्न सँ अपना कैँ सम्हारैत चाँद उसमानी बजलीह–"भौजी कैँ बाद मे शोर पाड़बनि। एखन एकरा डांर सँ कहुना कुंजी निकालू।"

हमीद अहमदुल्ला खांक उभयनिष्ट स्थान कैँ देखि रहल छल। चाँद उसमानीक कथन सुनि सचेष्ट भेल। फेर भौजी माने चमेलीरानी पर सँ ध्यान हटा अहमदुल्ला खांक डांर सँ कुंजी निकाल' मे सफल भेल।

चाँद उसमानी ओहीठाम पड़ल एकटा चद्दरि सँ कहुना अहमदुल्ला खां आ रजिया कैँ झाँपि देलनि। फेर हमीद संगे कम्प्यूटरबला घर मे एलीह।

नुरा ताबे तक कम्प्यूटर आ वायरलेसक बिजली एवं बैटरी दुनूक कनेक्शन काटि ओकरा निष्क्रिय क' चुकल छलीह। ओ चाभी लगबैक स्थान कैँ सेहो ताकि लेने छलीह। चाभी लगाओल गेल। खट् अबाज भेलै। मुदा, तकर बाद?

नुरा बजली–"दीदी, पहिने एक क्षण हमरा देख' दिअ।"

चाँद उसमानी आ हमीद कनेक पाछाँ हटि नुरा कैँ सामने केलनि। नुरा स्थिर नजरि सँ चाभीबला स्थानक आ ओकर नीचा ऊपर कैँ देखब शुरू केलनि। चमेलीरानीक प्रसंशा कर' पड़त जे ओ नुरा कैँ अहि अभियान मे सम्मलित केलनि।

मुश्किल सँ एक मिनटक समय लगलनि। नुरा कैँ सफलता भेटि गेलनि। चाभीबला स्थान एकटा रैक जकाँ छलै जकरा बीच मे एकटा मूठ रहैक। नुरा मूठ कैँ दायाँ, फेर बायाँ आओर फेर दायाँ अँइठलनि। पूरा रैक देबाल सँ अलग भ' गेल। नीचा जाएबला सीढ़ी साफ देख' मे आब' लगलै।

सीढ़ीक नीचा घुप अन्हार छलै। मुदा, हमीद कैँ बैटरीबला टार्च पर नजरि गेलैक। पाँच गोट बड़का टार्च एक पतियानी मे राखल छल। शायद तहखाना मे विभिन्न किस्मक विस्फोटक कारणें आन किस्मक इजोत नीचा ल' गेनाइ खतरनाक छलै। मात्र बैटरीबला टार्च नीचा ल' जा सकैत छी।

तीनू व्यक्ति तीन टॉर्च ल' सीढ़ी उतरि नीचा तहखाना मे पहुँचला। पक्का फर्स आ मजबूत देवाल। एक गलियारी जकाँ जाहि मे बायाँ आ दायाँ जेबाक रस्ता। दायाँ कात कनिए आगाँ बढ़ला पर ई निश्चय भेल जे रस्ता सुरंग बनि कब्रिस्तान मे निकलैबला छै।

ओ तीनू गलियारीक बायाँ कात बिदा भेलाह। थोड़बेक आगाँ कोठली सभ भेट' लगलनि। कोठली दायाँ आ बायाँ दुनू कात। टॉर्चक रोशनी अपर्याप्त छलैक। ओ तीनू अत्यधिक सावधान आ सतर्क छलाह।

दाहिना कात तीन-चारि कोठली मे विभिन्न मेकक हथियारक अम्बार। ओकर बादबला कोठली कैँ खोललनि त' बारूद आ आन विस्फोटक विशाल भंडार। ओकरा तुरंत बन्द क' ओ तीनू बायाँ घुमला। बायाँ कात एकटा छोट कोठली जाहि मे विभिन्न तरहक ड्रग्स अलग-अलग बर्तन मे राखल। प्रायः भारतक मुद्रा मे करोड़ों टाकाक आ अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा में अरबो डालरक।

कहल जाइत अछि जे अन्डरवर्ल्ड अर्थक रीढ़ थिक ड्रग्स। ड्रग्सक बेहिसाब आमदनी सँ अन्डरवर्ल्डक सभटा कारोबार चलैत छै।

ओ तीनू जकर खोज मे छलाह से अन्त मे भेटि गेलनि, अहमदुल्ला खांक खजाना। ओहि मे सबसँ पैघ कोठली मे चारू कात लोहाक अलमारी आ मूठबला सेफ। बीच मे बोराक बोरा कैश। विदेशी मुद्रा खास क' डालर आ यूरोक अलग-अलग बोरा। अलमारी मे सोनाक छड़क ढेरी कइएक क्यिून्टल, सेफ मे हीरा, मोती, पन्ना, पोखराज संगे अन्य जवाहरात भरल। सबटा सम्पतिक आकलन करब त' कठिन, मुदा निश्चयपूर्वक कहि सकै छी जे कइएक अरबक।

तीनू तहखाना आ खास क' खजाना क' मुआयना क' क' एक ठाम जमा भ' क' अपना मे मंत्रणा केलनि। तदनुसार चाँद उसमानी तहखानाक सीढ़ी चढ़ि ऊपर अयलीह आ बरामदा मे पोजीशन नेने अपन सभ साथी कैँ जमा केलनि। पन्द्रहो युवक-युवती कैँ भीतर आनि अहमदुल्लाक केलि कक्ष कैँ भीतर सँ बन्द केलनि। सभहक हाथ मे छोट-छोट टॉर्च छलैक। तइयो कम्प्यूटर घर मे बचलाहा दुनू बड़का टॉर्च लैत वापस तहखानाक गलियारी मे पहुँचैत गेलीह।

एमहर हमीद आ नुरा सुरंगक मुहाना पर पहुँचि एकटा भारी लकड़ीक तख्ताक किल्ली खोलि ओकरा ऊपर ठेलैक प्रयास कर' लगलाह। लकड़ीक तख्ता भारी छलैक। मजार लग उपस्थित बादशाह खां आ हुनक तीन अनुचर सहयोग देलनि तखन सुरंगक रस्ता साफ भेल।

बादशाह खां पहिने सँ सभ वस्तु यथा तहखाना कैँ तहस-नहस कर' बला पर्याप्त विस्फोटक, खाली बोरा, तीन गोट बिन बड़दक टायर गाड़ी, त्रिपाल, छोट-पैघ रस्सा आदि तैयार रखने छलाह।

एक घंटाक समय लागल। अहमदुल्लाक सम्पूर्ण खजाना, कैश, सोना आ जवाहिरात करीबन साठि बोरा टायर गाड़ी पर त्रिपाल सँ नीचा ऊपर झाँपि रस्सा सँ बान्हि तैयार क' लेल गेल। तकर बाद सम्पूर्ण तहखाना मे विस्फोटक छड़ जगह-जगह पर राखल गेल जकरा एकटा पातर तार सँ जोड़ि आ अन्तिम सिरा

टाइमर सँ संयुक्त क' देल गेल। नुरा सभ किछु कैँ देखि आ आश्वस्त भ' विस्फोटक समय टाइमर मे चारि बजेक द' निश्चिन्त भेलीह। चारि बजे तहखाना मे विस्फोट होयत। ई समय सिन्धव भैरवीक अलापक समय होइत छै।

फेर गिनती मिलान भेल। हमीद संगे हुनक टोलीक पन्द्रह सदस्य, बादशाह खां संगे हुनकर चारि गोट अनुचर तथा चाँद उसमानी, कुल बाइस गोट चमेलीरानीक फौज।

राति करीब बारह बजे, सुन्न आ सन्न-सन्न करैत बसात, मनुक्ख कैँ छोड़ू, चिड़ै-चुनमुनीओक अत्ता-पत्ता नहि। मात्र कुहेशक घोघट चारू कात।

तीनू टायरगाड़ी कैँ ठेलैत आ घिंचैत तीन बजे सभ कियो भाटाजीक राउटी लग पहुँचलाह। घोड़ासाहन टिशन लग पहिने सँ एकटा डिलक्स बस मोस्तैद छल।

भाटाजी डबल रोटी आ चाहक पर्याप्त इन्तजाम क' क' रखने छलाह। खा-पी क' आ आगि तापि क' सभ कियो टन-टन भेलाह। बसक सीटक नीचा सबटा बोरा कैँ सैंतल गेल। भाटाजीक राउटी बसक छत पर लादल गेल। बस मे ड्राइभर आ क्लिनरक अतिरिक्त भाटाजी आ हुनक एकटा सेवक मुसाफिर कैँ लादि बढ़ि गेल।

बस मुस्किल सँ दस किलोमीटर गेल हैत की तुगलकाबाद गाम दिस सँ हरियर रोशनी छिटकलैक। फेर एहन धमाका भेलै जेना एटम-बम खसल होइक। धमाका कान फाड़ैबला छलै। तुगलकाबाद नजदीक रहै बलाकैँ धमाकाक बाद की भेल हेतनि से की कहू। कोनो सही-सही अनुमान करब कठिन बुझि पड़ैत अछि।

रस्ता मे डिलक्स बस एक ठाम डिजील, मोबिल आ पानि लेल रूकल। ओतए भाटाजी कलकत्ता सँ प्रकाशित स्टेट्समैन अखबार किनलनि आ चश्मा निकालि पढ़ब शुरू केलनि।

दिनहि मे डिलक्स बस सुरक्षित चमेलीरानीक अड्डाक आगाँ पहुँचि क' चीं-चीं करैत ब्रेक मारलक।

बादशाह खां, चाँद उसमानी आ हमीदक देख-रेख मे बस सँ सब समान उतारल गेल। अर्जुन सभटा खजाना कैँ स्पेशल नवनिर्मित रूम मे रखबौलनि। भाटाजी एक कप चाह लेल चारू कात औनाए लगलाह।

सभ कियो सभ किछु सँ निश्चिन्त भेलाह। चमेलीरानी, चाँद उसमानी बनल बेबी सुकोरानी आ हमीदक भेष मे नकुल एक ठाम बैसि चाहक चुस्की लैत गपसप्प करब आरम्भ केलनि।

थोड़ेक हँसीक फुहारा छोड़इत बेबी सुकोरानी नकुल दिस तकैत बजलीह–"नकुल बाबू, रानी साहिबा कैँ अहमदुल्लाबला ओ गप्प कहि दिऔन?"

नकुल आ चमेलीरानीक मध्य भाउज देऔरबला प्रगाढ़ सम्बन्ध छलनि। नकुल जखन चमेलीरानी कैँ भौजी-भौजी कहि सम्बोधन करैक त' चमेलीरानी कैँ अपार हर्ष होनि। चमेलीरानी कैँ भाउजक अतिरिक्त नकुलक प्रति मातृत्व स्नेह सेहो प्रचुर छलनि। ओ पुछलनि–"की बात छै, देओर जी?"

–"भौजी अइ ओ भौजी! अहमदुल्ला सारक..., हीं हीं..., बाप रौ बाप!"

नकुल लाज सँ कठौत होइत उठि क' पड़ा गेलाह। बाँकी सभटा गप्प बेबी सुकोरानी कहलखिन। ओ करीब चारि मास तक अहि अभियान मे डुबल रहलीह। हुनका प्रत्येक दिन, प्रत्येक क्षण मृत्यु सँ साक्षात्कार होइत रहलनि। ओ सभटा रिपोर्ट चमेलीरानी कैँ देलनि आ अभियानक सफलता पर पूर्ण संतोष प्रगट केलनि।

मुदा रिपोर्ट देब' मे एक विशेषता अवश्ये छल जकरा चमेलीरानी कैँ विशेष अर्थ लगलनि। अभियानक अन्तिम किछु घंटा मे बेबी सुकोरानी कैँ नकुल संगे काज करबाक अवसर भेटलनि। मुदा ओहि कालक रिपोर्ट बेबी सुकोरानी बड़ी काले वृहत् रूपे दैत रहली जाहि मे नकुलक प्रति हुनक स्नेह आ प्रेम भाव स्पष्ट छिलकि रहल छल।

चमेलीरानी मनहिमन हिसाब लगौलनि जे बेबी सुकोरानी बीस वर्षक आ नकुल पच्चीस-छब्बीस वर्षक। आब नकुल कहिया बिआह करताह? सभ भाइ मे वैहटा त' कुमार छथि।

❖

चारि

टेलीफोनक घंटीक घनन' घनन' आबाज सुनि सदिकाल सतर्क रह' बाली चमेलीरानीक नींद टुटि गेलनि। रजाइ सँ हाथ निकालि ओ चोंगा कँ कान मे सटौलनि। दोसर दिस सँ सहदेवक आबाज आयल—"ददूक ड्राइभर ददूक मोटर पर एलनि अछि। बज्जर ककाक पत्र हुनक हाथ मे छन्हि। ओ पत्र अहींटा कँ देताह। गप्प परम आवश्यक बुझना जाइत छैक, तँ टेलीफोन केलहुँ।"

सहदेवक स्वर स्थिर मुदा सख्त छल। निश्चय कोनो अनहोनीबला बात भेलै हें? चमेलीरानी उत्तर देलनि—"हम दुनू व्यक्ति तुरंत आबि रहल छी। तामे अहाँ ददूक मोटर-गाड़ी कँ भीतर करा दिऔक। रस्ता चलैत मुसाफिर कँ ओहि वाहन पर आँखि नहि पड़ैक।"

माघक मास। भोरुका चारि पाँच बजेक समय। चमेलीरानी अपन नवका अड्डा पर छलीह। चमेलीरानीक वर्तमान अड्डा मोकमा पुल सँ लगभग तीस किलोमीटर पश्चिम गंगा नदीक कछेर मे छल।

चमेलीरानी कोनो पावनि तिहार वा आन किस्मक आमोद-प्रमोद नहि करैत छलीह। हुनक जीवन शैली मे एतेक फुर्सत कत' जे कनिकबो समय निकालि पबितथि। तकर बादो मनुक्ख कँ थोड़ेक देह धर्मक निर्वाह कर' पड़ैत छैक। किछु मांग तेहन ने होइत छै जकर पूर्ति आवश्यक। भोजन शरीर कँ उर्जा देबाक लेल आ सहवास माथक ताप मेटाबक लेल परम जरूरी होइत छै। भोजन त' सब आयुक मनुक्ख कँ चाही। मुदा देहक अइंठी कँ प्रायः जवानी मे मैथुन क्रिया द्वारा आ बुढ़ारी मे भजन कीर्तन क' क' पूरा कयल जा सकैत छै।

अहमदुल्ला खांक अभियान तकर बाद बेबी सुकोरानी आ नकुलक विवाह। चमेलीरानी शरीर आ माथ, दुनू सँ थाकलि रहथि। हुनका थोड़ेक विश्राम चाहैत छल। तँ ओ अर्जुनक संग अपन नवका अड्डा पर छलीह। हुनकर आदेश छल जे बहुत आवश्यक भेले पर हुनका सँ सम्पर्क कयल जाय। ओही अतिकाल मे सहदेवक संवाद आयल।

अबिलम्ब अर्जुनक संग चमेलीरानी अपन पुरना अड्डा हेतु बिदा भेलीह। अड्डा पर पहुँचैत देरी ड्राइभर हुनका हाथ मे बज्जर ककाक चिट्ठी देलकनि।

चिट्ठी हड़बड़ी मे घसिटल अक्षर मे लिखल रहैक।

चमेली बिटिया,

साहब कैं विष पिआ देल गेलनि अछि। हमसभ शेरघाटी सँ निकलि बाढ़ पहुँचल छी। एतय सँ मोटर लंच पकड़ि अड्डा लेल प्रस्थान करब। तैं ड्राइभरक मार्फद चिट्ठी पठा रहल छी। साहेबक आदेश छन्हि जे तत्काल टेलीफोन, मोबाइल आ वायरलेस सँ संवाद नहि पठाओल जाय। दुश्मनक दुसाहस कैं छोट नहि आँकल जाए। खतरा छैक। साहेबक हालत बड्ड खराप छनि। हम घबरायल छी। साहब अहाँक नामक रट लगौने छथि। बेटी शीघ्र अड्डा पर पहुँचू।

बज्जर कका।

साहेब माने भुखन सिंह। चमेलीरानीक चेहरा उज्जर-सफेद भ' गेलनि। ओ अपन जिनगी मे सभसँ अधिक आदर एवं सिनेह भुखन सिंह कैं दैत छलीह। भुखन सिंह केवल हुनक धर्म पितेटा नहि, हुनक जीवनक आधार सेहो छलथिन। हुनक समस्त कल्पनाक उड़ान ददू लग पहुँच क' धरती पर पहुँचैत छल। प्रत्येक अभियानक बारिकी छिद्रान्वेषन, ओकर विचार, सहमति एवं ठोस स्वरूप भुखन सिंहक समक्षे होइत छल। आब, आब की हेतै?

चमेलीरानीक आँखिक प्रकाश समाप्त भ' गेलनि। मात्र नोरक छोट-छोट बून्द आँखि सँ बाहर निकलि रहल छलनि। हतास भेल ओ अर्जुन दिस तकलनि। अर्जुन संगे अपन कोठली मे पहुँचली। चिट्ठी अर्जुनक हाथ मे द' माथ कैं देवाल पर ठोकि चमेलीरानी ठोह पाड़ि कान' लगलीह।

अर्जुन चिट्ठी पढ़लनि। एक क्षण निर्विकार भावे सामने देखैत रहलाह। फेर चमेलीरानी लग पहुँचि हुनकर थरथर कँपैत देह कैं अपना अंक मे समटैत बजलाह—"समय पर घटना घटित होइत छै। हमरा सभ कैं आकाश मे बैसल ईश्वरक न्याय पर विश्वास करक चाही। ददू मरला हएँ नहि, ओ त' हमर संग छथि। धरती पर हमर अहाँक की कर्तव्य अछि, सिखा गेल छथि। अहाँ धीरज राखू। हम सभ आ ददू सेहो अहींक विचारक केन्द्र मानि काज करैत एलहुँ अछि। सत्य मे, अहाँ कैं त' नोरो बहेबाक अधिकार भगवान छीनि चुकल छथि।"

कनेक कालक बाद दुनू बाहर अयलाह। ड्राइभर कैं एक मोटर-साइकिल द' विदा कयल गेल। चमेलीरानी सहदेव कैं कहलनि—"ददूबला कार ल' क' अहाँ

मुसरीघराड़ी जाउ। भाइ साहेब कैँ कहबनि जे एकर पार्ट-पार्ट खोलि एकरा अस्तित्वविहीन करब जरूरी छै। अहि मेकक गाड़ी अहि प्रान्त मे दोसर नहि छैक।

—"औरो सुनू। अहाँ तथा नकुल सतर्क रहब। भाइ-साहेब कैँ कहबनि जे पूर्ण सावधानी मे रहथि। सम्पर्क लेल टेलीफोन, मोबाइल आ वायरलेसक व्यवहार नहि करथि। हम सांकेतिक भाषा मे अगिला सूचना पठायब।"

चमेलीरानी आ अर्जुन मोटर साइकिल पर सवार भ' फुल स्पीड मे भुखन सिंहक अड्डा लेल बिदाह भेलाह।

हथिदहक भुखन सिंह आओर शेरघाटीक पन्ना भाइ प्रसिद्ध डकैत छलाह। ओ दुनू अपना मे पक्का दोस्त सेहो छलाह। दुनूक इलाका बाँटल छल। नेपाल, बंग्लादेश आ पश्चिम बंगालक सीमा लगाइत गंगाक उत्तर सम्पूर्ण क्षेत्र भुखन सिंहक अधीन छल। उत्तर प्रदेशक सीमा लगाइत गंगाक दक्षिण भाग पन्ना भाइक हुकूमत मे छल। सम्प्रति भुखन सिंह आ पन्ना भाइ अपन-अपन हिस्साक इलाका मे बेताज बादशाह छलाह। भुखन सिंह आ पन्ना भाइ कैँ आपस मे हस्तक्षेप नहि करताह। संगहि एक औरो बातक सेहो अलिखित समझौता रहनि जे तीन मास मे एक बेर दुनू अवस्से एक दोसरा सँ भेंट करताह। एक बेर भुखन सिंहक ओहिठाम पन्ना भाइ औताह, त' दोसर बेर भुखन सिंह पन्ना भाइक ओहिठाम डिनर, ब्रान्डी आ सिगारक मेहमानी करताह।

चमेलीरानी कैँ ज्ञात छलनि जे हुनक धर्म-पिता भुखन सिंह आइ दिन मे अपन बूलेट प्रूफ प्लाइ माउथ सँ अपन एकमात्र सहायक बज्जर कका संग शेरघाटी पन्ना भाइ सँ भेंट कर' गेल छथि आ मध्य रात्रि तक घुमि क' औताह।

चमेलीरानी मोटर साइकिल पर पाछाँ बैसल छलीह। सोचबाक क्रम मे ओ अर्जुन कैँ कसि क' पकड़ि लेलनि—ददू कैँ जहर के देलक? पन्ना भाइ? असम्भव! तखन की भ' सकैत अछि? सभ किछु भ' सकैत अछि आ से त' भ' गेल।

तीन दिन पहिलका गप्प थिक। ओना त' गुलाब मिसिर कैँ जखन जरूरी होइक ओ स्वयं आबि पन्ना भाइ सँ भेंट करए'। मुदा अहि बेर अरजेन्ट फरमान पठेलक आ पन्ना भाइ उपस्थित भेलाह।

एकांत स्थान मे ओ भवन छल आ भवन मे मध्यम साइजक एकटा हॉल। सभटा हॉल खाली। मात्र हॉलक मध्य मे एकटा टेबुल। टेबुलक दुनू कात दूटा कुर्सी। एक कुर्सी पर बैसल गुलाब मिसिर, सी. एम. तथा दोसर कुर्सी पर बैसल परगनाक खूंखार डकैत पन्ना भाइ। हॉल मे लाल बल्बक लालिमा दैत इजोत।

हॉलक छत आ देवाल लहुलहुआन जकाँ भेल। हॉलक बाहर सी. एम.क ब्लैक कैटक दस्ताक अनगिनत कमान्डो चारू कात पसरल। हॉलक मुख्य दरबज्जा लग पन्ना भाइक एक मात्र बडीगार्ड ध्रुवा, हाथ मे अटोमेटिक स्टेनगन लेने ठार छल। ओ सतर्क आ ओकर कान दरवज्जा सँ सटल रहैक।

–"मेरी बात को ध्यान से सुनो पन्ना।"

गुलाब मिसिरक बाजब धीमा, स्थिर मुदा हुकुमनामाक अन्दाज मे छलै।

पन्ना भाइ पाँच फीटक मनुक्ख छलाह। किंतु हुनकर सर्वाङ्ग शरीर चतरल, चौड़गर ललाट, चण्डूल कपार पैघ साइजक दुनू कान जतए गुच्छाक गुच्छा केश, ईअरलॉप मे लटकल हीराक कुंडल, शरीर भारी भरकम, पयर सँ गरदनि तक पेन्ट, सर्ट तथा घनगर मोंछ। ओ चुप छलाह। मुदा मनहिमन सोचि रहल छलाह–"साला भोजपुरी छोड़ हिन्दी मे हुकुम दे रहल बा। खैर, चुपे रहीं। सुनीं त' ई का कह रहल बा।"

–"नांगटनाथ बला कांड का तुम्हें कुछ खबर नहीं होगा। लेकिन अहमदुल्ला वाला हादसा का तो पूरा प्रचार मीडिया में हुआ था।"

–"हूँ!"

–"इन दोनो कांड का अंजाम देनेवाला भुखन सिंह है। मुझे पूरा खुफिया रिपोट मिल चुका है। भुखन सिंह डकैती का काम बन्द कर मुझे लूटने का काम शुरू किया है। मुझे ललकारा है। मेरे सामने वह मच्छड़ है। मैं जब चाहूँ उसे मसल सकता हूँ। मैं प्रान्त का सी. एम. हूँ। उसे मेरी ताकत का शायद अन्दाजा नहीं है।"

–"हूँ!"

–"लेकिन पन्ना, मैंने तुम्हें खास मकसद से बुलाया है। तुम समय पर मेरा काम करते रहे हो। मैं चाहता हूँ यह काम भी तुम ही करो। तुम भुखन सिंह की हत्या कर दो। इस काम के लिए तुम्हें पाँच करोड़ रुपया दूँगा। ऊपर से पूरी प्रशासन तुम्हारी मदद मे रहेगी। अगर हाँ करो तो तुम्हारा मेहनताना और भी बढ़ाया जा सकता है।"

–"गु...गु...गुलाब।"

गुलाब शब्द एकटा सुन्दर, कोमल आ सुगन्धित परागयुक्त फूलक नाम थिक। मुदा पन्ना भाइक गुलाब शब्दोचारण सँ शोनित नहायल ओहि हॉल मे भूचाल आबि गेल। चारू कात थरथरी व्याप्त भ' गेल। पन्ना भाइ टहंकारबला ध्वनि मे बजलाह–"मैं और तुम, दोनों एक राह के मुसाफिर हैं। तुम प्रान्त का सीएम हो

और मैं शेरघाटी का डकैत। तुमने अभी तक मेरा कुछ भी नुकसान नहीं किया क्योंकि सीएम की कुर्सी पर पहुँचने मे मैंने हर कदम पर तुम्हारी मदद की है। लेकिन आज और अभी तुमने मुझे हुकुम देने की हिम्मत की है। मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि तुम नालायक, घमंडी और बेहूदा इन्सान हो।”

राजनीतिक सबसँ विशिष्ट गुण थिकै धूर्तता। कलिकाल मे चाणक्य अहि धूर्तता नामक गुण कैँ राजनीतिक परिभाषा मे फिट केलथि। गुप्तकालीन स्वर्ण युगक राजा लोकनि अहि धूर्तताक विशिष्ट गुणक अवहेलना केलनि आ चरित्रवाण बनलाह। मानलहुँ जे ताहि कारणें भारत मे सांस्कृतिक चौमुखी प्रगति भेल। मुदा, राजनीति अबला बनि गेलीह। पृथ्वीराज चौहान नामक राजा कैँ मुहम्मद गोरी धूर्तता सँ पछारि भारतक सत्यानाश क’ देलक। परिणाम भेल जे भारत सैयो वर्ष तक परतंत्रताक अन्हार कूप मे खसि पड़ल। देशक सभ सम्पदाक विनाश भ’ गेल। ओ त’ कहू जे आधुनिक परिवेश मे आजादी भेटलाक बाद प्रधान-प्रधान नेता धूर्तता नामक गुण कैँ अंगीकार केलनि आ राजकाज चलेबा मे एकर प्रयोग करब आरम्भ केलनि तखन जा क’ देशक स्थिति थोड़ेक बदलल। गुलाब धूर्त नहि, महाधूर्त छल। ओकर चरित्र मे आन सब गुणक पूर्णतः अभाव छलै मुदा धूर्तताबला गुण प्रचुर छलैक।

धूर्तक शिरोमणि गुलाब मिसिर, सीएम कैँ पन्ना भाइक अनर्गल प्रलाप सुनलाक बाद क्रोध हेबाक चाहैत छलै मुदा, ओ क्रोध कैँ पीबि गेल। ओ अत्यंन्त नम्र भ’ उठल। एकरो कारण छलै। एकरा स्पष्ट करबा लेल हम सब गुलाब मिसिरक पछिला इतिहास कैँ जानि ली त’ नीक होयत।

पटना अस्पतलाक बच्चा वार्ड मे झुण्डक झुण्ड बिन माय बापक बच्चा कैँ देखबैक। अहि परम्पराक स्वतः विकास भेलै आ एखनो तक कायम अछि। डिलेभरी लेल भर्ती भेल कतेको अभागलि महिला बच्चाक जन्म देलाक बाद अन्तर्ध्यान भ’ जाइत छथि। ओहन बच्चा सभहकैँ जिआएब, पोसब अस्पतालक डाक्टर, नर्स आ दयामंत मेहतर सभ मिल कैँ करैत रहल अछि। ओही बच्चाक झुण्ड मे एकटा बच्चा छलै जकर कोनो नाम नहि छलैक, मुदा सुभिस्ता हेतु हम सभ गुलाब नाम सँ ओकरा सम्बोधित करैत छी।

गुलाब कैँ जखन कनेक मनेक ज्ञान होब’ लगलैक त’ ओकर उमेर छह-सात वर्षक भेल रहैक। ओहि दिन कोनो नर्स रोगी सँ बचलाहा पाँव रोटी ओकरा देने छलै। ओ पाँव रोटी कैँ चिबाब’ मे बाझल छल की बच्चा वार्ड मे हलचल भेलैक।

गुजरात राज्यक चमनभाइ पारिख आयल छलाह। ओ एकटा पैघ अनाथालयक संचालक छलाह। पारिखजी सज्जन, सभ्य आ अहिंसक व्यक्ति छलाह। मानवताक सेवा लेल ओ अपन जीवन केँ उत्सर्ग क' देने छलाह। हुनक व्यक्तित्व सँ समस्त बच्चा वार्डक डाक्टर, नर्स आ मेहतर प्रभावित छल। अहि सँ पूर्व सेहो ओ कइएकटा बच्चाक झुण्ड पालि-पोसि, पढ़ा-लिखा क' योग्य बनौने छलाह।

पारिखजी बच्चाक झुण्ड के ल' क' टिसन पहुँचलाह। गुलाब दिस ओ अधिक ध्यान केने रहथि। कारण गुलाब सभ बच्चा मे अधिक सुन्दर आ कान्तिवान छल।

टिसन पर पारिख जी बच्चाक झुण्डक संगे इलाहाबाद जेबा लेल ट्रेनक प्रतीक्षा मे बैसल रहथि। एकाएक पुलिस दल लाठी-सोंटा नेने हहाइत आयल। गुजरात राज्य सँ बेतार सँ प्रान्तक खुफिया विभाग केँ सूचना आयल रहैक जे चमनभाइ पारिखक भेष मे अन्तरराष्ट्रीय विख्यात कमरूद्दीन कमाल नामक बच्चा चोर पहुँचल होयत। कमरूद्दीन कमाल बच्चा केँ हाथ-पायर तोड़ि, आँखि फोड़ि भीखमंगा बनबैत अछि। ओकर भीखमंगाबला धन्धा समग्र गुजरात आ महाराष्ट्र मे पसरल छैक।

पुलिस दल एक सर्जेन्टक नेतृत्व मे सुराग लगबैत पटना टिसन पर हमला केलक। चमनभाइ पारिखजी जान ल' क' भगलाह। हुनका भगैत देखि बच्चा सभ सेहो चारू कात भाग' लागल। गुलाब भगैत-भगैत चिड़ैयाटार पुलतर नुका रहल।

पारिख जी केँ की भेलनि से त' ज्ञात नहि, मुदा पटना टिसन गुलाबक अगिला जीविकाक स्थल बनि गेल। लगहि मे प्रसिद्ध हनुमान मन्दिर छलैक। दयावान हनुमान भक्तक कारणें सैकड़ों अपंग, अपाहिज, टूगर आ नंगरकट्टा चोरक गुजर-बसर सहजहि होइत रहैक। गुलाब केँ पेट भरैक लेल मंदिर लग मात्र घंटा दू घंटाक समय लगैक। बाँकी समय ओ पटना टिसनक प्लेटफार्म पर बितबैत छल। भीख मांगक अतिरिक्त मोटरी उठा क' भागै मे, ट्रेन मे चढ़ैत मुसाफिरक पॉकिट मे हाथ घुसियाबै मे ओ आस्ते-आस्ते ट्रेन्ड होइत गेल। ओही व्यस्त व्यवसाय मे एक बेर ओ पकड़ल गेल छल। हाजत मे पहिले पहिल ओकरा पन्ना भाइ सँ परिचय भेलैक। पन्ना भाइ चौदह-पन्द्रह वर्षक आ गुलाब दस वर्षक।

पन्ना भाइक जमानत लेल चुन्नी भाइ चक्कूबला अपन वकील संगे आयल छलै। चुन्नी भाइ चक्कूबला पॉकिटमार महासंघक सेकरेट्री छल। पन्ना भाइ चुन्नी भाइ चक्कूबला केँ गुलाब दिस ईशारा करैत आग्रह केलकैक—"इसे भी जमानत करा दो सरदार। यह मेरा छोटा भाई है।"

—“अरे! तुम तो बनारस के अनाथालय से आये हो। फिर तुम्हारा भाइ कहाँ से पैदा हो गया?”

—“सरदार, यह पटना अनाथालय का बच्चा है। इसलिए यह मेरा भाइ हुआ।”

चुन्नी भाइ चक्कूबला संग आयल वकील फार्म निकालि भरब शुरू केलक। पुछलकै—“इसका क्या नाम है?”

—“वकील साहब इसका नाम गुलाब है।”

गुलाब नामकरण पन्ना भाइक मार्फत भेलै। आब ओ बच्चा कानूनक नजरि मे गुलाब बनि गेल। पन्ना भाइ आ गुलाबक सहजहिं जमानत भ’ गेल। ओ दुनू चुन्नी भाइ चक्कूबलाक मुख्य अड्डा पर संगहि रह’ लागल।

पाकिटमारी मे पन्ना भाइ आ गुलाब कतेको बेर पकड़ल गेल, कतेको बेर सैकड़ों मनुक्ख सँ पिटाइ खेलक आ कतेको बेर जमानत नहि भेला पर मासक मास जहल मे रहल। ई सभ किछु होइत रहल आओर सालक साल समय बितैत-बितैत दस-बारह साल बीत गेल।

पन्ना भाइ पॉकिटमारीक काज मे बहुत शीघ्र माहिर भ’ गेल छल। मुदा गुलाब कँ ओ हुनर नहि आबि सकल छलै। बेर-बेर ओ पकड़ल जाए। आकच्छ भ’ क’ चुन्नी भाइ चक्कूबला अपन निर्णय सुनौलक—“धंधे मे यह लड़का नालायक है, बेकार है। इसका जमानत कराते-कराते मैं थक चुका हूँ। पन्ना, इस छोकड़े को यहाँ से चलता करो।”

चुन्नी भाइ चक्कूबलाक फैसलाक अपील करब असम्भव। उदास गुलाब कँ पन्ना भाइ सान्तुना देलनि—“घबराइ के कोनो बात नहिखे। थोड़ा दिमाग भिड़बैबला बात ह’। पन्ना तोरा साथ ह’। कोनो ने कोनो रस्ता जरूरे निकली।”

रस्ता निकलल। अगिला बेर गुलाब असगरे पकड़ायल। ओकरा अंदाजन पाँच सय मनुक्खक मुक्काक सामना कर’ पड़लैक। ओकर पूरा शरीर फूलि क’ मुंगवा भ’ गेलैक। ऊपर सँ चुन्नी भाइ चक्कूबला जमानत करबै मे अनठा देलकै। गुलाब कँ किछु दिन हाजत मे रखलाक बाद जहल मे पठा देल गेलै।

जहल मे जाहि बैरेक मे गुलाबक दाखिला भेलैक तकर सभसँ पैघ दबंग कैदी छल राम सिंघासन मिसिर। ओकर एकक्षत्र राज ओहि बैरेक पर रहैक। फरिकक जमीन कब्जा करै लेल ओ भाला चलौलक। एकगोटे त’ ठामे मुँह बाबि देलकै। दोसर अस्पताल जा’ क’ दम तोड़लक। सेशन जज ओकरा उमिर कैदक सजाए

सुनौने छलखिन्ह।

राम सिंघासन मिसिर गाजाक दम लगा रहल छल। गुलाब कैँ देखिते पुछलक–"हैई देख'। तूँ के ह' रे बबुआ?"

–"गुलाब।"

–"आँ, केवल गुलाब! अरे नाम के आगे कौन मुकुट जोड़लबा से न बोल'।"

अहीठाम गुलाबक नसीब चमत्कार देखौलक। पटना अस्पतालक अनाथ बच्चाक भाग्य अकाश छुब' लागल। बैरक मे पठेबाक काल जेलर बजने छलै जे एकरा के राम सिंघासन मिसिरक बैरक मे डाल द'। गुलाब के मोन रहैक। ओ आप पूरा नाम बाजल–"गुलाब मिसिर।"

–"अरे! अरे!! तूँ हमरे जात बिरादरी के ह'। इतना सुन्दर लड़िका फुलल-फुलल गाल, मजबूत कद काठीबला दोसरा जात मे कहाँ से पाबी। अच्छे, बोल तोहर भाइ-बाप के बा? कौन जिला तोहर ठेकना बा? तूँ कौन जरूम मे इहाँ ऐल' बानी?"

–"हमर गाम भोतराहा जहानाबाद जिला मे पड़ी। माइ बाप लड़िकपने मे स्वर्ग सिधार गैलन। कोनो जुगुत ना लागल त' पटना शहर अइली औरू इहाँ पॉकिटमारी मे पकड़ा गेली, मार खैली तबे जहल मे आ गैली हें।"

गुलाब मिसिरक आँखि सँ झर-झर नोर टपक' लगलै। एमहर राम सिंघासन मिसिर कैँ प्राणान्तक दुख भेलैक जे ओकर जात बिरादरीक लड़िका आ से पाकिटमार। ओ गाजाक चिलम कैँ उनटा क' छाउर झाड़लक, फेर गुलाब मिसिर कैँ बुझबैत बाजल–"सुन बेटा, हमरा बात कैँ धियान से सुन'। कोइ पूछिहें त' बताबैके बाजे कि ने से, तूँ मरडर कइल' तबे जेहल मे अइल'। पॉकिटमारी का बात नहिखे बोलै केबा। तूँ त' जात के नाम पर कलंक का टीका पोत देल'।"

गुलाब मिसिर मूड़ी झुकौने चुपे रहल। मुदा राम सिंघासन मिसिरक गप्पक प्रभाव ओकरा माथ कैँ घुमा देलकै। ओ मनहिमन सोचब शुरू केलक जे पॉकिटमारीक धन्धा क' क' ओ अवस्से जाति पर बट्टा लगा देलक अछि।

खैर, किछु हौउ। गुलाबक नाम पन्नाभाइ धेलक। जाति प्रमाण-पत्र अनायास राम सिंघासन मिसिरक कृपा सँ प्राप्त भ' गेलै। आब देखा चाही जे आगाँ की हेतैक?

गुलाब मिसिर राम सिंघासनक छत्रछाया मे सुखपूर्वक दिन काट' लागल। दिन बितैत गेलै, दिन पर दिन, मासक समय बीति गेलै। राम सिंघासन मिसिरक ममता अपन जातिक दुलरुआ पर कइएक गुणा बढ़ि गेलै। ओ गाजाक सेवन

दिन-राति करै छल। एक दिन गाजाक निशा मे राम सिंघासन मिसिर किछु खास निश्चय केलक। फेर गुलाब मिसिर कैँ चुचकारैत अपन बात कहब शुरू केलक– “बबुआ सुन’। हमरा पाँच टू लड़िका आ एक ननकिरबी बा। चार बेटा त’ घर गृहसती बसा के, भिन्न-बखरा कर के दुनिया के नोन-रोटी मे रम गेल बा। जेबा कि से, छोटका लड़िका नाम ह’ रामपुकार मिसिर, पढ़ै के खातिर अही शहर के एक होस्टल मे रहे ला। होस्टल के नाम हैई, जे वाकि जे सरों के नामे भुला गइल। अरे! याद कर’। गाँधी बाबा का मेहरारू, बोल’ नाम बोल’।”

गुलाब मिसिर कैँ त’ गाँधी बाबा द’ सेहो ज्ञान नहि छलै। तखन हुनकर मेहरारूक नाम कत’ सँ मोन पड़ितैक। ओ त’ बुझू भाग्य संग देलकै जे राम सिंघासन मिसिर कैँ गाँधी बाबाक मेहरारूक नाम मोन पड़ि गेलैक। ओ बाजल–“हँ, हँ, याद आ गइल। कस्तुरबा नाम हैई। रमपुकरबा कस्तुरबा होस्टल मे रहेला। सुन’ बबुआ, तूँ जहल से छुटब’ ना त’ सोझे रमपुकरवा का होस्टल मे हमरा लड़िका का साथे रहब’।”

गुलाब मिसिरक मुँह मे कियो जेना एक-एकटा गुलाब जामुन खसा रहल होइक आ ओकर स्वाद सँ ओ आत्मविभोर भ’ रहल होअय तेहने स्थिति छलै।

राम सिंघासन थोड़े काल तक चुपचाप रहल। ओ किछु सोचि रहल छल, कारण ओकर माथक सिरा उभरि गेल रहै। फेर आस्ते-आस्ते चिलम भरलक आ खींचक’ जे दम मारलक त’ चिलम सँ एक बीताक लपट उठि गेलैक। ओ बाजल– “हमरा त’ उमिर कैद सजा बा। खैर, घबड़ाइ का कोनो बात नहिखे। हम सोचत रहली ह’ कि हमर ननकिरबी का का होइ। हनुमान बाबा का किरपा हो गइल। घर बैठल लड़िका आ गइल। सुन’ बबुआ, हम सोच ले ली। तोहार बिआह हम अपन ननकिरबी से करब। जे बा की से तोहरा दस बीघा जमीन, गाय, भैंस, बड़द सभ कुछ दहेज मे देब। तूँ हमरे गाम मे, हमरे बासडीह पर खुशी-खुशी रहब’।”

मनुक्खक भाग्य कोना पलटिया खाइत छैक तकर एहन पैघ उदाहरण भेटब कठिन। गुलाब मिसिर कैँ नाम भेटलैक, जाति भेटलैक, घरवाली भेटलैक, घर-आंगन, जमीन-जथा भेटि गेलैक। आब की चाही?

जहल सँ छुटलाक बाद गुलाब मिसिर सोझे कस्तुरबा हॉस्टल पहुँचल आ रामपुकरबाक बगलबला चौकी पर पसरि गेल। रामपुकारबा कैँ अपन बापक फरमान भेटि चुकल छलैक। ओ गुलाब मिसिरक दिस मुखातिब होइत बाजल– “पहुना, खाइ का टेम हो गइल बा। रौआ चली मेस मे।”

रामपुकार चौकीक नीचा डाबा सँ घी निकाललक। फेर भरि बाटी घी लेलक आ गुलाब मिसिरक संगे मेस मे पहुँचल।

अहिना गुलाब मिसिर खाइत रहल आ मोटाइत रहल। अगिला अगहन पंचमी क' नवका जालीदार कुर्ता, ललका धोती आ हरियरका गमछाक मुरेठा बान्हि राम सिंघासन मिसिरक ननकिरबी सँ बिआह केलक। बरियाती मे असगरे पन्ना भाइ खूब ढोल बजौलनि।

भोटर लिस्ट मे गुलाब मिसिरक नाम दर्ज भेल। नाम गुलाब मिसिर, पिता स्व. खूबलाल मिसिर, पु. छब्बीस वर्ष आ ननकिरबी देवी, पति गुलाब मिसिर, स्त्री बीस वर्ष।

मुदा सबसँ पैघ इनाम गुलाब मिसिर कैँ ओकर सहोदर सार राम पुकार देलकै। राम पुकार अपन बहिनोइक लेल अलग सँ तपस्या कैलक। ककरो गुलाब मिसिर नामे मैट्रिक परीक्षा मे दाखिल करा क' गुलाब मिसिर कैँ प्रथम श्रेणी मे मैट्रिक उत्तीर्ण करा देलक।

आब त' अकाशक पाट खुजि गेल। गुलाब मिसिर पटना कॉलेज मे नाम लिखौलक। फेर पटना विश्वविद्यालयक यूनियनक अध्यक्ष पद हेतु नामांकन केलक। पन्ना भाइ भरिपूर मददि केलथिन्ह। गुलाब मिसिर छात्र युनियनक अध्यक्ष बनि गेल।

तकर बाद आयल इमरजेन्सी। गुलाब मिसिर जहल मे। ओतए प्रान्त भरिक नेताक जमघट। गुलाब मिसिर कैँ जगह भेटलैक, समय भेटलैक आ अवसर भेटलैक। ओ प्रान्तक राजनीति कैँ नीक जकाँ चिन्हलक। जखन जहल सँ बाहर आयल तामे पूर्ण नेता बनि चुकल छल। गुलाब मिसिरक देदीप्यमान मुखाकृति, सोनहायल स्वास्थ्य आ जातिक रंग मे आकंठ डुबल भाषण देबाक शैली। सभहक मोन मोहि लेलकै। नेताक नेता सहजहि बनि गेल। राजनीतिक उथल-पुथलक बिहारि मे ओ पैघ मेजोरिटी सँ इलेक्शन जीति क' विधायक बनि गेल।

गुलाब मिसिरक बुद्धि भोट कोना बटोरल जाइत छैक, ओहि मे आस्ते-आस्ते परिपक्व होइत गेल। ओ भोटर लिस्टक अध्ययन केलक। जे नहि जनमल भोटर छै, जे जनमि के मरि गेल भोटर छै। जे कन्या बियाह क' क' सासुर गेल भोटर छै, जे बियाह क' क' सासुर आयल भोटर छै। वाह! अपना देशक लोकतंत्र त' बड़ उदार अछि। आब मात्र एतबेटा बियौंत रहि गेलै ने, कोना सभटा भोट कैँ संग्रह कयल जाए।

मूलतः गुलाब मिसिर कैँ अपन कोनो जाति त' छलैहे नहि। मुदा परम्पराक सड़ांध मे जातिक की महत्व छै से ओकर दुष्ट आ धूर्त बुद्धि मे नीक जकाँ आबि गेल रहैक। पहिने नवका बनल नेता सभहक दिमाग कैँ एक्सरे केलक। फेर अगाड़ी-पिछाड़ीक महामंत्र फूकलक। मंत्रक भूत सम्पूर्ण प्रान्त कैँ गीरि लेलक। ककरा की भेलैक? के पौलक, के गमौलक तइ सँ गुलाब मिसिर कैँ की मतलब? ओ जे पार्टी बनौलक से दू-तिहाइ मैजोरिटी सँ जीत गेल। गुलाब मिसिर निर्विरोध सीएम बनि गेल।

तकर बादो गुलाब मिसिर निश्चिन्त नहि भेल। ओकर सोच मे अयलैक जे जातिक राजनीति पर अधिक विश्वास करब मूर्खता होयत। गद्दी कैँ पक्का आ मजबूत करैक लेल औरो इन्तजाम होयब आवश्यक।

जर्मन दार्शनिक हीगल जे एक समय कार्ल मार्क्सक गुरू सेहो छलाह, कहने रहथि जे प्रजातंत्रक रीढ़ नौकरशाह होइत अछि। ओ वर्ग अपना कैँ जनता सँ अलगे केने रहैत अछि। जनता पर शासन सही मे अही वर्गक होइत छै। स्वभावतः ई वर्ग फरेबी होइत अछि एवं जनता कैँ पीड़ा पहुँचाबै मे सदिखन अग्रणी रहैत अछि।

गुलाब मिसिर हीगलक नाम कथमपि ने सुनने हैत। मुदा धूर्त गुलाब मिसिर कैँ कर्मचारी वर्गक मनोविज्ञान बुझबा मे कनिको समय नहि लगलैक। पदोन्नति, स्थानान्तरण आ गोपनीए चरित्र प्रमाण-पत्र, सभ किछु त' जनता द्वारा चुनल अभिभावक हाथ। तखन चिन्ता कथी के? ई वर्ग जेताह कत'? टीक त' पकड़ायले छन्हि।

भेट गेल कुंजी। इमानदार कर्मचारी कैँ अपमान करब आ उजरल विभाग मे नियुक्त करब ठीक होयत। बाँकी भ्रष्ट कर्मचारी कैँ प्रखण्ड सँ जिला मुख्यालय तक पदस्थापित करब त' वर्तमान सरकारक अधिकार क्षेत्र मे। अहि वर्गक कर्मचारीक पुनीत कर्तव्य छै जे हैत से हैत। येन-केन प्रकारे गुलाब मिसिरक पार्टी कैँ विजय दिआबी। कतबो किएक ने चुनाव पदाधिकारी पर्यवेक्षक कैँ पठाबथि, गुलाब मिसिरक ठेंगा सती।

आब चाही धनक उगाही। सम्पूर्ण बजट त' अपने हाथ अछि, ऊपर सँ लूट-खसोटक साम्राज्य। हत्या, अपहरण, बलात्कार, चोरी, डकैतीक भयावह दशा मे जनता कैँ जीव' दिऔक, कराह' दिऔक, तखने ओ दबल रहत।

एमहर पन्ना भाइ शेरघाटीक मकबरा जाइबला बाइपास मे दू मंजिला अपन

अड्डा बनौलनि। हुनकर रुतबाक डकैत ओहि परगना मे कियो नहि छल। गुलाब मिसिर सँ हुनक सम्पर्क सदिकाल बनल रहल। सैकड़ो सातिर बन्दूकबाज, टाका पैसा आ बुद्धिक खजाना सँ पन्ना भाइ गुलाब मिसिर कैँ डेग डेग पर मददि करैत रहलखिन। आब ओ सीएम बनि क' खुश आ हम डकैत बनि क' खुश। पटना टिशनक दू सहोदर पॉकिटमारक आब रस्ता अलग-अलग। आपसी टकराहटि नहि हो तकर अलिखित गैरैन्टी।

वैह पन्ना भाइ गुलाब मिसिरक आगाँ बैसल बेहिसाब क्रोध मे थरथर कँपैत। पन्ना भाइक उग्र रूप देखि गुलाब मिसिर सकपका क' मन्द पड़ि गेल। ओ हिन्दी छोड़ि भोजपुरी बाज' लागल—"पन्ना भाइ, रौआ हमरा कैँ माफी देल जाओ। हमर बात सुनल जाऊ। नांगटनाथ विधायक कैँ घायल क' कैँ हमर बैंकाक से आइल सप्लाइ के लूट लेल गइल। फेर तुगलकाबाद का अहमदुल्ला खां सांसद के बारूद से उड़ा देल गइल। समूचा गाम अकाश मे बिला गइल। वहाँ एकटा बड़का गढ़ा बनल बा। अहि घटना का कारण इसलामाबाद से काठमांडु आ दिल्ली से पटना तक सभ काँप गइल। आब औरू सुनल जाओ। अगिला बरख चुनाव होइ। हमर बनाइल मीनार के एक-एक क' तोड़ल जा रहल बा। ई सब के केलक? रौआ जबाब दीं? ई हमर जीवन-मरण का सवाल बा।"

—"तुम्हारा कहना है कि सभी काम भुखन भाइ द्वारा हुआ है?"

—"हाँ, पन्ना भाइ, हाँ।"

—"गलत! सरासर झूठ! भुखन सिंह मेरा बड़ा भाइ जैसा है। मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूँ। मैं उनका आदर करता हूँ। भुखन भाइ का राजनीति से कुछ लेना-देना नहीं है। तुम्हारा इन्टेलिजेन्स टीम गोबर टीम है। तुम्हारे कहने से मैं अपने देवता समान भाइ की हत्या नहीं कर सकता।"

राजनीति मे स्वार्थक स्वरूप विकराल होइत छै। पन्ना भाइक भुखन सिंहक लेल प्रगट उद्‌गार सँ गुलाब मिसिर तिलमिला उठल। ओकर क्रोध प्रचण्ड अन्हर बनि क' लहक' लगलै। गुलाब मिसिर ओहुना सीएम छल। शक्तिक प्रमाद सँ ओत-प्रोत गुलाब मिसिर बाजल—"पन्ना सोच लो। कहीं मेरा गुस्सा डकैतों का अन्त न कर दे। मैं तुम्हें भी खबरदार करता हूँ।"

पन्ना भाइ तमतमा क' उठि ठार भ' गेलाह। हुनक बाजब गरजैत मेघक टंहकार बनि गेल। सम्पूर्ण हॉल हिल' लागल—"सुनो गुलाब, डकैती का काम मे पहले भागने का रस्ता खोज लिया जाता है। मैं यहाँ आने से पहले तुम्हारा जन्मपत्री

को फोटो के साथ तैयार रख छोड़ा है। अगर मेरा कुछ हुआ तो तुरंत तुम्हारा जन्मपत्री सभी अखबारों के दफ्तर मे पहुँचा दिया जाएगा। इसलिए चालाकी मत करना। मैं जानता हूँ कि मेरा एक बडीगार्ड यहाँ मेरे साथ है। तुम्हारा एक गलत कदम तुम्हारा सत्यनाश कर देगा।"

गुलाब मिसिर टक-टक पन्ना भाइ दिस ताकि रहल छल। पन्ना भाइ फेर बजलाह–"हमलोग डकैत हैं, फिर भी हमलोगों में इमान है, वसूल है। हमलोग रुपये का पचास पैसा लोकहित मे खर्च करते हैं। तीन सौ बच्चों का अनाथालय, छह बच्चों का निःशुल्क स्कूल और दो खैराती अस्पताल मैं अपनी देख-रेख में चलाता हूँ। उसके बाद भी मुझे पता है कि मरने के बाद मुझे स्वर्ग मिलने वाला नहीं। और तुम? तुम तो सारा प्रान्त का रक्त चूसने के बाद भी खड़ा मुझसे बात कर रहा है। अरे! गुलाब, देखो सारा प्रान्त कराह रहा है। टिड्डी दल की तरह यहाँ के लोग दूसरे राज्य मे रोटी के लिए जा रहे हैं। यहाँ की शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, व्यापार सभी कुछ रसातल में पहुँच चुका है। समूचा भारत इस प्रान्त के नाम पर थूकता है। अरे गुलाब, तुम्हारे जैसा राक्षस पृथ्वी पर कभी-कभी पैदा होता है। लेकिन याद रखना, इस धरती का एक अटल नियम है। जहाँ कंस पैदा होता है वहीं कृष्ण भी पैदा होते हैं।"

पन्ना भाइक सबटा गप्प सुनि गुलाब मिसिरक मुँह एक बित्ता पसरि गेलै। ओ मुँह बौने चुपे रहल।

पन्ना भाइ हॉलक दरबज्जा दिस जाइत अपन बडीगार्ड कैँ अबाज देलनि– "ध्रुवा! मेरे आगे-आगे चलो। कोइ रस्ता रोकने आबे तो उसे भून डालो।"

पन्ना भाइ कैँ रोकबाक साहस गुलाब मिसिर कैँ नहि भेलैक। सत्ते चरित्रक अपवित्रता मनुक्ख कैँ कायर बना दैत छैक। पन्ना भाइ अपन राल्स रायस गाड़ी लग सुरक्षित पहुँचला, आ ध्रुवा संगे बिदा भ' गेलाह।

एकर बादक घटनाचक्र द्रुत गति सँ घटित भेल। वर्णित घटनाक दू दिनक बाद, ध्रुवा भोर मे तैयार भ' क' अपन फ्लैट सँ बाहर आयल छल। ओकरा बुझल रहैक जे पन्ना भाइ सँ भेंट करक लेल भुखन सिंह आइ अओताह। पन्ना भाइ आजुक दिन लेल स्पेशल तैयारीक आदेश कयने छलाह। गुलाब मिसिरक ओहिठाम सँ वापस एलाक बाद सतर्कता मे अधिक ध्यान देल गेल छलै।

सामने ध्रुवाक फियट ठार रहैक। ओ अपन कार लग पहुँचले रहए कि चारू कात सँ किछु व्यक्ति आबि गाड़ी कैँ घेर लैलकै। पाँच बन्दूकधारी सिपाही आ एक

उज्जर चमड़ावाली महिला। महिला अपन परिचय देलनि–"मैं इस जिला का डीएम हूँ।"

–"ठीक, मुझसे क्या काम है?"

–"तुम इस टेप को सुन लो।"

टेपक सुन'बला यंत्र ध्रुवाक कान मे लगा देल गेल। टेप ऑन भेल–"पापा, मुझको ये लोग पकड़कर एक जगह बन्द कर दिए हैं। कहते हैं कि तुम्हारा पापा अगर काम नहीं करेगा तो ये लोग मुझे जान से मार देंगे। पापा, मैं मरना नहीं चाहती हूँ। मैं अभी बच्ची हूँ। पापा, इनलोगों का काम कर दो और मुझे बचा लो। पापा, मैं मरना नहीं चाहती हूँ। पापा...।"

ध्रुवाक पत्नीक देहान्त भ' चुकल छलै। मात्र एकटा बेटी ओकर ममताक केन्द्र बिन्दु छलै। ओकर पृथ्वी पर जीवाक एक मात्र उद्देश्य। ओ अपन बेटी कैँ अत्यधिक स्नेह करैत छल। बेटी कैँ नैनीतालक एकटा स्कूल मे नाम लिखा होस्टल मे राखि देने छल। प्रत्येक महिना अपन बेटी कैँ देखि अबैत छल।

टेप सुनैत देरी ध्रुवा बुत बनि गेल। बेटीक चित्कार आ ओहि सँ उपजल संवेदना ओकरा सुन्न क' देलकै।

जनानी आफिसर टेप हटा एकटा शीशी ध्रुवाक अगिला जेबी मे राखि कैँ बाजलि–"इस छोटी शीशी मे जहर है। भुखन सिंह के खाना मे या पानी मे या शराब मे इसको मिला देना है।"

फेर कागत पर लिखल एकगोट मोबाइलक नम्बर ध्रुवाक ओही जेबी मे रखैत ओ जनानी फेर कहलनि–"काम पूरा कर इस नम्बर पर फोन कर देना। तुम्हारी बेटी सुरक्षित वापस हॉस्टल मे पहुँचा दी जाएगी।"

पाँचो सिपाही आ जनानी डीएम किछु दूर मे ठार जीप पर बैसल आ विदा भ' गेल। ध्रुवा ओहिना मूरत भेल ठारे रहि गेल।

ओही दिन आठ बजे राति मे भुखन सिंह अपन बुलेट प्रूफ प्लाइ-माउथ सँ पन्ना भाइक महल मे पर्दापण केलनि। सामने एक तेज धाराक नदी बहैत छलै। ओकरे कछेर मे छलै पैघ सुशोभित वृक्ष आ लता सँ अच्छादित लॉन। लॉन हरितमाक कारणे लॉन कम बाटिका अधिक देख' मे लगैत छलै। नदीक कात मे छाँहक नीचा दूटा आरामदेह कुर्सी पर पन्ना भाइ आ भुखन सिंह बैसल सिगारक धुआँ उड़ा रहल छलाह। दुनूक बगल मे दहकैत चिनगारीक अंगैठी ठंढ़ वातावरण कैँ गर्म करबाक प्रयास क' रहल छल। सामने नदी मे एक छोट टू सीटर मोटर लंच

लंगर खसौने हिचकोला खा रहल छल। कनेक हटल बज्रनाथ आ ध्रुवा डिनरक वस्तु सँ सजायल ट्राली कैँ देखि रहल छल।

पहिने मार्टिनी चलल। फेर डिनर भेल। ओहि मे दू घंटाक समय बितल। थोड़ेक कालक बाद जखन अधकट्टा चन्द्रमा पश्चिम आकाश मे डुब' लागल, ध्रुवा दूटा छोट किंतु सुन्दर गिलास मे ब्रान्डी अनलक। दुनू गिलास दुनू व्यक्तिक आगाँ मे राखि देल गेल। स्पेन देशक नजदीक मेडिटेरियन समुद्रक जिब्लाटर टापू पर अंगूरक धुआऔल ब्रान्डी मे पानि या सोडा नहि मिलाओल जाइत छैक। पन्ना भाइ ब्रान्डीक सीप लैत अपन गप्पक सारांश कहैत बजलाह–"भाइ साहब, गुलाब मिसिर के इहाँ का-का भइल, रौआ के डिटेल मे हम बता चुकल बानी। आब एही कहैके बा कि हमरा सब के बहुत सावधान रहै के जरूरी बा।"

'हूँ' कहैत भुखन सिंह ब्रान्डीक गिलास उठा ओकर पेय कैँ एकहि घोंट मे पीबि नवका सिगार जरौलनि आ मुँह मे लगा जोर-जोर सँ कश लेब' लगलाह।

फेर नहि जानि की भेलैक। भुखन सिंह एकाएक उठि क' ठार भ' गेलाह। बिना पन्ना भाइ दिस तकने जोर सँ चिचिया उठलाह–"बज्रनाथ, वापस चलो।"

बज्रनाथ संग भुखन सिंह नम्हर-नम्हर डेग दैत अपन गाड़ी लग पहुँचि गाड़ी मे बैसि गेलाह। एकमात्र हुनक रक्षक, मातहत आ ड्राइभर बज्रनाथ गाड़ी स्टार्ट केलक आ बिदा भ' गेल।

पन्ना भाइ अचम्भित सभ किछु देखैत रहलाह। भुखन सिंहक प्लाइ माउथक आँखि सँ परोक्ष होइत ओ पाछाँ घुमला त' ध्रुवा कैँ अपन कनपट्टी मे पिस्तौलक नाल सटोने ठार देखलनि।

आश्चर्य, परम आश्चर्य। भुखन सिंहक अप्रत्याशित व्यवहार, फेर ध्रुवाक माथ मे तानल पिस्तौल। पन्ना भाइ किंकर्तव्यविमूढ़ भ' गेलाह। मुदा, तखनहि ध्रुवा चित्कार क' उठल–"मेरी बेटी को उनलोगों ने अगुआ कर लिया है। जान से मारने की धमकी दिया है। मैं लाचार और बेबश हो गया मालिक। मैंने आपके बड़े भाइ भुखन सिंह के ब्रान्डी में जहर मिला दिया है। मैं गद्दार हूँ, मालिक। मुझे माफ कर देना।"

धाँइ!

पिस्तौलक बुलेट ध्रुवाक कनपट्टी मे छेद क' देलक आ ध्रुवाक प्राणरहित शरीर जमीन पर खसि पड़ल।

एमहर प्लाइ माउथ कार मे बैसल भुखन सिंह बज्रनाथ कैँ कहलनि–

"सुनसान जगह देखि कार कैँ ठार करू।"

मध्य रात्रि आ माघक महिना। सम्पूर्ण इलाका निर्जन छल। बज्रनाथ गाड़ी कैँ एक कात रोकि अपन चेहरा पर प्रश्नचिह्न बना क' भुखन सिंह दिस तकलनि। भुखन सिंहक चेहरा पर भयावह मृत्युक साया पसरि गेल छलै। ओ कहलनि–"बज्रनाथ, हमरा जहर पिआ देल गेल अछि। जहरक असर सँ अड्डा पर पहुँच' सँ पहिने हमर मृत्यु भ' जायत। तँ तों हमर अन्तिम आदेश कैँ ध्यान सँ सुन'।

–"हमर सेफ मे टेप कयल मैसेज छै। ओ हमर बसियतनामा तथा अंतिम इच्छा थिक। अड्डा पर पहुँच क' चमेली बिटिया, अर्जुन आ तों, तीनू मिल क' टेप सुनि लिह'। सभ किछु साफ भ' जेतौक।

–"बाढ़ पहुँचि, आगाँ मोटर लंच सँ यात्रा करिहएँ। बाढ़ मे अपन ड्राइभर हेतैक। अही कार सँ चमेली बिटिया कैँ संदेश पठा दिहक जे अड्डा पर पहुँचय। जहर हमरा के देलक? ओ व्यक्ति पन्ना कथमपि नहि भ' सकैत अछि। धैर्यक संग खोज करब उचित। तत्काले सँ टेलीफोन, मोबाइल आदिक उपयोग नहि कयल जाए। प्रायः कोनो पैघ दुश्मन जागल अछि।

–"हमर मृत्युक बाद हमर शरीर कैँ गंगाक धारा मे प्रवाहित क' देल जाए। गंगाक आंगन मे हमर समग्र जीवन बीतल। हम गंगाक आँचर तर रहब पसिन्न करैत छी। शायद हमर आत्मा कैँ ओहि ठाम शान्ति भेटए। बज्रनाथ, आब बाढ़ पहुँचबा लेल तों गाड़ी स्टॉर्ट कर'।"

बाढ़ पहुँचि बज्रनाथ जहर सँ मांतल भुखन सिंह कैँ कोरा मे उठा क' मोटर-लंच पर अनलनि। फेर, चिट्ठी लिखि ड्राइभरक मार्फद चमेलीरानी कैँ पठा देलनि। तकर बाद मोटर लंच स्टार्ट क' हथिदह सँ आगाँ बनल गंगाक कछेर मे, अड्डा दिस विदाह भ' गेलाह।

भुखन सिंहक सर्वाङ्ग शरीर मे जहर पसरि चुकल छलै। ओ कहुना प्राण रक्षार्थ सांस खींचि रहल छलाह। अकारण शरीर त्याग करबा मे प्राण कैँ बहुत बेशी कष्ट होइत छै। ताहू पर सँ भुखन सिंहक सतर्क मस्तिष्क तंत्र संसार त्याग करबा मे पूर्ण बाधा उपस्थित केने छल। भुखन सिंहक बन्द आँखि मे लहरि पर लहरि उठि रहल छलै। ओकर मोन मे भावक झुनझुना बाजि रहल छलै–आह! संसार कतेक सुन्दर छैक। मुदा, बुद्धि, विवेक, विचार आ भावक कॉकटेल पीबि विधाता भुखन सिंहक प्राण हरि लेलनि।

चमेलीरानी, अर्जुन आ बज्रनाथक आगाँ मे भुखन सिंहक मृत शरीर पड़ल

छल। माघक सूर्य उगबा सँ पूर्वहि अपन अरुणिम गंगाक पवित्र जलराशि पर पसरि चुकल छल। चमेलीरानीक हृदय मे हाहाकार मचल छलनि। मोह-उद्वेगक कारणें करुणा हुनक आँखि सँ झहरि रहल छलनि। चुपचाप चमेलीरानी, अर्जुन आ बज्रनाथ अपन दुख कैँ महाकाल कैँ अर्पित क' रहल छलाह।

❖

पाँच

कर्मप्रधान विश्व रचि राखा। मानलहूँ जे कर्मप्रधान ई संसार अछि। मुदा कर्मक भोग बिना कयने विधाता जान नहि छोड़ैत छथिन्ह, से की नीक बात भेलैक? मनुक्ख कँ भूल-चूकक माफी देब विधाता लेल किएक कठिन भ' जाइत छन्हि?

राजा बाजारक चौमोहानी सँ थोड़ेक उत्तर हटल बड़का सड़कक कातहि मे एकटा पैघ पीपर गाछ। ओकरे शीतल छाया मे एकटा छोट हनुमान मंदिर। मंदिरक आगाँ शंखमरमर सँ पाटल चबुतरा आ ओकर पक्का छत। भोरुका समय। भक्त लोकनिक आवागमन। पुजारी जी हनमुमानक विग्रहक पूजा समाप्त क' चबुतरा पर आबि क' बैसि रहलाह। चबुतरा पर पहिने सँ दू व्यक्ति बैसल गपसप क' रहल छलाह।

एक व्यक्ति छल सुखदेव। ओ सीएम परिवारक ड्राइभरक पलटन मे मुख्य ड्राइभर छल। सुखदेवक उमेर जवानी आ बूढ़ारीक संधिस्थल पर छल। ओ हनुमानक भक्त आ सज्जन पुरुष छल। मुदा पेचिसक बीमारी सँ अक्रान्त छल। तेँ ओकरा सीएम अपन गाड़ी ड्राइभ नहि कर' दैत छलखिन। सुखदेव सीएमक पत्नी आदरणीया श्रीमती ननकिरबी देवीक गाड़ीक परमानेन्ट ड्राइभर छल।

दोसर व्यक्ति छल पवन कुमार बटोही। सत्य वा झूठ, बटोही अपन जीवन-इतिहास जे सुखदेव ड्राइभर कँ बतौने छल ओ अहि प्रकारक छल।

बटोहीक गाम छलै सहरसा जिलाक अन्तर्गत। ओकर पितामह अपन टाइमक प्रसिद्ध कुम्भकार छलाह। मुदा, प्लास्टिक आ आलमोनियमक युग मे कुम्भहारक की काज? बटोहीक पिता अपन दू-चारि कट्ठा जमीन बेचि बटोही कँ ड्राइभरी सिखौलनि। बटोही ओहि हुनर संगे कलकत्ता पहुँचल। कालक्रमे ओ चमड़िया सेठक ड्राइभर बनि गेल।

चमड़िया सेठक बेटा छल आइ-काल्हुक छौंड़ा। ओ नित्य शराब पीब आ मुर्गीक अंडा सँ बनल आमलेट खेबा लेल मेट्रो सिनेमाक गलियारी मे बनल ढाबा मे जाइत छल। ओहि राति ओ छौंड़ा निशा मे मांतल एक्सीडेंट केलक आ एक

बंगाली भद्र मानुष कँ चाँपि सुरधाम पहुँचा देलक। चमड़िया सेठ बटोही कँ एक्सीडेन्टक जिम्मेदारी लेबा लेल निहोरा कयलनि आ कहलनि–"बहुत ड्राइभर मेरे यहाँ रहा, लेकिन तुम्हारे जैसा ड्राइभर एक भी नहीं था। तुम ड्राइभरी हुनर मे पारंगत हो। अभी जो काम पड़ा उसमें तुम ही मददगार बन सकते हो। बेटा बटोही, एक लाख रुपया लो और कलकता से गायब हो जाओ।"

बटोही अन्नदाता चमड़िया सेठक विनती कँ शिरोधार्य कयलक। मुदा एक लाख टाका लेबा सँ इनकार क' देलक। एक लाख टाका लेनाइक माने छल बीस वर्षक चमड़ियाक सेठक नोनक अपमान।

बटोही कलकत्ता त्यागि गाम आयल। मुदा गाम मे डीह-डाबर निपत्ता भ' चुकल छलै। ओ पटना आयल आ मंदिरक पुजारीजीक कृपा सँ एकटा ठिकाना पऔलक। ओतहि ओकरा सुखदेव ड्राइभर सँ सम्पर्क भेलै। चारि मास सँ ओ हनुमानजी कँ प्रणाम केलाक बाद सुखदेव ड्राइभरक पयर छुबि प्रणाम करै छल। पुजारीजी सेहो पैरबी करैत रहलथिन। तखन जाक' तपस्या फलीभूत भेलै।

सुखदेव ड्राइभर कँ अपन मालकिन पर नीक प्रभाव छलै। तँ बटोही कँ सरकारी ड्राइभरीक नौकरी हासिल भेलै। आइ दस बजे तक बटोही कँ नियुक्ति कागत भेटि जेतैक। आब ओ सेहो सीएमक ड्राइभरक फौज मे शामिल भ' जायत। ओ फेर सँ सुखदेव ड्राइवरक पयर छूबि आभार प्रगट केलक।

सुखदेव ड्राइभर कहलक–"भगवान का विश्वास राखल जाओ ए बटोही बाबू। कर्मक भोग त' हेबे करी। रौआ, चमड़िया सेठ का एक लाख रुपया इमानदारी मे आ के ठुकरा देली आ आज देखीं जे हनुमान बाबा का कृपा हो गइल। सरकारी नौकरी मिलल जकरा मे पेंसन सेहो भेटी। अरे बटोही बबुआ। भगवान का सभ काम निम्मने हो ला। हुनक बनाओल नियम के चैलेन्ज ना करी से ठीक बा।"

ओहिकाल कतौ सँ हहाइत भीमा आयल। कीर्तमुखक पाँचो बेटा मे भीमा सभसँ बेसी लम्बा-चौड़ा, तगड़ा पहलमान टाइप मनुक्ख छल। ओ हनुमानक प्रतिमाक आगाँ लम्बा-लम्बी दंड-प्रणाम केलक। मंदिर मे राखल सिनुरक खूब पैघ ठोप केलक, एकटा माला उठा गरदनि मे पहिरलक आ गलमोच्छा कँ सहलाबैत पुजारी, सुखदेव ड्राइभर आ बटोही लग एक कात मे बैसि गेल। ओकर मुखाकृति पर डपोरशंखी अन्दाज पूर्ववते छलै।

भीमा बड़ पैघ समस्या मे फँसि गेल छल। ओ कानू सिंहक मनीस्टर बनिते

सरकारी बडीगार्ड बनि गेल छल। ओकरा सरकारी आवास सेहो भेटि गेल छलैक। अनेकों विभागक बडीगार्ड बनैत-बनैत अंत मे ओ सीएमक बडीगार्डक पोस्ट पर पहुँचि गेल छल। सीएम हरदम ओकर तथा ओकर मोंछक प्रसंशा करैत छलखिन।

से सब त' ठीक। मुदा ओकर पारिवारिक जीवन मे पसाही लागल छलैक। ओ रतुका धोबि पर खूब रोआब जमौलक आ ओकर बेटी रधिया सँ बिआह केलक। लेकिन सुख ओकरा नसीब मे नहि छलै। रधिया दोसर कैँ सुना-सुना क' बजैत छलै—"एकर मोंछ पर नहि जाएब। यैह मोंछ त' हमरा बापक मति कैँ हरि लेलकै। ई मरद नहि, हड़्डाक बड़द छी। संतान की आकाश सँ टपकैत छै? हे परमेसर! हे दीनानाथ! हमर कोनो उपाय करू। अइ सरधुआ सँ किछुओ होब' बला नै छै। नहि जानि हमर कोखिक की हैत?"

छ' मासक छुट्टी ल' क' भीमा चमेलीरानीक कैम्प मे गहन ट्रेनिंग लेब' लेल गेल छल। घुरि क' आयल त' रधिया निपत्ता। आह! ओ रधिया कैँ डेब नहि सकल। रधियाक निष्ठुर व्यवहार सँ ओकरा बड़ दुख भेलैक। ओ गुदरिया बाबाजी बनबाक निश्चय क' लेलक। फेर ओकरा मोन मे एकटा विचार उठलैक। ओ विचारलक जे हड़्डा बड़दक अर्थ बुझक चाही। भ' सकै अछि अही माध्यम सँ दुखक निदान लिखल हो।

बडीगार्डक समूह मे सभसँ बेसी पढ़ल-लिखल, डबल एमए पास छल सुरेश कुमार वियोगी। वियोगी भीमा कैँ हड़्डा बड़दक अर्थ बुझा देलकै। ई हो कहलकै जे अहि रोगक उपचार कोनो नीक वैद्य सँ हेबाक चाही। नीक वैद्य कोना भेटतौ? तकरा लेल मंदिर मे जो, प्रभुक किरपा पाबि आन्हर कैँ आँखि भेटै छै, नांगर के टाँग भेटै छै। भीमा नित्य हनुमानक मंदिर आब' लागल छल।

सुखदेव ड्राइभर गपसप करैत घड़ी दिस तकलक। ओ उठि क' ठार भ' गेल आ बाजल—"हमर ड्यूटी का टेम हो गइल। अच्छे, बटोही तूँ समय पर आ जई ह'। हनुमान बाबा का किरपा से आज तोहर काज अवस्से होइ।"

सुखदेव ड्राइभर चलि गेल। मंदिर मे हनुमान भक्तक आबाजाही लगले छल। भीमा अनठेकानी बाजब शुरू केलक—"घुघरू बाजे आठ बजे, घुघरू बाजे आठ बजे राति मे।"

भीमा फेर हनुमानजी कैँ प्रणाम केलक आ विदाह भ' गेल। मंदिरक हनुमान भक्त ओकर गलमोच्छा सँ बेसी ओकर सिनुरक ठोप कैँ निहारैत छल।

भीमा द्वारा बाजल वाक्य जे 'घुघरू बाजे आठ बजे राति मे' सुनि बटोही आ

पुजारीजी साकांक्ष भ' एक दोसराक आँखि मे तकलनि। एकरा बुझ' लेल कनेक पाछाँ जाय पड़त।

भुखन सिंहक अन्तिम इच्छानुसार हुनक मृत शरीर कैँ गंगा नदीक तेज धार मे प्रवाहित क' देल गेल। चमेलीरानीक टोलीक प्रत्येक सदस्यक आगमन अद्‌भुत रूपें अहि संसार के भेल छलै। ओ सभ प्रायः एक नवीन संस्कृति आ परम्पराक निर्माण करताह। सम्प्रति मे ककरों ने बुझल रहैक जे भुखन सिंहक अन्तिम क्रिया अर्थात् सराध कोना कयल जाए। संगहि ककरो ततेक समय कहाँ छलैक जे एकर खोजबीन करितय। गुलाब मिसिरक भयक भूत चारू कात पसरल छलै। कखनहुँ ओकर आक्रमण भ' सकैत छलै।

तैँ ओ सभ कियो हाथ जोड़ि आकाश मे विद्यमान परमेसर कैँ प्रणाम केलनि आ प्रार्थना केलनि–"हे भगवान! भुखन सिंहक आत्मा कैँ शान्ति देबनि।"

चमेलीरानी, अर्जुन आ बज्जर कका संगे वापस अड्डा पर अएलीह। चाय-बिस्कुटक ऊपरान्त बन्द घरमे भुखन सिंहक टेप निकालल गेल। टेप चालू भेल–"चमेली बिटिया, हमरा कोनो अदृश्य शक्ति आभास द' रहल अछि जे पृथ्वी पर हमर आयु शेष भ' चुकल अछि। ओहुना हमर सभहक पेशा मे स्वाभाविक मृत्यु ककरो-ककरो नसीब होइत छै। तैँ टेपक मार्फते हम अपन अंतिम इच्छा कैँ प्रगट क' रहल छी।

–"हम एकटा ट्रस्ट बनौने छी। चेयरमैन छथि रिपुदमन नारायण सिंह। ई हमर असली नाम छी। हमर जन्म कुसुमपुरा ग्राम जिला भागलपुर मे भेल। सैकड़ों गामक जमीन्दारी आ विशाल महलनुमा घर हमर सम्पति छल। हमर पिता दू भाइ छलाह। हमर चाचा दुष्ट छला। जखन हमर उमेर छह वर्षक छल ओ हमरा समक्ष किछु लठैतक मददि सँ हमर पिता, हमर माता, जेठ दू भाय तथा जेठ एक बहिनक हत्या क' देलक। हमर विधवा बुआ हमरा कोना बचौलनि, कोना क' भागलपुर शहर मे रखलनि आ पालन-पोषण केलनि से कहब आवश्यक नहि बुझि पड़ैत अछि। मुदा, हमरा समक्ष बस एकहि दृश्य सदिकाल वर्तमान रहैत छल हमर परिवारक निर्मम हत्या।

–"बुआक मृत्यक ऊपरान्त हम संगठन बनेलहुँ, टोलीक निर्माण केलहुँ आ उचित अवसर देखि चचाक सम्पूर्ण परिवारक संग बदला चुकेलहुँ। मुदा तकर बाद हम बनि गेलहुँ डकैत आ एखन तक बनल छी भुखन सिंह डकैत। डकैत बनलाक ऊपरान्त हमर जीवन मे एक रिक्तता, एक अभाव सदिखन बनल रहल। ओहि

अभावक निदान चमेली बिटियाक आगमनक बाद भेल। बेटी, अहाँक भाव आ विचार सँ हमरा एकटा उद्देश्यक प्राप्ति भेल। हमरा जीवन मे थोड़ेक विविधता, थोड़ेक प्रसन्नता भेटब आरम्भ भेल।

—"हमरा नाम सँ बनल ट्रस्टकेँ हम बदलि देल अछि। वसियतनामा सेहो बना देल अछि। पटना हाइकोर्ट सँ ओकर म्युटेसन सेहो भ' चुकल छै। ओ बस कानूनी दस्ताबेज अही सेफ मे अहाँ कैँ राखल भेटत।

—"नवीन बनल ट्रस्टक नाम थिक 'हर हर महादेव ट्रस्ट'। एकर मुख्यालय भेल कैलाश कुंज भवन, नौलखा मंदिरक समीप, बैद्यनाथ धाम। एकर पंजियन संख्या, वकील आ ऑडिटर सभ किछु लिखित मे अछि। ट्रस्टक चेयरमैन (चेयर मिसेज) भेलीह चमेलीरानी। बोर्ड ऑफ डाइरेक्टर्स मे छथि अर्जुन, बज्रनाथ, शालिग्राम, बेबी सुकोरानी आ सहदेव। ट्रस्टक सभ विधा कानूनी आ ऑडिट अपटूडेट अछि।

—"अहि अड्डा कैँ कोनो कारणें छोड़' पड़ए त' कैलाश कुंज भवन कैँ मुख्यालय बनायब। बज्रनाथ आ शालिग्राम कैँ हम अहाँ कैँ अधीन सौंपि रहल छी। ओ दुनू हमर दुनू आँखि रहला अछि।"

टेप समाप्त भेल। अर्जुन सेफ मे राखल सभ स्टाम्प पेपर कैँ निरीक्षण केलनि। फेर सभ कियो गंगाक कछेर मे बनल स्थान पर आबि बसैत गेलाह। सभ अपन मानसिक संतुलन कैँ स्थिर करबा मे लागि गेलाह।

ठीक ओहि समय मे पन्ना भाइ अपन टू सीटर मोटर लंच पर असगरे पहुँचलाह। पन्ना भाइक चेहरा पर बदहवासी व्याप्त छल।

पन्ना भाइ कैँ आदरपूर्वक आनल गेल तथा बैसाओल गेल। चमेलीरानी हुनका भुखन सिंहक मृत्युक समाचार देलनि। पन्ना भाइ चुप भ' गेलाह। हुनक चेहरा उदास भ' गेलनि।

थोड़ेक कालक पश्चात पन्ना भाइ भरि गिलास जल पिलनि आ कहब आरम्भ केलनि। गुलाब मिसिरक जीवन वृत्तांत, गुलाब मिसरक भुखन सिंह कैँ हत्या करैक आदेश, ध्रुवा द्वारा कयल गेल कृत्य सब किछु विस्तार मे ओ सुना गेलाह। अन्त मे बजलनि—"चमेली बिटिया, हमर ई औकात ना होइ जे हम भाइ साहेब बला स्थान ले सकब। मुदा हम त' साफ-साफ इतना कहबे करब जे हमर तोहार साथ बनी। भाइ साहेब के मारफद हमरा सब बात का खबरवा। हम साथ-साथ रहेला आ काज करेला तैयार बानी। आब हमरा जानै के बा कि बिटिया

का का विचार ह' ?"

चमेलीरानी अत्यधिक नम्र होइत कोमल स्वर मे जबाब देलनि–"पन्ना कका, आब त' ददू दुनिया मे नहि रहलाह। आब, हुनकर स्थान अहाँ ग्रहण करी से हमर निवेदन।"

–"तबे ठीक। हम अपना पोस्ट कैँ स्वीकार केली। आब पन्ना का बदला दुश्मन से चुकता होइ। औरू सुनल जाओ। दुश्मन कैँ पता नहिखे की भुखन भाइ मर गेलन। मुदा दू एक दिन मे ओकरा अवस्से पता हो जाई। सबसे जरूरी बा कि अड्डा के बदला करीं। हमनी के अड्डा के सेहो तोड़' के पड़ी।"

चमेलीरानी कैलाश कुंज भवनक स्थान आ पता पन्ना भाइ कैँ देलनि। चारि दिनक बाद बैद्यनाथ धाम मे बैसार होयत तकरो निश्चय भेल।

पन्ना भाइक टू सीटर लंच ओहिठाम रहि गेल। ओ एकटा मारूती कार सँ शालिग्राम संगे प्रस्थान केलनि।

समयानुकूल भोजन-भात भेल। फेर भुखन सिंहक अड्डाक वस्तु कैँ तीन-चारि मोटर लंच द्वारा उघब शुरू भेल। निर्णय भेल रहै जे सुलतानगंज तक गंगा नदीक मार्ग सँ आ ओकरा बाद सड़क मार्ग सँ सभ किछु कैलाश कुंज भवन तक पहुँचाओल जाय। बज्रनाथक देखरेख मे भरि दिन आ भरि राति मे उघैया सम्पन्न भ' गेल। चमेलीरानी सेहो कैलाश भवन लेल प्रस्थान केलनि।

पन्ना भाइ शालिग्रामक संग अपन अड्डा पर पहुँचलाह। पन्ना भाइक मुख्य अड्डा दिल्ली सँ कलकत्ता जेबाक मुख्य सड़क यानी हाइवे पर अवस्थित छल। मुख्य अड्डा सँ एक किलोमीटर आँगा एकटा लाइन होटल छलै जकर नाम छलैक 'अतिथि सेवाधाम'। ओतए पेट्रोल पम्प सेहो कार्यरत रहैक। ओ होटल उग्रदेव नामक व्यक्तिक देखरेख मे चलैत छल। मुख्य अड्डा सँ एक किलोमीटर पाछाँ चूड़ामल मानमल विश्राम गृह ढाबा छल। ओहू ठाम पेट्रौल पम्प आ ट्रकक मरम्मतीक कारखाना छल। एकर जेनरल मैनेजर छल पवन कुमार बटोही।

अतिथि सेवाधाम आ चूड़ामल मानमल विश्राम गृह पन्ना भाइक सम्पत्ति छल। हाईवे सँ जाइबला नित्य हजारो भरल आ खाली ट्रक तथा अन्य वाहन अहि स्थान पर अवस्से रुकैत छल। डीजल लेबाक हो, मामूली मरम्मतीक काज हो, भोजन चाही, डाक्टर आ दवाइक जरूरी हो तथा विश्रामक नीक व्यवस्था चाही, सभ किछु सुव्यवस्थित इंतजाम एतए उपलब्ध छलैक। ट्रक अथवा अन्य वाहनक मालिक एक निश्चित रकम खुशी-खुशी भुगतान करैत छलाह जकरा एवज मे

वाहनक सुरक्षित आवागमनक गैरन्टी भेटैत छलैक। अहि तरहें अहि दुनू स्थान सँ पन्ना भाइ कँ महिना मे लाखो टाकाक आमदनी होइत छलनि।

पन्ना भाइक आदेश पाबि सैकड़ो प्रशिक्षित मजदूर किछुए घंटा मे मुख्य अड्डाक प्रत्येक वस्तु कँ उघिक' अहि दुनू स्थान मे पहुँचा देलक। मुख्य अड्डा पर रहि गेल खाली भेल भवन आ निर्जन बाटिका।

ओकरे दोसर दिन जे उम्मीद छलै, पन्ना भाइ आ भुखन सिंहक अड्डा पर गुलाब मिसिरक फौजक हमला भेल। सैकड़ो पुलिस दल आ आरपीएफक जवान मिलि क' सभ किछु कँ ध्वस्त क' देलक। अन्धाधून फायरिंग मे किछु निर्दोष मुसाफिर सेहो मारल गेल। बुलडोजर सँ मकान, बाटिका आ अन्य प्रतिष्ठान कँ मटियामेट क' देल गेलै।

गुलाब मिसिरक समक्ष विस्तृत रिपोर्ट पहुँचलै। रिपोर्ट मे मुख्य बातक चर्चा छलै जे कोन-कोन प्रयासें भुखन सिंहक आ पन्ना भाइक सैकड़ो डकैत कँ परास्त कयल गेल। सब डकैत मारल गेल। भागि रहल भुखन सिंह आ पन्ना भाइक शरीर कँ गोली सँ छलनी क' देल गेल। चिथड़ा भेल लाश कँ चिन्हब कठिन भ' गेलैक।

गुलाब मिसिर कँ अति प्रसन्नता भेलैक। अकर्मण्यता आ भ्रष्टाचार मे आकंठ डुबल पुलिस आ खुफिया विभाग आफिसरक रिपोर्ट सँ त' गुलाब मिसिर कँ प्रसन्नता हेबैक चाहैत छलै। ओकर माथक चिन्ता समाप्त भ' गेलै। प्रान्त डकैतक खौफ सँ मुक्त भ' गेल। चारू कात अमन-चैनक साम्राज्य स्थापित भ' गेल।

चमेलीरानी बज्जर ककाक संग कैलाश कुंज भवन पहुँचलीह। तीन एकड़ मे पसरल कैलाश कुंज भवनक परिसर। बीच मे दू मंजिला भवन आ चारू कात गाछ वृक्ष आ लता पुष्प सँ सुशोभित। दू मंजिला भवन मे लगभग चालीस गोट कोठली, ऊपर-नीचा पैघ हॉल आ छोट सन तहखाना। बज्जर कका आ चमेलीरानीक देखरेख मे सभ काज सम्पन्न होब' लागल। भुखन सिंहक अड्डा सँ सभ वस्तु, सभ वाहन तथा सभ कर्मचारी कँ अपन-अपन स्थान भेटि गेलैक। सुरक्षाक अभूतपूर्व इन्तजाम कयल गेल। मुदा कैलाश कुंज भवन डकैतक अड्डा नहि बनि एकटा सुन्दर एवं पवित्र आश्रमक सवरूप ग्रहण क' लेलक।

निर्धारित तिथि क' सन्त, महात्मा, संन्यासी आ संन्यासिन उपस्थित होइत गेलाह। माघक पूर्णिमा। पहाड़ी प्रदेशक सर्द बसात। अभ्यागत कँ खीर, पूड़ी, तरकारी, फल आ मिष्ठान सँ तृप्त कयल गेल। प्रत्येक आगन्तुक आब गेरुआ वस्त्र आ गला मे रुद्राक्षक माला धारण कयने छलाह। सभहक माथ पर टोपी आ पयर

मे खराम छल। मात्र भाटाजी सभसँ भिन्न अपन पुरना ड्रेस अर्थात् उज्जर पेन्ट आ कारी कोट मे छलाह। हुनक लाचारी छल। ओ एखनहुँ केजीबीक अधिकारी जासूस छलाह।

चमेलीरानीक दल-बल मे रहथि अर्जुन, बज्रनाथ, शालिग्राम, नकुल, सहदेव, बेबी सुकोरानी, मैना, युधिष्ठिर, भीमा आ वीएन भट्टाचार्य उर्फ भाटाजी। पन्ना भाइक संग आयल छलाह उग्रदेव आ पवन कुमार बटोही।

अध्यक्ष पन्ना भाइ कँ बनाओल गेल। फेर तीन दिन आ तीन राति तक विचार-विमर्श भेल। चमेलीरानी कँ पन्ना भाइक सुक्ष्म आ कुशाग्र बुद्धिक परिचय भेटलनि। विचार एवं उद्देश्य जखन स्थिर भेल तखन सामूहिक रूपे एकर अनुमोदन कएल गेल। चमेलीरानी कँ परिचालन करबाक पूर्ण अधिकार देल गेलनि। हुनक आदेश कँ अनुशासित भ' पालन करब, सैह सभ अपन कर्तव्य बनौलनि। योजना मे फेर-बदल मात्र चमेलीरानी टा क' सकैत छथि, तकरो निर्णय लेल गेल।

आब अभियानक कार्यक्रमक अनुसार कार्य आरम्भ भेल। 'लोक शक्ति जागरण परिषद'क गठन भेल। एकर संविधान बनल एवं चमेलीरानी एकर अध्यक्षा बनलीह। चमेलीरानी अपन सम्बोधन मे कहलनि—"अगिला वर्ष मार्च मे चुनाव होयत। एक वर्षक समय अछि। लोक शक्ति जागरण परिषद सक्रिय राजनीतिक पार्टी बनि आगामी चुनाव मे भाग लेत आ भोटक माध्यम सँ हम शासनक अधिकारी बनब। यद्यपि प्रान्तक विकास करब हमर अन्तिम इच्छा एवं उद्देश्य रहत, मुदा भोटक राजनीति कँ हम भोटक गांडीव द्वारा प्राप्त करब एवं दुश्मनक सत्यानाश करब से हमर कार्य-योजना अछि।

—"भोट कोना प्राप्त होअय, मात्र एकटा लक्ष्य कँ ल' क' लोशजाप पार्टी निर्माण भेल अछि। सम्प्रति राष्ट्रहित वा लोकहित आदि विषय गौण भ' चुकल छै। ताहू पर सँ अपन देशक जनता अबोध, अज्ञानी आ शिशु सदृश्य सरल छथि जकरा ठकब कोनो कठिन कार्य नहि। जाति, उपजाति, अगाड़ी-पिछाड़ी, समुदाय, धर्म आदिक उहा-पोह मे लोक चेतना फंसि चुकल अछि तँ ककरो भविष्यक दर्शन नहि भ' पबैत छैक।

—"तखन जेना कि परिस्थिति छै, तहिना हमहुँ भोटक राजनीति करब। धूर्तताक तीन टांग, धोखा देब, प्रपंच करब आ कुटिलता। हमरा सभ लोक शक्ति के जगायब। प्रान्तक विकास कोना होए से सभ कँ बुझायब हमरा सभहक कार्य रहत। मुदा ओहू बात लेल तैयार रही जे दुश्मन चलाक अछि। त' चलाकी सँ

ओकरा परास्त करी। हमर ध्येय पवित्र अछि आ सफलता प्राप्त करबा मे बहुत कठिनता नहि होयत से पक्का मानल जाए।"

चमेलीरानीक शब्दक मर्म सँ सभहक हृदय मे हिलकोर उठ' लागल। सभ कियो हुनक आदेशानुसार काज करबाक हेतु तत्पर भेलाह। सभा मे सबसँ डपोरशंख छल भीमा। ओहो अपन गलमोच्छा कँ पिजबैत बाजल—"हमर दिमाग मे सभ बात फिट क' गेल।"

सभा समाप्तिक घोषणा भेल। सभ कियो बाबा बैद्यनाथक दर्शन हेतु मंदिर पहुँचैत गेलाह। भाटाजी अन्डरवियर पहिरने, माथ मे सिन्दुरक ठोप केने आ हाथ मे पुष्प-माल लेने पार्वतीक मंदिर मे प्रवेश केलनि। नकुल आ बेबी सुकोरानी गंठजोड़ केने मंदिरक परिक्रमा कर' लगलाह। चमेली आ अर्जुन गायत्री मंदिरक नीचा फर्स पर बैसल छलाह। नकुल बेबी सुकोरानी संगे गठजोड़ केनहि ओतए पहुँचि क' कहलक—"भौजी, भैया संगे गंठजोड़ क' मंदिरक परिक्रमा क' लिअ। श....श...शर्तिया, सालक अन्दरे बेटा हैत। पंडाजी सैह कहलनि अछि।"

चमेलीरानी भभा क' हँसी पड़लीह आ बेबी सुकोरानी दिस ताक' लगलीह। बेबी सुकोरानीक बिहुँसलि ठोर पर हँसी छिड़िया रहल छल जेना महामाया प्रकृतिक सभ गुण कँ समेटि शिव तत्त्व मे अपना कँ समर्पित क' चुकल होथि।

सभ अपन-अपन गंतव्य स्थानक लेल प्रस्थान केलनि। चमेलीरानी द्वारा संचालित पाँचो कैम्प के बन्द क' देल गेल छल। लगभग तीस हजार युवक आ युवती प्रशिक्षित भ' चुकल छलाह। अहि फौज कँ प्रखंडक प्रत्येक गाँव मे तथा शहरक प्रत्येक वार्ड मे स्थापित कयल गेल। ई फौज पूर्णतः अनुशासित आ समर्पित छल। एकर बागडोर सहदेव आ नकुल के देल गेल। ऊपर सँ सहायतार्थ शालिग्राम कँ सेहो सहदेव आ नकुलक संग कएल गेल। मुदा चमेलीरानी शालिग्राम कँ निर्देश देलनि जे अपना कँ सोनपुरक आसपास राखथि। हुनक सहायताक प्रयोजन भ' सकैत अछि।

भाटाजी अपन प्रतिभाक बले मोबाइल सदृश्य छोट-छोट यंत्रक आविष्कार क' प्रत्येक मुख्य-मुख्य सदस्य कँ द' चुकल छलाह। लेकिन संचारक व्यवस्था अहि तरहें छल जे सभ अपन संवाद भाटाजी के निर्मली मे नीहारिका रेडीमेड स्टोर्स मे पहुँचौथिन्ह। भाटाजी ओहि संवाद कँ चमेलीरानीक कैलाश कुंज भवन तक पहुँचौता। चमेलीरानीक आदेश भाटाजीक मारफद सभ कँ उपलब्ध होयतनि। अहि तरहें हिनक संचार व्यवस्था मे अतिक्रमणक गुंजाइश कम भ' जायत।

चमेलीरानी एहि बातक तजबीज केलनि जे गुलाब मिसिरक समस्त प्रहार भुखन सिंह आ पन्ना भाइक ऊपर भेल। एकर अर्थ भेल जे चमेलीरानी एवं हुनक योजना द' गुलाब मिसिर पूर्णतः अनजान अछि। तैँ चमेलीरानी मुम्बइ स्थित मिस्टर आर. एन. कश्यप सँ सम्पर्क केलनि। हुनक योजना मे एक मैथिली भाषाक दैनिक समाचार पत्र होयब नितांत आवश्यक छल। कश्यपजी मुम्बइक एक प्रतिष्ठित अंग्रेजी दैनिक समाचार पत्रक इन्जीनियर छलाह। आधुनिक प्रेस मसिनरीक ओ पंडित सेहो छलाह। बज्जर कका कैँ सभ गप बुझा कैँ चमेलीरानी हुनका मुम्बइ कश्यपक ओहिठाम पठौलनि।

मुम्बइ सँ कश्यपजी अयलाह। पूर्व मे संचालित पाँचो कैम्प मे बेगूसराय शहरक सबसँ नजदीक एक कैम्पक स्थान चयन भेल। अत्याधुनिक प्रेसक स्थापना कयल गेल। एतहि सँ योजनानुसार 'स्वयं प्रकाश' नामक मैथिली दैनिक समाचार पत्र प्रकाशनक सभ व्यवस्था कयल गेल। सभ किल-काँटा दुरूस्त क' आगामी जुलाइ सँ दैनिक पत्र प्रकाशनक मुहूर्त राखल गेल।

चमेलीरानी बेबी सुकोरानी आ मैना सँ एक खास विषयक वार्तालाप केलनि। हुनका दुनू कैँ भार देल गेल जे दस-बारह गोट नाटक मंडलीक टीम कैँ तैयार करथु। एखनहुँ नाटकक मंचक महत्त्व खास क' देहाती क्षेत्र मे अधिक रहतैक। ओ नाटक मंडली प्रान्तक सभ भाग मे घुमि-घुमि क' कार्यक्रम देखौताह। तकर अतिरिक्त एक अलग कार्यक्रमक आयोजन होउक जे आगामी सोनपुर मेला मे अपन कौतुक कैँ प्रगट करत। एकरा लेल तीस परम सुन्दरी युवतीक चयन कएल जाए। चयनित युवती कैँ नृत्यकलाक विशिष्ट शिक्षा देल जाए। बेबी सुकोरानी आ मैना चमेलीरानीक योजना कैँ बुझि अपन काज मे लागि गेलीह।

सभठाम प्रचूर धन चाही। एकर सभटा भार अर्जुन कैँ देल गेलनि। भीमा पूर्ववत अपन स्थान अर्थात् सीएमक बडीगार्डक फौज मे काज करैत रहताह।

चौहटा मे प्रसिद्ध काली मंदिर छल। पन्ना भाइ घुघरू बाबाजी बनि ओहि स्थानक प्रसिद्ध तांत्रिक बनि पदस्थापित भेलाह। ओहि मंदिर मे गाजा पिनहारक एकटा समूह छल जाहि मे पन्ना भाइक स्पेशल ट्रेन्ड कयल चेला सभ छल। ओ सभ केहनो आपातकाल कैँ मुकाबला करै मे पूर्णतः सक्षम छल।

राजा बजारक चौमोहानी स्थित हनुमान मंदिर मे उग्रनाथ पुजारी बनि भक्त समुदायक आदरणीय, कार्यरत भ' चुकल छलाह। ओहीठाम पवन कुमार बटोही सँ हमरा सभहक भेंट भ' चुकल अछि जे सुखदेव ड्राइभरक कृपा सँ सरकारी

ड्राइभरीक नौकरी प्राप्त केने छल। ओहि मंदिर मे भीमा नित्य पूजा अर्चना हेतु अबैत छल। ओ सांकेतिक भाषा मे यथा आठ बजे राति मे घुघरू बाजत पुजारी आ बटोही के सूचना द' आयल रहए जे आवश्यक बैठक पन्ना भाइक ठेकाना पर होएत।

वर्तमान अभियानक नायक छलाह युधिष्ठिर। हमरा सभ हुनकहि लग पहुँची आ तजबीज करी जे ओ की क' रहला अछि?

युधिष्ठिर पहुँचलाह मंत्री आ विधायक नगरी। अनगिनत पुलिस, ब्लैक कैट, बडीगार्ड आओर चमचा-चमचीक भीड़ सँ चहल-पहल। सम्पूर्ण प्रान्तक शक्ति आ सम्पतिक ऐश्वर्य सँ परिपूरित नगरी चाँदी जकाँ झलकि रहल छल। ओहि नगरी केँ देखि पृथ्वी पर इन्द्रपुरीक कल्पना जेना सकार भ' उठैत छल।

ओकर काते कात बाजार पसरल रहैक। भोजन करबाक, कपड़ा धोबाक, तेल साबुन किनबाक तथा जूत्ता पालिस करबाक दोकानक पाँती। ओही दोकानक पाँती मे छल 'चम्पा बेल' नामक एकटा दोकान। ओकर मैनेजर छल औंठिया जूल्फीबला मनोहर पंडित। मनोहर युधिष्ठिरक चेला छल। युधिष्ठिरक पसरल कारोबार मे चम्पा बेल दोकान सेहो छल। चम्पा बेलक आगाँ मे बिकायत छल आइस क्रीम, केक, पाव रोटी, पेप्सी, कोकाकोला तथा अही तरहक अनगिनत पेय आ खायबला वस्तु। चम्पा बेलक पाँछा छल एकटा सजल हॉल। कम रोशनी मे नुकायल आ झाँपल हॉल कुर्सी टेबुल सँ भरल छल। चम्पा बेलक ओहि हॉल मे प्रसिद्ध चाननबला ठर्रा आ भूजल मांस बिकाइत छल। आठ बजे रातिक बाद ओहि हॉल मे स्थान प्राप्त केनाइ नसीबक बात छलै। ठर्रा आ मांसक बिक्री सँ चम्पा बेल केँ बड़ नीक आमदनी होइत छलैक।

हॉलक पाँजर मे एकटा तीन कोठलीक फ्लैट छलै जतए चम्पा बेलक मैनेजर मनोहर निवास करै छल। युधिष्ठिर आ हुनक संग आयल तीन नर्तकी ओही मनोहरबला फ्लैट मे अपन आवास बनौलनि।

युधिष्ठिर एक खास मुदा चरफरिया मंत्री केँ फँसेबाक फिराक मे लागि गेलाह। मददगार भेलनि मनोहर। नर्तकीबला बोर फेंकल गेल आ फँसि गेला चौहान नामक सहकारिता मंत्री।

चौहान ने क्षत्री छल आ ने खत्री। ओकरा सभ जाति मे एके रंग प्रवेश छलै। चौहान विधुर छल आ राजनीतिक तूफान मे ओ आन प्रान्त सँ फानि क' आयल छल। ओकर चानि परक केश उड़ल रहैक मुदा छल ओ कट्टर सोसलिस्टक नेता।

ओ अही प्रान्त मे चुनाव जीत क' विधायक बनल छल तथा अही प्रान्तक सेवा करबाक प्रण लेने छल। प्रान्तक सीएमक इनर सर्किलक ओ एकटा रत्न छल।

कीर्तमुखक जेठ बेटा युधिष्ठिर साधारण मनुक्ख नहि छल, महारथी छल। मास, दू मासक समय मे चौहान युधिष्ठिरक प्रगाढ़ मित्र बनि गेल। दू देह आ एक आत्मा। युधिष्ठिर चौहान कैँ 'मंत्रीयार' कहि सम्बोधन करैत छल त' चौहान युधिष्ठिर कैँ 'पिआरा' कहि सोर पाड़ैत छलैक। चौहानक प्रत्येक काज मे युधिष्ठिरक सहयोग आ परामर्श आवश्यक भ' गेल रहैक।

युधिष्ठिर आब दिन-राति चौहानक सेवा मे समय बितबैत छलाह। चाननबला ठर्रा सँ मस्त आ युधिष्ठिर द्वारा आनल युवतीक गाल सहलाबैत-सहलाबैत चौहान आत्मानन्द मे पहुँचि विभोर भ' जाइत छल। ओ युधिष्ठिरक प्रति कृतज्ञ छल। मित्र हो त' एहन जे सभटा खुशीक खजाना दुआरि पर आनि दैत होअय।

कालेक्रमे युधिष्ठिर चौहानक संग आन आन मनीस्टरक ओहिठाम जाय लागल छल। छोट-पैघ भोजक निमंत्रण पाब' लागल छला। थोड़बेक समयक बाद ओ सीएमक आवास मे सेहो बेधरक घुम' लागल छला। सभ गार्ड चौहान कैँ सलाम करैत छलै। युधिष्ठिर कैँ ओहि चमचम चमकैत नगरीक बहुत रास गप्पक ज्ञान सहजहि भ' गेलनि। ओ पूर्ण सचेष्ट छलाह आ अपन उद्देश्यक पूर्तिक हेतु अवसरक प्रतीक्षा क' रहल छलाह।

एक दिनक घटना थिक। चौहान प्रान्तक चौमुखी विकास करबाक प्रयोजन पर भाषण कर' लागल। सुननिहार छल युधिष्ठिर आ युधिष्ठिर द्वारा आनल अनारकली नामक एकटा नर्तकी। चौहान छल अपादमस्तक सोसलिस्ट। जोश मे आबि जरूरत सँ बेसी चाननबला ठर्रा पीबि गेल। ओकर माथक कोनो खास नस खिंचा गेलैक। ओ अनारकली कैँ धिआन सँ देख' लगाल। ओकर वाणी अवरुद्ध भ' उठलै आ आँखि सँ अश्रुपात होब' लगलै।

युधिष्ठिर पुछलनि—"मंत्रीयार, की बात छै? अहाँ एकाएक भावुक किएक भ' गेलौं अछि?"

चौहान नोर पोछैत जवाब देलक—"हम भारतीय नारीक सौन्दर्यक अवलोकन क' रहल छी। किछु मास पहिने हम विश्व भ्रमण मे गेल रही। सम्पूर्ण विश्वक महिलाक रसास्वादन केलहुँ। मुदा अपन देशक बराबरी औरो नहि। एतुका महिला सौन्दर्यक मल्लिका छथि। अहि अपूर्व छटा, मादकता, मधुर संभाषण आ स्वर्गक परीक स्निग्धता रूपी गरिमा आओर कत' पाबी। सैह देखि आ पाबि हृदय

पल्लवित भ' उठल आ आँखि सँ अश्रुपात होम' लागल।"

युधिष्ठिर अनुमान केलनि जे ठर्रा एकर माथ पर चढ़ि ताण्डव क' रहल अछि। यैह घड़ी ठीक होयत जे एकरा ओहि रस्ता पर हुलका दी जकरा हेतु चमेलीरानी हमरा अहि स्थान पर नियुक्त केलनि अछि। ओ अपन वाणी मे मिसरी घोरैत कहलनि–"मंत्रीयार, एतए तँ मात्र एकटा अनारकली छथि। अहाँ कही त' हम मेनका, उर्वसी, तिलोत्तमा सदृश अनेकों सुन्दरी कँ लाइन मे ठार क' दी। अहाँक सौन्दर्यक चिर-पिपासाक अन्त क' दी। मंत्रीयार, अहाँ रसिया छी से हम चिन्हलहुँ। जँ अहाँ तत्पर होइत त' हम खजुराहो भीति चित्र कँ अहीठाम साकार क' दी।"

–"आह! मुदा से संभव कोना होयत, पिआरा?"

–"तकर अहाँ चिन्ता नहि करियौक मंत्रीयार। मात्र हमरा आदेश देल जाओ। हमर एक अभिन्न मित्र फिल्म उद्योग मे छथि। हुनकर टीम मे तीसटा अनुपम सैन्दर्यक युवती छन्हि। ओ देश-विदेश मे सांस्कृतिक कार्यक्रमक आयोजन करै छथि। हुनक सब युवती शिष्ट, शिक्षित आ कामक उच्चकोटिक कलाक प्रदर्शन कँ निहारि महाचतुर नायिका छथि। देखबैक त' मोन गद्गद् भ' जायत। जीवनक आतुरता सभ दिनक लेल समाप्त भ' जायत।"

–"से सभ गप्प बुझलहुँ। मुदा हुनका सभ कँ त' कोनो अवसरे पर आनल जा सकैत अछि ने मंत्रीयार?"

–"से उचित अवसर त' ठामे अछि।"

–"अधैर्य नहि करू, पिआरा। ओ कोन अवसर होयत तकर खुलासा करू?"

–"मात्र दस दिनक बाद सोनपुरक मेला आरम्भ हेतैक। अहाँ ओकर उद्घाटन सीएमक कर-कमल सँ करेबाक प्रबंध करबा दिऔक। ओही शुभ मंगलमय अवसर हम अपन मित्र हुनक टीम कँ प्रदर्शन करबाक निमंत्रण द' बजबा लेबनि। सोनपुर मेला हमर प्रान्तक प्राचीन वैभवक धरोहर छी। ओकर गरिमाकँ उजागर करब हमर कर्तव्य थिक।"

ठर्राक नशा मे कखनहुँ काल चमत्कार भ' उठै छै। युधिष्ठिरक मंत्रीयार उताहुल होइत पुछलनि–"खर्च कतेक पड़तैक?"

–"मात्र दू सँ तीन लाख। अहाँ जँ अपन पियास मिझेबाक लेल निजता चाहबै त' एक लाख औरो जोड़ि दिऔक।"

चौहानक मोन चपचपा गेलै, जीह्वा सँ पानि खस' लगलै। ओ अनारकली कँ

आलिंगन करबा लेल आगाँ बढ़ल की युधिष्ठिर ओहि स्थान सँ बाहर निकलि गेलाह।

कािल्ह भेने चौहान आ युधिष्ठिर सीएमक आवास पर पहुँचैत गेलाह। सीएम आवासक चहल-पहल देखिते बनैत छल। ओ अपना आप मे एक अपूर्व स्थान छल। चौहान सोझे सीएमक कक्ष मे प्रवेश केलनि। युधिष्ठिर बाहर मे राखल अनेकों सोफा आ कुर्सीक पाँती लग जा क' ठार भ' गेला। बडीगार्ड भीमा अपन ड्यूटी पर तत्पर छल। दुनू एक दोसरा सँ अपरिचिते छल। ठीक तहिखन युधिष्ठिर एकटा अद्भुत बात देखलनि। सीएमक निवास ऊपरका मंजिल पर छलनि। ओतए सीएमक मोस्ट पर्सनल सेक्रेटरी मिस माउल्डी कैँ छोड़ि ककरो आनक जेबाक आदेश नहि छलै। सीएमक पत्नी श्रीमती ननकिरबी देवीक निवास दोसर सटल मकान मे छलनि।

सीएमक ऊपरका मंजिल सँ उतर' बला सीढ़ीक ऊपर मे माउल्डी बैसलि छलीह आ टकटकी लगा क' भीमा कैँ निहारि रहल छलीह। माउल्डी द' युधिष्ठिर कैँ चौहान सँ सभटा सुनल छलै। माउल्डी प्रायः नवका-नवका शिकारक खोज मे सदिकाल रहैत छलीह। माउल्डी कैँ भीमाक प्रति प्रबल आकर्षण एवं वासनाक प्रचण्ड भूख कैँ देखि युधिष्ठिर कोनो गम्भीर सोच मे पड़ि गेलाह। ताबे चौहान आबिक' युधिष्ठिर कैँ टोकि देलक–"पिआरा, कोन दुविधा मे छी? अरे! खुशी हौउ। सभकाज भ' गेल। मेलाक उद्घाटन सीएम करताह तकर स्वीकृति भेटि गेल। तीन लाख टाकाक सेहो प्रबन्ध भ' गेल। सीएमक कार्यक्रमक अधिसूचना आइए निर्गत भ' जायत। जन-सम्पर्क विभाग कैँ आइए सभ इन्तजाम करबाक लेल कहि देल जेतैक। आब त' अहाँ प्रसन्न छी ने? अगिला सभ कार्यक्रम त' अहींक जिम्मा अछि। ओना मेलाक इन्चार्ज आ सभ किछुक दायित्व सीएम हमरे कान्ह पर राखि देलनि अछि।"

–"वाह, वाह मंत्रीयार। अहाँ सन बुधियार मंत्री औरो दोसर के होयत? हम दुनू गोटे कािल्ह सोनपुर जा क' कार्यक्रमक स्थान चयन क' लैत छी। हम अपन फिल्मी यार कैँ आइए टेलीफोन सँ सम्पर्क क' सूचित क' दैत छियनि। आब कार्यक्रम भइये क' रहत।"

युधिष्ठिर आ चौहान लालबतीबला कार मे बैसि वापस अपन डेरा हेतु बिदा भेलाह। रस्ता मे युधिष्ठिरक माथ मे मात्र भीमा आ माउल्डी बला प्रसंग घुमि रहल छलै।

झारखंड राज्य मे तोपचाँची नामक एकटा प्रसिद्ध झील अछि। ओही झीलक सोझा दक्षिण, उड़ीसा राज्यक सीमा लग एकटा चर्च छै। चर्च करीब डेढ़ सौ वर्ष पुरान होयत। क्वीन विक्टोरिया जखन भारतक महारानी बनलीह तखने ओ चर्च बनल छल। पहाड़ी स्थान, छोट-छोट झाड़ी सँ भरल, उजरल आदिवासीक इलाका। उज्जर आ सुन्दर आकृतिक अँग्रेज जाति कैँ ई भग्नावशेष इलाका बड़ आकर्षित केलकै। चर्च बनलाक बाद झुण्डक झुण्ड पादरी आ नन आयल। स्कूल खुजल, अस्पताल बनल तथा एक नवीन नस्लक जन्म भेल। आदिवासी पुरुष आ अँग्रेज महिला तथा अँग्रेज पुरुष आ आदिवासी महिलाक संतान सँ ओ इलाका भरि गेल। अही कारी उज्जर वर्णशंकर जाति मे एक अलौकिक सुन्दर कन्याक जन्म भेल जकर नाम रहैक माउल्डी रवर्टसन।

माउल्डी मिसीनरी स्कूल मे पढ़ि राँची विश्वविद्यालय सँ स्नातक भेलीह। अनुसूचित जनजातिक बिहाड़ि मे ओ सोझे प्रखंडक हाकिम बनि गेलीह। माउल्डी तीन बेर बिआह केलनि। मुदा, फेर सँ घुमि मिस बनल रहलीह। पर पुरुष सँ स्वछन्द सहवास करब ओहि नस्लक मौलिक अधिकार छलैक। ओही उद्याम बेला मे माउल्डीक साक्षात्कार गुलाब मिसिर सीएम सँ भेल छलै।

चाइबासाक सर्किट हाउस। गुलाब मिसिर अपन पत्नी श्रीमती ननकिरबी देवी सँ आकछ भेल रहैत छल। कखनहुँ काल ओ प्रणयक विचार सँ ननकिरबीक कक्ष मे जेबो करैए त' ओम्हर सँ हनुमान मंदिरक प्रसाद चिबबैत घुमि अबैत छल। कयल की जाय? ननकिरबी देवी सँ तकरार केनाइक मतलब भेल अपन घरक इज्जत प्रतिष्ठा आ सीएमक कुर्सी सँ बंचित' होयब, तेँ चुपे रहैत छल।

माउल्डी कैँ देखिते देरी गुलाब मिसिरक हबस चोटायल साँप जकाँ फूफकार मार' लगलै। हिन्दी मे एकरे कहैत छैक 'नीली, गहरी आँखें'। माउल्डीक अँग्रेजबला उज्जर चमड़ी आ 'नीली आँखें' गुलाब मिसिर कैँ घायल क' देलकै। माउल्डी दिस सँ कोनो उजूर नहि रहैक। जखन सैंया भेल कोतबाल तँ माउल्डी प्रखंड मे किएक रहितथि। किछुए दिन मे डीएम बनि जिला मे अयलीह। मुदा, दुनू प्रेमी कैँ चैन कत'? माउल्डी डिप्टी कमिश्नरक ओहदा ल' सीएमक पर्सनल पीए बनि गेलीह। आब अँग्रेजी भाषा मे आयल पत्रक अँग्रेजी भाषा मे जवाब जाए लागल। किछुए दिनक बाद परिस्थिति औरो बदलल। गुलाब मिसिर बनि गेलाह जहाँगीर आ माउल्डी नूरजहाँ बनि प्रान्तक शासन कैँ चलब' लगलीह।

ओहि दिन रातिक आठ बजे युधिष्ठिर घुघरू बाबाक तांत्रिक मंदिर मे

पहुँचलाह। ओतए पहिने सँ उग्रदेव, बटोही आ भीमा आन अनेकों गांजा पिनहार चेला-चाटी संगेबाबा कैँ घेरने हुनकर घूर-धूआं क' रहल छल। मध्य रात्रिक जाइत जाइत सभ चेला चाटी प्रस्थान केलक। फेर भितरका कोठली मे सभहक बीच मंत्रणा शुरू भेल।

युधिष्ठिर सब बातक जानकारी पन्ना भाइ कैँ देलनि। सोनपुर मेलाक उद्घाटन सीएम करताह। ओतए जे सांस्कृतिक कार्यक्रम होयत ताहि मे सेहो भाग लेताह। तकर बाद माउल्डीक भीमाक प्रति जे उत्साह छल तकर चर्चा भेल। घुघरू बाबा एकर बारीकी कैँ बुझि युधिष्ठिर सँ सहमति देखौलनि। माउल्डी कैँ अपन कब्जा मे आनब अभियानक सफलता मे पैघ भूमिकाक निर्वाह करत। मुदा माउल्डीक भीमाक आकर्षण तथा ओकर लाभ प्राप्त करब अभियानक प्रारूप मे नहि छल। अस्तु, चमेलीरानी सँ एकर स्वीकृत लेब आवश्यक भ' गेल।

अविलम्ब भाटाजीक मार्फद चमेलीरानी सँ सम्पर्क स्थापित कएल गेल। पन्ना भाइ अपन तथा युधिष्ठिरक विचार सँ हुनका अबगत करौलनि। चमेलीरानी तुरत अपन स्वीकृति द' देलनि।

भीमाक बुद्धि थोड़ेक मोटगर छलै। तैँ बटोही आ उग्रदेव ओकरा खानगी मे ल' जाए क' सभटा गप्प कैँ ओरिया क' बुझौलनि। भीमा अपन गलमोच्छा कैँ पिजबैत बाजल—"अहाँ सभ आब निश्चिन्त रहियौ। हम सभ बात बुझि गेलियैक जे हमरा की-की कर' पड़तै।"

सोनपुर मेलाक उद्घाटन सँ एक दिन पहिलका गप्प छी। भीमा तैयार भ' क' ऐनाक लग ठार भेल। ओकर प्राण पिआरी रधिया कटेली चम्पा नामक तेल माथ मे लगबैत रहैक। कटेली चम्पाक खाली भेल शीशी ओतहि पड़ल छलैक। कटेली चम्पाक शीशी देखि भीमाक आँखि सँ अश्रुपात होब' लगलै। ओ रधियाक वियोग मे बेमत्त होम' लागल। मुदा कहुना क' ओ अपना कैँ संयत केलक। आगाँ मे चमेलीरानीक आदेश ठार जकर पूर्ति होएब जरूरी छलै।

भीमा सीएमक आवास पर पहुँचल। ओ डपोरशंखी अन्दाज मे एम्हर ओम्हर टहलान देब' लागल। जखन भीमा चारू कात सुंघानी लैत सीएम निवासक ऊपरका मंजिल दिस जायबला सीढ़ी लग पहुँचल त' माउल्डी कैँ देखलक।

माउल्डीक हिसाबे गुलाब मिसिर अपाहिज भ' चुकल छल। ओकरा भोटक तिरजा मिलाबक काज छोड़ि आन कोनो काज मे मोन नहि लगैत छलै। माउल्डी कोनो दोसरो शिकारक खोज मे छल। ओकर नजरि भीमा नामक बडीगार्ड पर

पड़लैक। भीमकाय शरीर एवं गलमोच्छा सँ माउल्डीक हृदय कमल प्रस्फुटित होब' लगलै। निर्लज्जता त' वासना पूर्तिक जबरदस्त हथियार छी। माउल्डी सीढ़ीक ऊपर सँ भीमा कैँ शोर पाड़लकै–"अई मैन, इधर ऊपर आओ।"

भीमा त' आइ स्वयं माउल्डीक टोह मे छले। ओ सीढ़ी टपैत ऊपर पहुँचि गेल आ बाजल–"यस मैडम, हुकुम...?"

माउल्डी भीमाक आँखि मे खुट्टी गारैत बाजलि–"सुनो डियर भीमा। तुमको हम लाइक करता है। तुम्हारा वास्ते मै इगर हूँ। तुम रात का दस बजे मेरे घर आ जाना। मैं तुमसे मिलने माँगता है।"

हट्ठाक बड़द भीमा माउल्डीक नील आँखि मे अपन गलमोच्छाक प्रतिबिम्ब देखैत बाजल–"ठीक मैडम। हम दस बजे राति मे अपनेक निवास स्थान मे पहुँच जायब।"

भीमा आ बटोही पहिने सँ प्रोग्राम फिट केने छल। बटोही ननकिरबी देवीक बहुतो कार मे सँ एक बिन लालबतीबला कार अनलक। फेर भीमा संगे माउल्डीक निवास स्थान पर पहुँचल। माउल्डी कैँ जेड सिक्युरिटी उपलब्ध छलै मुदा भीमा स्वयं ख्याति प्राप्त बडीगार्ड छल। ओ बटोही आ कार कैँ प्रतीक्षा मे छोड़ि निर्विरोध माउल्डीक फ्लैट मे प्रवेश क'गेल।

माउल्डीक रेशमी शलबार-कुर्तीक ऊपर बटिक डिजायन मे काढ़िल साइकेडेलीक रंग मे रंगल गाउन छलैक। मुदा एखन सौन्दर्यक बखान करब उचित नहि। कारण वासना अपन उदण्डता सँ नैसर्गिक महात्तम कैँ नोचि-खसोटि रहल छल। माउल्डीक एक हाथ मे शराब सँ भरल गिलास छलैक आ दोसर हाथ बुलडॉगक देह कैँ सहलाबै मे व्यस्त छलै। भीमा कैँ देखिते माउल्डी उत्साहित होइत ठार भेलि आ कुकुर कैँ जंजीर मे बान्हि दोसर कोठली मे द' आयलि।

अँग्रेज जाति एतेक उन्नति केलक तकर एक पैघ कारण अछि जे ओ आहे उहे मे समय व्यर्थ नहि करैत छल। माउल्डी भीमा कैँ आदेश देलनि–"यहाँ आओ और सोफा पर बैठो।"

भीमा आज्ञाकारी बालक जकाँ सोफा पर बैसि रहल। माउल्डी एकटा औरो गिलास मे शराबक पेग बनौलक। आ भीमाक बगल मे देह सँ सटि क' भीमा कैँ शराब पियेबाक आग्रह करय लागलि। भीमा सोफा पर थोड़ेक हटैत बाजल–"मैडम, हम नशा नहीं पीता है।"

–"तुम शराब नहीं पीता है मैन। फिर तुम मुझको सटिसफाइड कैसे करेगा?"

—"ओ सब कुछ तो करेगा ही और ऐसा करेगा कि आपको नानी मोन पड़ि जाएगा, हाँ!"

—"अच्छा ऐसा है। ठीक है। मुझे तो सटिसफाइड होने से काम है।"

—"मुदा एक अड़चन है।"

—"यह अड़चन क्या होता है, मैन?"

—"हम हिन्दू है। आपका काम पूरा करने से पहले थोड़ा बहुत जरूरी काम करना पड़ेगा।"

—"क्या? क्या करना है मैन? जल्द बोलो। हम दो घंटा से शराब पी रहा है और पूरा तैयार है।"

—"आपको मेरे साथ चौहटा का तांत्रिक मंदिर मे जाना पड़ेगा। वहाँ मेरा गुरूजी का आसन है। वहाँ एक माला आप मेरे गरदन मे डालेगा और एक माला मैं आपको पहिरा दूँगा। बस पाँच मिनट का काम है। फिर रात भर दंगल करेगा।"

—"ऐसा क्या करेगा, मैन? मेरा तो नोकरानी और ड्राइभर चला गया है। ओफ! समझ मे कुछ नहीं आता है?"

—"आप थोड़ा भी चिन्ता नहीं करें, मैडम। मैं सीएम का जोरू का कार औरो ड्राइभर को साथ लाया है। हम पहले से जानता था कि हमको कौन खेल खेलना है। मैडम सिर्फ पाँच मिनट का बात है। फिर देखना कि भीमा क्या-क्या करता है?" बजैत भीमा अपन गलमोच्छा कैँ माउल्डीक गाल मे सटा देलकै। बेचारी माउल्डी! ओहुना माउल्डी कैँ चारि-पाँच महिना सँ कोनो कठगर पुरुष हाथ नहि लागल रहैक। ओमहर गुलाब मिसिर फिद्दी बनि चुकल छल। ओकर इच्छा-पूर्ति करैत-करैत माउल्डी धीपल ताबा जकाँ जरि रहल छल। कामक बेग एतेक ने तीब्र छलैक जे माउल्डी सभ तरहें मतसुन्न भ' चुकल छलि। ओ ठार भ' कहलक—"ठीक है, चलो। तुम जैसा बोलेगा हम करेगा। हमको दूसरा अल्टरनेटिभ नहीं है।"

कार मे भीमा बटोही ड्राइभर संगे आगाँ मे बैसल। माउल्डी बैसलि पाछाँ। दरबान गाड़ीक फाटक बन्द क' सलाम ठोकलक। दोसर सभटा पुलिस मैन बड़का फाटक खोलि अगल-बगल ठार भ' गेल। मोटरकार सरसराइत बाहर निकलि गेल।

एक घंटाक बाद बटोही कार कैँ सीएमक आवासक मुख्य फाटक लग ठार केलक। बिजली गुल छलै आ चारू कात घुप्प अन्हार छलै। मोटरकार मे बटोही आ भीमा बस दू व्यक्ति फाटक खुजबा लेल प्रतीक्षारत छल। माउल्डीक कतहु पता नहि रहैक।

मेलाक सभसँ पैघ आकर्षण थिक मनोरंजनक प्रचूर उपलब्धता। सोनपुर मेला मे एकर व्यवस्था सभ दिन सँ रहलै अछि। तरह-तरह कँ नाटक आ नौटंकीक खेमा। पिजड़ा मे जानवर आ झूला पर झूलैत जुआयल कारी-कारी छौंड़ीबला सर्कस कम्पनी। जानवरक खरीद-बिक्री लग नट-नटिनक करतब। महिला उत्थान लेल मीना बाजार। मालदार कृषक आ पुरना जमींदार लेल विभिन्न प्रान्त सँ आयल नर्तकीक भेष मे वेश्या। एकर सभहक तंबूकक पतियानी दूर-दूर तक पसरल छलै।

ठीक ओही नर्तकीक खजानाक बगल मे एकटा विशाल खेमा छल। तेकट्टा तार सँ घेरल आ चौबिसों घंटा पुलिसक पहरा। 'हँ, हँ ऐने नहिखे आबै के बा। ई सुरक्षित एरिया ह'।'

चमेलीकरानीक आदेश पर शालिग्राम सोनपुर मेला पहुँच चुकल छलाह। हुनका संगे कैम्पक ट्रेन्ड करीब एक सय युवक रहथि। ओ सभ हथियार एवं आन तरहें तैयार छलाह। कोनो अप्रत्याशित घटनाक मुकाबिला करबा लेल सदिखन तैयार आ सचेत।

तेकट्टा तार सँ घेरल जमीन मे कनात सँ घेरल एक पैघ राउटीनुमा सामियाना। एक कात सँ भीतर जेबाक लेल रास्ता। भीतर सामियाना मे फर्स पर कालीन ओछाऔल छल। कालीनक ऊपर तीस गोट गद्दीदार आराम कुर्सी पाँत मे राखल छल। सामने मात्र एक फीट ऊँच स्टेज बनल छलै। स्टेजक चारू कात आ ऊपर कारी रंगक ओहार लागल छलै। विभिन्न रंगक लाइट, चारू कात छोट-छोट स्पीकर आ स्टेजक दाहिना कात ध्वनि नियंत्रक यंत्र फिट छल। स्टेजक पाछाँ नर्तकी आ अन्य तरहक कलाकारक बैसकीक इन्तजाम छलै। स्टेजक वामा कात एकटा केबिन मे ध्वनि प्रसारित करबाक यंत्र छल। अही ठाम युधिष्ठिर बैसि क' चारू कात सँ फिट विडियो कैमराक संचालन करताह तकर व्यवस्था छलै। कहबाक तात्पर्य जे सांस्कृतिक कार्यक्रमक पूर्ण तैयारी भ' चुकल रहै।

सामयानाक सटल पाँती मे पाँच गोट छोट साइजक राउटी छल। चारिटा राउटी कलाकारक वास्ते आ एकटा मे ऑफिस। ऑफिस मे फिल्मी स्टाइल मे शालिग्राम बैसल रहथि।

ओही सुरक्षित स्थानक राउटी मे युधिष्ठिर अपन मंत्रीयार संगे प्रवेश केलनि। दिनक दू बाजल छल। युधिष्ठिर आ चौहान सांस्कृतिक कार्यक्रमक फाइनल चेकिंग मे आयल छलाह। युधिष्ठिर परिचय करौलनि–"मंत्रीयार, यैह छथि हमर मित्र खोपड़कर, फिल्मी संसारक महान हस्ती।"

रवि खोपड़करक जुल्फी छिड़िआयल छल, सर्टक सामनेक बटन खुजल छल जाहि बीच सँ मोटगर सोनाक चेन झलकि रहल छलै। खोपड़कर हाथ मे प्लूटोनियमक बाला पहिरने छलाह तथा हुनक मुँह सँ मेलवार्न फिल्टर सिगरेटक धुआँ चारू कात वातावरण कैँ गमकौने छल।

खोपड़करक अपूर्व फिल्मी स्टाइलक छटा सँ चौहान प्रभावित भेलाह। ओ झुकि क' खोपड़कर कैँ अभिनंदन केलनि आ अपन परचिय देलनि—"हम छी चौहान, सहकारिता मंत्री।"

खाली दू कुर्सी पर चौहान आ युधिष्ठिर बैसैत गेलाह। एतबा मे कतहु सँ मैना प्रगट भेलीह। ओ त' ओहिना नयन कटारी छलीह। ताहि पर सँ मेकअप हुनका बिजलौका बना देने छल। हुनकर हाथ मे एकटा ट्रे छल जाहि मे छल एक जॉनीवाकरक बोतल आ तीनटा गिलास। मैना सभ वस्तु कैँ बीच टेबुल पर राखि, चौहान दिस तकैत चितवनक प्रहार केलनि। चौहानक दशाक की वर्णन होअए? चौहान नेने सँ कविता लिख' लागल छल। कविक हृदय सहजहि रसगर आ कोमल होइत छै। मैनाक प्रहार सँ चौहानक कोमल हृदयक स्पंदन तेज होब' लगलनि। ताबे बेबी सुकोरानी सेहो आबि गेलीह। हुनको हाथ मे एकटा ट्रे छलनि जाहि मे भूजल प्राउन, कतरल लब्सटर आ फ्रेंच फराई छलै। चौहान कैँ बेबी सुकोरानीक अनुपम सौन्दर्य देखि वाक्य-शुन्य भ' उठलनि। बेबी सुकोरानीक धधकैत जवानी मे अहमदुल्ला खां नामक खूंखार राक्षस जरि क' खाक भ' चुकल छल। तखन एकटा अदना मंत्रीपद प्राप्त चौहानक की हस्ती छलनि? चौहान जोर-जोर सँ सांस खींचलक। थोड़ेक प्राणवायु ओकरा छाती मे प्रवेश क' ओकर प्राणक रक्षा करबा मे समर्थ भेलै।

चौहान कहुना क' अपना पर अधिकार क' एकटा बैग खोपड़करक आगाँ मे रखैत बाजल—"खोपड़कर बाबू, अहि बैग मे तीन लाख टाका अछि। एकरा स्वीकार कएल जाए।"

—"अरे! यह क्या है? खर्चे का हिसाब तो मेरी सेक्रेटरी जॉली के पास रहता है। तीस छौकड़ी, तीन मेकअप मैन, तीन ड्रेस मैन, एक स्टेज डेकॉरेटर, मैं और जॉली तो मुंबई से प्लेन मे आया हूँ। बाँकी सभी लोग दिल्ली और कोलकाता से ट्रेन से आया है। तीन लाख तो केवल ट्रेभल का खर्चा होगा? चौहान तुम इस रुपया को वापस ले लो। तुम मेरा फ्रेंड का फ्रेंड है। मैं सब काम मुफ्त मे कर दुँगा। वैसे भी दरिद्र प्रान्त का दरिद्र मनीस्टर कर ही क्या सकता है? मैं तुम्हारी मजबूरी

को समझ सकता हूँ।”

खोपड़करक गप्प सुनि चौहान मर्माहत भ’ उठल। मैना आ बेबी सुकोरानीक समक्ष अपमान ओकरा असहाज्य भ’ गेलै। ओहीकाल ओकरा मैना दिस तका गेलै। मैना त’ मैना छलीह। ओ आँखिक कनखी सँ छिटकी मारि देलनि। चौहानक बचल-खुचल होश समुद्रक खादि मे डुबि गेलै। ओकर बुद्धिक डिबिया उनटि क’ मिझा गेलै।

कहुना क’ चौहान अपना क’ सम्हारलक आ बाजल—“मानि लेलहुँ जे प्रान्त दरिद्र अछि, मुदा प्रान्तक मनीस्टर सेहो दरिद्र अछि से कथमपि ने मानब। खोपड़कर बाबू, प्रान्तक मनीस्टर कैँ एतेक खगल नहि बुझिऔक। बाजू, आओर कतेक टाका चाही?”

—“अच्छा, तुम पूरा खर्च देना चाहता है? ठीक है, तुम्हारी मर्जी। जॉली बताओ, अन्दाज कितना खर्च आयेगा?”

जॉली अर्थात् बेबी सुकोरानी जबाब देलनि—“मेरे दिमागी हिसाब से तो कम से कम दस लाख का खर्च होगा ही।”

चौहान सचेत छल। ओ मैना दिस तकबाक गलती फेर नहि दोहरौलक। सामने राखल जॉनी वाकर शराबक भरि गिलास एकहि सांस मे पीबि क’ बाजल—“बस! एतबे लेल अधैर्य भ’ गेलहुँ यौ खोपड़कर बाबू? तीन त’ देल। बाँकी सात लाख हम राति मे जखन सीएम संगे आयब त’ नेने आयब। अरे! एतबा टाका त’ हमर अलमारी मे फेकल रहैत अछि।”

चौहानक छाती गर्व सँ फूलि गेलैक। ओकरा हिसाबे ओ मैनाक आ बेबी सुकोरानी पर अपन हैसियत कायम क’ चुकल छल। चौहान युधिष्ठिरक संगे राउटी सँ बाहर निकलि गेल।

ठीक आठ बजे सीएमक काफिला सोनपुर मेला पहुँचल। उद्घाटन स्थान मे भीड़ जमा छल। मुदा, भीड़ मे एकोटा जनता नहि छलै, मनीस्टर, विधायक, प्रेस रिपोर्टर, पुलिस, बडीगार्ड, होमगार्ड आ पैघ-पैघ हाकिम सभ। कुला मिलाक’ दू सय सँ ढाइ सयक मजमा। उद्घाटन समाप्त भेल। सीएम सांस्कृतिक कार्यक्रमबला स्थान मे प्रवेश केलनि। हुनक गरदनिक फूलक हार चौहानक हाथ मे छल। चौहान माला कैँ नजदिक मे ठार गार्डक हाथ मे पकड़ा क’ गेट पर अपनहि मोस्तायज भ’ गेल। युधिष्ठिर पहिने कहि देने छलनि—“देखब मंत्रीयार, तीस अतिथिक आयोजन अछि। एकोटा कियो बेसी ढुकि गेल त’ खोपड़कर खोपड़ि फोड़ि देताह। कार्यक्रम

चौपट भ' जायत।"

प्रस्तुत कार्यक्रम अति विशिष्ट व्यक्तिक लेल छल। तेँ एहन इन्तजाम छलै जे बिना निमंत्रणक कियो अन्दर नहि जा सकय। किछु प्रेसबला जिद्द केलक। मुदा, पुलिसक सोंटा के देखि ओ सभ सहटि गेल। भीतर कियो आन नहि जा सकल। सिक्यूरिटी टाइट छलैक।

युधिष्ठिर चौहानक हाथ सँ बैग लैत कहलनि–"मंत्रीयार, अहाँ भीतर जाउ। सीएम भीतर प्रवेश क' चुकल छथि। भीतर मे अहाँक रहब जरूरी अछि। अहाँ कार्यक्रमक आरम्भ होब' तक सीएमक खातिरदारी मे रहब। ओना कार्यक्रम शुरू होयबा मे बहुत समय नै छै।"

चौहान कँ अपनो भीतर जेबाक हड़बड़ी छलैक। मैना आ बेबी सुकोरानीक जनमारा अदा ओकर माथ मे टभकि रहल छलै। युधिष्ठिर फेर कहलनि–"बिलम्ब नै करू। अहाँ भीतर त' जाउ। हम गेट पर पहरा दैत छी। फालतू कोनो सार अन्दर नहि जा सकत, अहाँ निश्चिन्त रहू। आ बैगक टाका हम खोपड़कर कँ पहुँचा देबनि।"

चौहान भीतर पहुँचल। आमंत्रित सभ चुनल अतिथि भीतर पहुँच चुकल छला। अतिथि मे छला सीएम, चौहान लगाक' एक्कीस मंत्री, पाँच गोट ठोसगर ठीकेदार आओर तीनटा लेबड़ा टाइप सचिव। उपस्थिति यैह तीसो व्यक्ति प्रान्तक टीक अपना हाथ मे रखने छला।

सीएम सहित सभ अतिथि आरामकुर्सी पर बिराजमान होइत गेला। सामियाना मे बनल स्पेशल हॉल मे केअरा एवं गुलाब जल बला इत्रक नीक छिड़काव भेल छलै। सम्पूर्ण स्थान सुगन्धित आ सुरभित छल। स्टेज खाली छल, मुदा, माइक सँ हल्लुक किंतु स्पष्ट ध्वनि प्रसारित भ' रहल छलै–"स्वागत हो, स्वागत हो! किछुए मिनिट मे कार्यक्रमक आरम्भ होयत!"

तैखन मैना आ बेबी सुकोरानी हाथ मे ट्रे लेने अयलीह। हुनक चलब मे ब्युटी शो'क लचक तथा पयर सँ पाजेबक छमछमाहटि समस्त अतिथिक हेरायल मनोकामना कँ जागृत क' देलक। ट्रे मे शर्बत भरल गिलास सजल छल। पहिल गिलास मुख्य अतिथि माने सीएम कँ देल गेल। चौहान तत्काल सीएम कँ परिचय देलक–"ई दुनू खोपड़कर बाबूक सेक्रेटरी छथि।"

चौहानक कहबाक अन्दाज छलै जे जखन सेक्रेटरी एहन सौन्दर्यक प्रतिमा छथि त' नर्तकी अवस्से स्वर्गक परी हेतीह। गुलाब मिसिरक चेहरा पर छोट मुस्कीक

लहरि प्रगट भेल, मुदा शीघ्रहि लुप्तो भ' गेल। चौहान नेहाल भ' गेल।

तकर बाद औरो अतिथि कैँ सेहो शर्बत परसल गेल। बर्फ सँ शीतल शर्बत परम स्वादिष्ट एवं सुगन्धित छल। प्रत्येक गिलास मे मादकताक सभ चूर्णक अलावा आधुनिक विज्ञानक करामात 'भियागरा' सेहो मिलाओल रहैक। ई फारमुला बेबी सुकोरानीक अविष्कार छल जकर जाँच अहमदुल्ला खांक अभियान मे सफलता पूर्वक भ' चुकल छलै।

सम्पूर्ण हॉलक रोशनी मिझा देल गेलै। मात्र स्टेज पर विभिन्न रंगक इजोतक बौछार होब' लागल। ताही बीच विस्मयकारी नृत्यक प्रदर्शन आरम्भ भेल। सभटा प्रकाशक फोकस स्टेज पर छल। ओही झिलमिलिया प्रकाश मे नर्तकीक वस्त्र सँ झलकैत नग्न शरीर अतिथि सभहक कौतुहल कैँ जगौने छल। ओ सभ एकाग्र भ' ओहि कौतुहल मे आनन्दमग्न भ' डुबल छला।

आयोजक नृत्यकलाक प्रदर्शन करबा लेल नहि आयल छलाह। कलाक पारखी त' अवस्से उच्च चरित्रक आ पवित्र विचारक मनुक्ख होइत छथि। भ्रष्ट आ पतित प्राणीक समूह कैँ कला सम्बन्धी ज्ञान देब सर्वथा मूर्खता छल। आ तैँ नृत्यक आयोजन मे अश्लीलता कैँ मुख्य आधार बनाओल गेल छल। अहि दृष्टिकोण सँ विचार केलाक बाद ई अवस्से कहए पड़त जे फूहर आ चरित्रभ्रष्ट समुदायक लेल निम्न स्तरक उत्तम, अति उत्तम आयोजन कएल गेल छलै।

नृत्य करीब आध घंटा चलि क' समाप्त भेल। चारू कात इजोत सँ हॉल नहा उठल। सीएम कैँ छोड़ि आन सभ अतिथिक हाथ मे स्कॉच ऑन दी रॉक पहुँचा देल गेलनि।

सम्पूर्ण प्रान्त कैँ बुझल रहैक जे गुलाब मिसिर शराब नहि पिबैत अछि। मुदा सभ जनता कैँ इहो बुझल रहैक जे नशा मे गुलाब मिसिर केवल ताड़िएटा पिबैत अछि। प्रान्तक लोकक कहब छलै जे चाहे त' सीएम फ्रान्सक महग सेम्पेन नित्य पीबि सकैत छथि। मुदा, ओ इमानदार आ प्रान्तक वफादार नेता छथि जे मात्र ताड़ी पीबि क' शासन कैँ हाँकि रहल छथि।

ताड़ीक लत्ति मे गुलाब मिसिरक कोनो दोष नहि छलै। नेनाक उमेर मे ओकरा पॉकिटमारीक धन्धा करए पड़लैक। ओहि रोजगार मे ताड़ी पिबैक लत्ति त' सभ कैँ ओहिना भइये जाइत छै। तखन लत्ति त' बिना मरने छूटै नहि छैक।

गुलाब मिसिरक माथ मे नृत्यकलाक अश्लीलताक प्रभाव बेशी नहि पड़ल छलैक। कारण शासनक भार आ चुनावक चिन्ता ओकर मोन मे तेहेन ने पैसल छलै

जे आन बातक ध्यान ओ कोना करितय? मुदा शर्बत मे मिलाओल मादक चूर्ण त' बैसल नै रहए। ओ त' मनुक्ख कँ शरीर मे दौड़ैत सोनित मे मिलि उत्पात त' मचेबे करत। गुलाब मिसिर त' मनुक्खे छल। आखिर काल गुलाब मिसिरक माथ मे शर्बतक खुमारी पसरए लगलै। नग्न ओ अति सुन्नरि युवतीक कामुक नृत्य सेहो ओकर आसन के डोलाब' लगलै। पोस्टक डिगनिटीक कारणें ओ एम्हर-ओम्हर अधिक देखियो ने सकैत छल। ओकर ध्यान माउल्डी दिस गेलै। ओकर वासनाक पूर्तिक जोगार माउल्डी छोड़ि अहि भुवन मे औरो कियो नहि क' सकैत छलि। मुदा, माउल्डी के की भेल। ओ कत' अछि? आइ भोरे सँ गुलाब मिसिर कँ माउल्डीक दर्शन नहि भेल छलै। ओ माउल्डी द' सोचि आ अपन बेगरताक अनुभव क' बेचैन भ' उठल।

किछु अन्तरालक बाद नृत्यक दोसर आइटमक बेर भ' गेलै। फेर हॉलक सभटा लाइट ऑफ भ' गेल। स्टेज पर जे नृत्य प्रदर्शन आरम्भ भेल ओ खजुराहो देबाल पर अंकित भीति चित्र पर आधारित छल। आब बुझना जोगर भेल जे खोपड़कर किएक अमेरिका आ यूरोप मे प्रसिद्ध भेलाह। प्रायः प्रत्येक नग्न नर्तकी अपन हाव-भाव सँ कामकलाक नैवेद परसि रहल छलीह।

युधिष्ठिर प्रस्तुत अभियानक मुख्य संचालक छलाह। हुनक कुशाग्र बुद्धि पहिने सँ बहुत बात कँ सोचि नेने छल। ओ पन्ना भाइक मददि सँ काशीक विशिष्ट कुटनी सँ सम्पर्क केने छल। उनतीस गोट कम उमीरक वेश्याक अनुबंध पचास हजार टाका मे करौने छला। कुटनी कँ सभटा टाकाक पेमेन्ट भ' चुकल छलै। ओ सभ वेश्या कँ ल' अनने छलि। काशी सँ आयल वेश्या कँ सेहो ठीक ओहिना वस्त्र पहिराओल गेल छल। मुदा काशी सँ आयल वेश्याक डयूटी स्टेज पर नहि छलै। सीएम कँ छोड़ि बाँकी अतिथिक सेवा मे सभ नियुक्त छलीह। जखन स्टेज परहक उत्तेजना अतिथिक गात मे मदनलीला कर' लागय त' ओ वेश्या सभ कुशलताक संग सभ अतिथि लग मे पहुँचि हुनक उपचार मे लागि जाए। अन्हार भेल हॉल मे प्रान्तक प्रत्येक कर्णधारक इच्छा पूर्तिक समग्र इन्तजाम कएल गेल छलै।

सीएम लग कोनो काशीवासी नर्तकी नहि छल। कारण ओ प्रान्तक नेता भ' कोना छुछुन्नरबला काज करितथि। हुनका लग मात्र एकटा भाव उड़िया रहल छल। ओहि भाव मे माउल्डीक काया छोड़ि आओर किछु नहि छल। ओही भवसागर मे जखन गुलाब मिसिर गोंता खाइत छल त' कियो बगल मे राखल टेबुल पर ताड़ीक भरल गिलास राखि देलकै। सीएम त' हार-मांस बला मनुक्खे छला। स्टेज परहक

उन्मुक्त कामकलाक दृश्य, माउल्डीक वियोग आ ताहि परसँ ताड़ीक मादक गंध सीएम अपना कँ नहि रोकि सकल। ओ एकहि सांस मे गिलासक ताड़ी पीबि गेल। कियो जेना देखिते रहै। फेर ओ ताड़ीबला गिलास कँ भरि देलक। संगहि सीएमक मनपसंद चखना सेहो राखि देलक। सीएम दोसर गिलास कँ उदरस्त क' फुर्सति मे आयले छला की हॉल मे पुनः प्रकाश भरि गेल। ठीक सामने चौहान अपन बतिसी पसारने ठार छल।

थोड़बे कालक बाद हॉल मे पुनः इजोत होब' लागल। माइक सँ आवाज आयल—"अतिथिगण, कनेक बेसी ध्यान देबैक। सम्प्रति विश्वक सभ सँ अधिक धनीक देश अमेरिका अछि। सभ्रान्त भेलाक कारणें अमेरिकी संस्कृति कँ उच्चतम स्थान प्राप्त छै। ओतए छौड़ा-छौंड़ीक बियाह होइत छै जे सभ ठाम, सभ देश मे होइत छै। सभसँ अजगुत बात ई जे अमेरिका मे छौंड़ा सँ छौंड़ा के आ छौंड़ी सँ छौंडीक बियाह सेहो होइत छै। अहि तरहक बियाह कँ 'लेस्बीयन मैरीज' कहल जाइत अछि। अगिला कार्यक्रम ओही लेस्बीयन संस्कृति पर आधारित अछि। अच्छा, आब सभ तैयार भ' जाउ। लेस्बीयन मैरीज नामक शो आरम्भ भ' रहल अछि।"

बाहरी संसारक गति सँ अनभिज्ञ मात्र अपन प्रान्तक ठोंठ दबौनिहार, लोकतंत्रक राक्षस, तीसो अतिथि सकाँक्ष भ' उठल। स्टेज परहक दृश्य मे, मुख्य छल नर्तकीक एक-एक वस्त्र कँ हटायब। नशा मे बेमत्त दर्शक समुदाय अपना लग ठार वेश्याक चीरहरण मे पूर्णतः तल्लिन होइत गेल। एम्हर सीएम चारि गिलास बकनायल खजूरक ताड़ी पीबि डकारि रहल छला। हुनकर माथ मे तुरही बाजि रहल छलनि। भियागराक उपद्रव सेहो आरम्भ भ' गेल छल। सीएम असमंजस मे छला। तँ समस्त आक्रोश माउल्डी पर केन्द्रित भ' गेल छलै।

ओहीकाल अन्हार मे कियो गुलाब मिसिरक कान लग बाजि उठल—"कौआ कांव-कांव करता है।"

गुलाब मिसिरक मुँह सँ अनायास बहरा गेलै—"रात अभी बाँकी है।"

बाजि त' ओ गेल, मुदा महा सुरक्षित 'पासवर्ड' कँ सुनि ओकर माथ मे तत्काल उथल-पुथल होब' लगलै। भय सँ ओ काँपि उठल। हड़बड़ी मे ओ बगल दिस मुंह घुमौलनि त' भीमाक गलमोच्छा ओकर नाक मे सन्हियाय गेलै। भीमा फुसफुसा क' बाजल—"सरकार, हम छी भीमा, अहाँक बडीगार्ड, अहाँक वफादार, बाहर टेलीफोन पर माउल्डी छथि। बड़ जरूरी बात छै। अहाँ हमर पाछाँ-पाछाँ

आबु।”

सीएमक अरजेन्ट ‘पासवर्ड’ मात्र दू व्यक्ति लग छलै। एक व्यक्ति ओ स्वयं छल आ दोसर छलै माउल्डी।

गुलाब मिसिर जहिया सँ सीएम बनल, सासुरक लोक सँ सम्पर्क टूटि गेलैक। अपन पत्नी ननकिरबी देवी सँ त' झड़क लगैत रहनि। तखन बचल मित्रवर्ग। गुलाब मिसिर सन व्यक्ति कैँ कियो मित्र हेतैक एकर कल्पनो करब निरर्थक छल। मात्र माउल्डी छोड़ि ओकरा ककरो पर विश्वास नहि छलैक। गुलाब मिसिर आ माउल्डीक बीच एक समझौता रहैक जे बहुत आवश्यक भेलाक बादे अहि पासवर्डक व्यवहार कएल जाए। आब आनायास ओहि पासवर्ड कैँ सुनि गुलाब मिसिर बिचलित भ' गेला।

ताड़ीक निशा मे गुलाब मिसिरक बुद्धि आ विवेक धोबिया पाट खा चुकल छल। किछु क्षण पूर्व एक सय पाँच डिग्रीक काम ज्वर सँ ओ पीड़ित छल आ माउल्डीक कल्पना मे उब-डूब क' रहल छल। तखने कौआबला पासवर्ड ओकर कान कैँ झनझना देलकै। सत्य मे, ओकर धूर्त्तइबला बुद्धि कैँ ताड़ी नीक जकाँ बेबश क' देने छलै। ओ किछु सोचि सकए ताहि मनःस्थिति मे नहि छल।

गुलाब मिसिर चुपचाप भीमाक पाँछा-पाँछा बिदा भेल। बाँकी सभ अतिथि फिल्मी नर्तकी संगे चोरा-नुक्की मे तेना ने व्यस्त छल जे कियो ने देखि पऔलक जे सीएम भीमाक पाँछा अलसिसियन कुकुर बनि कतए जा रहल अछि।

अन्हार गलियारी मे भीमाक अनुसरण करैत-करैत गुलाब मिसिर स्टेजक पाछू मे आयल। कनात सँ घेरल स्थान मे एकटा चमचमाइत मारूति ठार छलैक आ ड्राइभरक सीट लग बटोही ओङ्ठल छल। कनातक दोसर कात गोइठाक धुंआ सँ झाँपल सुलभ शौचालयक पाँत दूर-दूर तक पसरल छलै। धुआँक सघनताक चलते सुझै मे पूर्ण कठिनता भ' रहल छलै। ओहि एक कात मे कनातक ओहार मे नुकायल युधिष्ठिर आ शालिग्राम गुलाब मिसिर, भीमा आ बटोही पर आँखि गरौने छल।

गुलाब मिसिर मारूति कार दिस तकैत प्रश्न केलक—“यह कार किसकी है? यह ड्राइभर कौन है?”

—“हजूर, कार मलिकाइनक छियनि। ड्राइभर सेहो हुनके सेवा मे अछि। पिछला दू वर्ष सँ यैह ड्राइभर मालिकाइन कैँ हनुमान मंदिर ल' जाइत अछि। मुदा, एखन औरो गप्प के छोडू। हम सभ हुनकर हुकूम मे छी आओर अहाँ केवल

माउल्डी मेम साहेब सँ गप्प करू।"

भीमा कारक सीट पर राखल मोबाइल के उठौलक आ आनि क' गुलाब मिसिरक हाथमे देलक। गुलाब मिसिर मोबाइल कँ कान मे सटबैत बाजल–"हेलो।"

–"कौन? क्या तुम गुलाब बोल रहा है?" माउल्डीक आवाज सुनि गुलाब मिसिर कँ आश्चर्य भेलै। माउल्डी सदिखन गुलाब कँ रोज 'डार्लिंग' कहि सम्बोधन करैत छलीह मुदा एखन माउल्डी गुलाब कहि सम्बोधन केलक आ ओकर स्वर मे कोनो विपत्तिक आभास प्रगट होइत छलै।

–"हाँ, हाँ, मैं बोल रहा हूँ। तुम कहाँ हो? क्या बात है?"

–"मैं कहाँ हूँ और बात क्या है–इन सभी मैटर को डरोप करो। मैं भीमा से तुमको पासवर्ड कहलाया जिससे तुम एलर्ट हो सको। मैटर बहुत-बहुत सीरियस है। मैंने तुम्हारी वाइफ का कार और ड्राइभर को भेजा है। तुम कार पर बैठकर सीधे यहाँ आ जाओ। भीमा को मालूम है कि तुमको कहाँ पहुँचना है। कुछ मत सोचो, सीधे यहाँ पहुँचो।"

–"क्या बक रही है, माउल्डी? मैं सीएम होकर ऐसे कैसे आ सकता हूँ? मैं अभी सोनपुर मेला मे सांस्कृतिक सम्मेलन मे बीजी हूँ। मेरे साथ बहुत सारे लोग हैं। मेरा गार्ड भी दूसरी ओर है। कार्यक्रम को समाप्त कर ही मैं यहाँ से निकल सकता हूँ। मै तुरंत कैसे आ सकता हूँ?"

–"अरे! तुम सीएम रहेगा तब ना। तुम्हारा तो सभी कुछ का दी एण्ड होने वाला है। तुम तो मरने वाला है। तुम मैटर का सीरियसनेस को समझो। बहुत टाइम नही है रे इडियेट!"

गुलाब मिसिर ताड़ीक निशा मे झूला झुलि रहल छल। तथापि ओकर माथ मे कतउ लालटेन बरि रहल छलै। ओ माउल्डी द' सोचि रहल छल। ओकर करोड़ो अरबो टाका विदेशक विभिन्न बैंक मे जमा छलै। अपनहुँ देश मे ठाम-ठाम पर ओ अपन खजाना नुकौने छल। माउल्डी कँ अहि सभ बातक रत्ती-रत्ती खबरि छलै। ओ माउल्डी उच्चरित अँग्रेजीक शब्द इडियटक हिन्दी अर्थ बुझैत छल। मुदा माउल्डीक संग झगड़ा-फसाद करबाक स्थिति मे कथमपि ने छल। अपन होश कँ प्रयत्न क' क' जमा केलक आ बाजल–"तुम साफ-साफ बोलो कि बात क्या है? क्या हो गया है जो तुम इतना घबड़ा गई हो?"

–"तो सुनो रे स्टूपिड! तुम पटना अस्पताल का ऑरफन बच्चा है। फिर तुम पॉकिटमार बना। तुमने सिंघासन मिसिर को ब्लफ देकर उसकी बेटी से शादी

किया। बोल रे हरामी, यह मैटर सच है कि नहीं?”

गुलाब मिसिरक घिग्घी बन्द होब' लगलै। हाथक मोबाइल छुटि क' नीचा खसय लगलै। बाजय त' की बाजय? ओ फेर माउल्डीक बाजब सुनलक–“तुमने मुझे भी डार्क मे रखा। तुम्हारे पूरे लाइफ का हिस्ट्री मेरे पास है। उसमें जेल का रिकार्ड और तुम्हारा पुराना लाइफ का बहुत सारा फोटो भी है।”

–“मेरी जिंदगी की ये सारी बातें सिर्फ पन्ना को मालूम था और पन्ना मर चुका है।”

गुलाब मिसिर कहुना हँफसैत माउल्डी के जवाब देलक। मुदा, तखने माउल्डीक कर्कश ध्वनि ओकर कान मे छेद कर' लगलै–“पन्ना जिन्दा है और मेरे पास खड़ा है।”

–“तुम झूठ बोल रही हो?”

–“ओ, अय बास्टर! मैं झूठ नहीं बोलता। मैं लाइफ मे कभी झूठ नहीं बोला। लो, अब तुम पन्ना से बात करो।”

गुलाब मिसिर मोबाइल कैँ दोसर कान मे सटौलक त' पन्ना भाइक भारी-भड़कम आबाज सुनाइ पड़लैक–“गुलाब बबुआ, तोहार सगही कनिआँ सच बोल' ता। हम जिन्दा बानी आ तोहार चिता का तैयारी मे लागल बानी। ई त' तोहार सगही कनिआँ के धन्यवाद जे ओ हमरा के अभी तक रोकले बा।”

–“पन्ना भाइ, तुम मुझसे क्या चाहता है?”

–“तोहार पापी माथा का काटै का हमनी पूरा इन्तजाम कर लेले बानी। अब हम तोरा से का चाहब? तोरा जिन्दा जला के हम अपन करेजा के ठंडा करब। तुम पन्ना के नहिखे चिन्हल' रे सरौं, बोल तोहार आखरी इच्छा का बा? हे ल', अपन सगही कनिआँ से बात कर ल'। जिआदा टाइम का बरबादी मत कर'।”

गुलाब मिसिरक माथ सुन्न भ' गेलै। पन्ना जे जीवन भरिक मददगार छल आइ भूत बनि के ठार छल। मोबाइल एक क्षण चुप रहल। फेर जल्दी-जल्दी बजैत माउल्डीक आबाज आब' लागल–“एक मिनट मेरी बात को सुनते रहो गुलाब। पन्ना कल रात से मेरे साथ है। वह आज मॉर्निंग मे तुम्हारे फादर इन लॉ के पास जाने वाला था। वह प्रेस और मिडिया मे भी जाने को था। उसके पास सभी फैक्ट्स है और सभी को मैंने एटेनटिभली देखा है। तुम राम सिंघासन के कास्ट का नहीं है। तुम ऑरफन और बास्टर है। राम सिंघासन मिसिर, उसका सभी लड़का, उसका कास्ट और पूरा प्रोभिन्स का आदमी तुमको एक दिन पीस-पीस मे काट देगा।”

–“फिर कानून भी है। तुम जेल जाएगा। इसीसे मैंने पन्ना को रोका है।

रिक्वेस्ट किया है। उसके सामने सरेन्डर किया है। वह चुप रहने वास्ते एक सौ करोड़ माँगता है। मैंने बारगेन करके मैटर को फिफ्टी करोड़ मे फाइनल किया है।

—"तुम बचेगा, तभी मैं जिन्दा रहेगा। तुम्हारे कारण ही मेरा लाइफ डेंजर मे पहुँच गया है। अब तुम सीधे यहाँ आ जाओ। मेरे सामने प्रोमिस करो कि तुम कभी भी पन्ना को टच नहीं करेगा। कभी भी उसके अड्डे को नहीं तोड़ेगा। मैं तुम्हारा वाइफ के घर मे छिपाया रुपया में से लाकर फिफ्टी करोड़ दे देगा। फिर मैटर इन्ड करेगा। इसी से बोलता है कि टाइम बहुत कम है। तुम जल्दी आ जाओ। भीमा के साथ कार और ड्राइभर है। भीमा तुम्हारा औनेस्ट मैन है। तुमको बचना है, हमको बचना है। कुछ मत सोचो, सीधे यहाँ आ जाओ।"

कोनो विकल्प नहि छल। बहुत किछु सोचलो ने जा सकैत छल। माउल्डीक देल तर्क अकाट्य छल। गुलाब मिसिर भोटक तिरजा मिलबै मे महारथ जरूर हासिल केने छल, मुदा बाँकी सभ काज मे ओकर भाग्य आ माउल्डीक मार्गदर्शन ओकर सहायक छलै।

एकटा बात औरो सत्य। ताड़ीक चस्का ओकरा सत्यानाश करैक लेल तुलल छलै। तइयो ओ समय आ परिस्थितिक आकलन कर' लेल बुद्धिक खुशामद केलक। बुद्धि एतबे कहलकै—'रे मूर्ख, पहिने जान बचा, गद्दी बचा। बाँकी काज त' बादो मे हेतैक।'

गुलाब मिसिर असहाय भेल आकाश दिस तकलक। फेर कार मे बेसैत भीमा सँ बाजल—"चलो!"

❖

छह

—"भारत एक राष्ट्र थिक। भारतक प्रगति कमोबेस सही दिशा मे अग्रसर अछि। समस्या बनल अछि अपन प्रान्त। कारण जे हौक, मुदा परिस्थिति प्रतिकूल छै। सम्पूर्ण प्रान्त आलस्य मे डुबल अछि। विचार आ सोच कुंठित अछि। समस्त भारतक परिप्रेक्ष्य मे हमर प्रान्त दयनीय एवं निंदनीय अवस्था मे अछि। आ तँ हमर संस्था 'लोक शक्ति जागरण परिषद' क निर्माण भेल अछि।

—"हमर ई सौभाग्य अछि जे हम भारत सन महान देशक नागरिक छी। सम्प्रति हमर प्रान्तक उन्नतिए हमर मुख्य लक्ष्य थिक। हमर एक लक्ष्य, एक उद्देश्य एवं एक आदर्श रहत आ हम लोक शक्ति जागरण परिषदक जागरूक सदस्य बनि अपन प्रान्तक सेवा हेतु सदिखन तत्पर रही। हम सभ अहि प्रान्तक माटि केँ मातृत्व भाव सँ अर्चना करी तथा एतए एक नवीन जीवन रसक सृजन करी आ भूमि केँ उर्जा द' आलोकित करी।

—"हमरा सभ चमेलीरानी सँ निर्देश पबैत छी। हुनक आदेश अछि जे करोड़ो लोक जे पूर्णतः उपेक्षित छथि, हुनका जगा क' एक विराट लोक शक्तिक स्थापना कएल जाए। हमर सभहक कार्य तपस्याक थिक, जतए मानव सेवा, प्रान्त सेवा हमर पुनीत कर्तव्य बनल अछि।"

भाषण केनिहार चमेलीरानीक पाँचो कैम्प सँ प्रशिक्षित तीस हजार युवक-युवतीक समूह मे सँ एक आदर्श युवक छला जनिक नाम छल गोपाल बिहारी।

प्रभातक बेला, पोखरिक पक्का घाट आ कार्तिक मास। गोपाल बिहारी रमपुरा पंचायतक नायक छला। रमपुरा पंचायत छोट-पैघ तीन गाम यथा चौथा, रमपुरा तथा कलजुगा मिला क' बनल छलै। जेना कि सभ पंचायतक इतिहास-भूगोल अछि, रमपुरा पंचायत मे सेहो सभ जातिक लोक निवास करैत अछि। जाहि मे हिन्दू पचासी प्रतिशत आ मुसलमान पन्द्रह प्रतिशत। मुसलमानक घर गामक एक कात, जतए एकटा मस्जिद आ ओकरा आगाँ झुण्डक झुण्ड मुर्गा-मुर्गीक पांती। भोटक हिसाबे रमपुरा मे कुल छः बूथ आ भोटर कुल सात हजार चारि सय बहतरि।

जेना कि हमरा सभ कैँ बुझल अछि जे चमेलीरानीक प्रशिक्षित फौज सम्पूर्ण प्रान्तक गिरह-गिरह मे पसरल अछि। रमपुरा पंचायत मे तीन युवक यथा सौरभ बिहारी, योगा बिहारी आ राजू बिहारी तथा दू नवयुवती मंजुला भारती तथा श्यामा भारती नियुक्त छलीह। पछिला दस मास मे ओहि पाँचो युवक-युवतीक परिचय पंचायतक प्रत्येक सदस्य आ प्रत्येक परिवार सँ भ' चुकल छलनि। सभहक मददि करब, दुख मे बोल-भरोस देब आ सदिखन प्रफुल्लित रहि सभ सँ उत्साह आ उमंगक संग गप्प-सप करब हुनका सभहक मुख्य काज छलनि।

एक स्थान मे गामक सभ धीया-पूता कैँ जमा क' क' बिटगरहा सिखौनाइ, साफ वस्त्र पहिरौनाइ, निःशुल्क दूध पियेनाइ, खेलकूद मे कबड्डी, चीक्का आदिक आयोजन केनाइ सेहो सभ भ' रहल छलै। गामक युवतीक लेल अलग मंडली तैयार कएल गेल रहै। सिलाइ-फराइ सिखैनाइ, पापर-अँचार बनौनाइ, भानस-भात कोना नीक जकाँ कयल जाय तथा घर-आँगन के कोना स्वच्छ आ पवित्र राखल जाय आदि तरहक काजक उचित ट्रेनिंग देल जा रहल छलैक।

गाम मे समय-समय पर नाटकक आयोजन होइत छलै। नाटक लेल समस्त उपकरण आ प्रशिक्षित कलाकार बाहर सँ अबैत रहैक। नाटकक विषय रहैत छलै ओहि राक्षस सभहक वृतान्त जे सरकार द्वारा प्राप्त शिक्षा, स्वास्थ्य, सिंचाइ आदिक अनुदान कैँ बीचहिं मे गीरि लैत छलै। सड़क निर्माण आ की भवन निर्माणक धन कोना रस्ते मे बिला जाइत छलै। शोषण केनिहार जनताक चुनल आ सरकारी कर्मचारी द्वारा कोना रक्षक रूप मे भक्षक बनि क' लोक आ समाजक सोनित पिबैत छलै। विकासक लेल आयल टाका निपत्ता होइत छलै, तँ विकास होअय त' कोना?

यद्यपि गाम घर मे उदासी आ अनमनस्यकताक प्रवृति प्रचंड रूपे व्याप्त छलै। मुदा, प्रत्येक नाटक मंचनक अन्त मे पूछल प्रश्न कैँ लोक उत्साह सँ उत्तर दैत छलै। प्रश्न पूछल जाइत रहै–"अच्छा कहू जे हजार मे चोरि केलक तकरा की दंड देल जाए?" समूहक उत्तर रहै–"ओकरा मूँह मे कारी-चून लगा क' गदहा पर घुमाओल जाए।" "अच्छा, जे लाख मे चरौलक तकरा?" "ओकरा उनटा बान्ह बान्हि क' पीटल जेबाक चाही।" "अच्छा बुझलौं। आब कहू जे करोड़ मे चोरबैत अछि, तकरा?" लोक सभ अनघोल करैत उत्तर दैत छलै–"बाप रौ बाप! ओकरा त' सोझे यमलोकक रस्ता देखायब उचित।"

सभटा काज एक बैनरक नीचा भ' रहल छलै। बैनरक नाम छलै 'लोक शक्ति जागरण परिषद' अथवा 'लोशजाप'। नाटक होए, कबड्डी होए, नेनाक स्कूल

होए आ की धीया-पूता कैँ दूध पिएनाइ होए, समस्त काज परिषदक निर्देश सँ होइत छलै। ओकर परिचालन केनिहार युवक छलाह गोपाल बिहारी आ युवती छलीह भारती।

अहि तरहें चमेलीरानी लोकक प्रत्येक गतिविधि मे चेतना भरि एक विशाल आकांक्षा कैँ सहजहि जगा रहल छलीह। सम्पूर्ण प्रान्तक प्रत्येक व्यक्तिक, प्रत्येक जातिक, प्रत्येक सम्प्रदायक एवं प्रत्येक धर्मक शक्ति तथा इच्छा कैँ एक ठाम जमा क' एक भयंकर विस्फोटक तैयारी भ' रहल छलै। बाधा स्वरूप जे कर्मचारी छल वा ओकर घृणित कार्यक्रम छलै तकर रिपोर्ट हेड ऑफिस भाटाजी लग पहुँचैत छलै। भाटाजी ओहि कैँ सिलसिलेबार क' चमेलीरानी लग कैलाश कुंज भवन पहुँचबैत छलाह। चमेलीरानी ओहि सभ कैँ देखैत छली आ तखन बाछि क' आदेशित करैत छली। आदेश पाबि खास-खास रिपोट कैँ प्रकाशनार्थ 'स्वयं प्रकाश' मैथिली भाषाक दैनिक समाचार-पत्र कैँ कम्प्यूटर पर भाटाजी उपलब्ध करबैत छलाह।

परिणामस्वरूप 'स्वयं-प्रकाश' अखबार मे विभिन्न घटनाक सुन्दर आ सटीक लेख छप' लागल। 'स्वयं प्रकाश' अखबार कमे दिन मे लोकप्रिय बनि गेल आ देखिते-देखिते ओकर सर्कुलेशन मिथिलांचल मे तीन लाख तक पहुँचि गेल। 'स्वयं प्रकाश' अखबार मे इहो सूचना आबए लागल जे बहुत शीघ्र एकर भोजपुरी संस्करण सेहो प्रकाशित होयत।

पंचायत मे काज केनिहार छल सेवक आ सेविका। पाँच पंचायतक हेड छलै नायक तथा प्रत्येक प्रखंड महानायक अधीन छलै। महानायक सँ ऊपर नकुल, सहदेव तथा शालिग्राम सम्पूर्ण प्रान्त मे आदेश निर्गत करैत छलाह। धनक कोनो अभाव नहि छलै आ खर्च पहुँचाब'बला स्थान मे त' अर्जुन कार्यरत छलाहे।

गोपाल बिहारी चमेलीरानीक फौज मे नायक पद पर आसीन छला। हुनका हलका मे चौमना, गंगापटी, उद्योगपुर, सरहदिया आ रमपुरा पंचायत छल। ओ चारि पंचायतक सर्वेक्षण समाप्त क' आजुक तारीख मे रमपुरा पंचायतक सेवक आ सेविका संगे बैठक कर' क हेतु आयल छल। ओकर अल्प किन्तु आवेशपूर्ण कथन सँ चमेलीरानीक कार्यप्रणाली आ भविष्यक उद्देश्यक जानकारी भेटैत छलै।

सम्प्रति बिहारी एवं भारतीक मीटिंग रमपुरा पंचायतक चौथा नामक गामक एक पोखरिक पक्का घाट पर भ' रहल छल। कनिएँ पश्चिम हटल एकटा महादेवक छोट किन्तु भव्य मंदिर छलै। भोरुका समय मे विशेष क' महिला समुदाय स्नान

आदि सँ निवृत भ' मंदिर मे पूजा-अर्चना मे व्यस्त छलीह। मंदिर सँ घंटीक ध्वनि प्रभातक शीतयुक्त पवन कँ सिहरबैत चारू कात पसरि रहल छलै। वातावरण मे फूलक सुगन्धि आ पवित्रता व्याप्त छलै।

ओही काल जबाहिर अपन महींसक नाथ धेने कुहेस कँ चिड़ैत पोखरिक कातक रस्ता लग प्रगट भेल। महींसक पीठ पर ओकर बाप भैयो खादबला बोराक कनटोपा पहिरने बैसल छल।

जबाहिर पोखरिक घाट पर आयल लोशजापक सदस्य कँ गप्प करैत देखि ठमकि गेल। ओ अपन पिता सँ कहलक–"बाबू, अहाँ महींस के नेने गाम पर चलि जाउ। हम कनेक हिनका सभ सँ गप्प-सप क' क' अबैत छी।"

अपन पिता भैयोक गेलाक ऊपरान्त जबाहिर घाट पर आबि सभ कँ अभिनंदन कैलक आ गोपाल बिहारीक बगल मे बैसि रहल।

गोपाल पूछि देलनि–"पसर चरबै लेल बाप-बेटा संगहि जाइत छी?"

–"की करिऔक। बाबूक ममता, संसारक नियम आ महींस ककरो खेत मे नोकसान नै क' दैक तैँ बाबूक संग जाए पड़ैत अछि।"

–"वाह! विचार जँ नीक होअए त' कर्म उत्तमे होइत छै।"

जबाहिरक पिता भैयो कहिया बिआह केलक तकर जानकारी राखब कठिन। मुदा, जबाहिरक जनम ओहि साल भेल छलै जहिया चीन अपन देश पर आक्रमण केने छल। भैयो अपन बेटाक नाम जबाहिर अहि कारणें रखलक जे जँ नाम-गुणक थोड़बो असरि पड़तैक त' जिनगीक बेरा पार कर' मे सुभिस्ता हेतैक। जबाहिरक माताक मृत्यु ओ जखन तीन वर्षक रहअय तखने भ' गेलै। भैयो दोसर बियाह नहि केलक। ओ अपन समस्त महत्त्वाकांक्षा कँ जबाहिर मे आरोपित क' ओकर सेवा मे निमग्न भ' गेल।

भैयोक नजरि मे शिक्षाक महत्व असीम छलै। जबाहिर कँ पढ़ेबा मे अपन सम्पूर्ण धन आ श्रमक आहूति देब' लागल। जबाहिर प्रथम श्रेणी मे मैट्रिक पास केलक। फेर आइए आ बीए। नौकरीक तलास केलक। मुदा नौकरी भेटब असम्भवे रहलै। भैयोक कुल सम्पत्ति रहै तीन बीघा खेत आ एक कट्ठाक घराड़ी। जबाहिरक शिक्षा देबाक क्रम मे खेत बेचैत-बेचैत मात्र दस कट्ठा बाँचि गेल छलै। मुदा भैयो आस नहि त्यागलक। जबाहिर इतिहास विषय ल' क' विश्वविद्यालय मे एमए मे दाखिला लेलक।

जबाहिर अपन आर्थिक विपन्नता सँ परिचित छलहे। ओना ओ मेधावी छात्र

सेहो छल। पूर्ण परिश्रम सँ पढ़ाइ केलक आ समय पर परीक्षा मे सामिल भेल।

रिजल्ट सँ मात्र एक सप्ताह पूर्व विभागाध्यक्ष श्री चमन लाल मेहता जबाहिर कैँ सम्बाद पठा अपन कक्ष मे बजा क' कहलनि–"प्रान्तक हालत की छै से तोरा अबस्से बुझल छह। समस्त व्यवस्था मे आगि लागल छैक। मुदा हमर कर्तव्य बोध एखनहुँ तक बाँचल अछि। अस्तु, हमर दायित्व बनैत अछि जे हम तोरा परिस्थिति सँ अवगत करा दी। तेँ अहि खेपक इतिहास विषयक बैच मे सर्वश्रेष्ट विद्यार्थी छह। तोरा प्रथम स्थान हेबाक चाही, मुदा हम लाचार छी, बेबस छी।"

मेहता जी थोड़ेक ठहरि गेला। फेर कह' लगला–"प्रत्येक विषयक रिजल्ट सीट राजधानी सँ बनि क' अबैत छै। पैरवी आ टाकाक खेल छै। सुनल अछि जे पन्द्रह हजार टाका देब' बला कैँ प्रथम श्रेणी, ओही सँ कम देब'बला कैँ द्वितीय श्रेणी, बाँकी बचल अभागल कैँ तृतीय श्रेणी मे उत्तीर्ण कयल जाइत छै। लोकतंत्र मे पैरवी आ टाकाक समक्ष योग्यता सदा सँ हकन कनैत अछि। तेँ योग्यताक लिस्ट मे सभसँ ऊपर छह। मुदा हम तोहर किछु मददि क' सकब से हमर सामर्थ नहि, हम असहाय छी।"

विभागाध्यक्षक आज्ञा चक्र लग स्थापित सेनुरक ठोप कैँ जबाहिर टकटकी लगा क' देखि रहल छल। अन्तर्वेदनाक चित्कार ओकर मन-मस्तिष्क कैँ उद्वेलित केने छलै। मुदा ओ कइए की सकैत छल। ओ मेहता नामक विद्या विभूति कैँ प्रणाम क' विश्वविद्यालय भवन सँ बाहर आयल। बाहर मे कतौ राजा मेंहदी अली द्वारा रचित हिन्दी गीत लाउडस्पीकार सँ बाजि रहल छलै–'मेरा सुन्दर सपना टूट गया।'

एक सप्ताहक ऊपरान्त डिपार्टमेंटक नोटिश बोर्ड पर रिजल्ट साटल गेलै। कुल पचास छात्र-छात्रा मे, पैंतीस प्रथम श्रेणी, तेरह द्वितीय श्रेणी आ जबाहिर संगे एकटा औरो करमघटू क' नाम तृतीय श्रेणी मे टाँगल रहै।

जबाहिर गाम पहुँचि सोझे अपन तीन बीघा ओहि खेतक आड़ि पर आबि ठार भ' गेल, जे खेत बिका गेल रहै। पहिने सँ आकाश मे उमरल कारी-कारी मेघ जबाहिरक वेदना के नहि सहि सकल। फाटि क' बरसि पड़ल। जबाहिर निर्विकार अपन खेत कैँ निहारि रहल छल जे खेत मायक सदृश ओकर परिवारक भरण-पोषण करैत छलै से आब आनक छलै। तीनू बीघा खेत कैँ आहूति द' पओलक की त' हरियर आखर मे लिखल एमए तृतीय श्रेणीक डिग्री। तृतीय श्रेणी मे पास करब सँ नीक छलै फेल करब।

जबाहिर ओहि सर्टिफिकेट कँ ओही खेतक थाल मे गारि, दुनू हाथे माथ पकड़ि फफकि-फफकि क' कानए लागल।

ककरो कहला पर भैयो दौड़ल अयलै। ओ अपन बेटाक भीजल शरीर कँ अपन पाँज मे समटैत बाजल—"ककरो दोष नहि, सभटा कर्मक फल छै। तौँ हमर धन छह। तोहर बाप भैयो एखन जीबै छथुन्ह। चल' गाम पर चल'। दूरा पर एखनो महींस तोरा हमरा जिआबै लेल बान्हल छह, तखन चिन्ता कथिक?"

अहि तरहें एमए पास जबाहिर महींसक चरबाह बनल। महींसक घास-भूस्सा मे दिन बितैत रहलै। एकाएक लोशजाप बलाक गाम मे आगमन भेलै। बुझू जे समूचा गाम मे ज्योतिक एकटा लहरि पसरि गेलै। गाम मे पसरल आलस्य आ अकर्मण्यता मे छेद भ' गेलै। गामक प्रत्येक जन मानस एक नवीन आशा सँ प्रेरित भ' जागि उठलै।

लोशजाप बला सभहक परिचय जनबाक प्रयास कर' लागल। ओ जबाहिरक पूर्व मे कमायल योग्यता कँ तत्काल चिन्हलक तथा गामक धीया-पूता कँ पढ़ेबाक कार्य मे ओकरा नियुक्त केलक। जबाहिर कँ प्रत्येक मास एक हजार टाका देबक लोशजाप बला आश्वासन देलक। अहि तरहें जबाहिरक नसीब करोट लेलकै आ भैयोक दन्तहीन मुँह मे हँसी पसरलै।

गोपाल बिहारी जबाहिर कँ टोकलनि—"काल्हि ठकबछिया प्रखंड मे बृद्ध कँ पेन्सन बाँटल जेतैक। अहूँक पिता पेन्सरधारी छथि? की अहुँसभ सेहो काल्हि प्रखंड जायब?"

—"हँ, हँ। हम बाबूक संगे काल्हि ठकबछिया प्रखंड अवस्से जायब। तीन वर्षक रूकल पेंसन भेटतै। फतुरनक टायरगाड़ी सँ टोल भरिक पेन्सनधारी कँ प्रखंड जेबाक विचार छै। हम सभ महींसक व्यवस्था कइए क' जायब, कोन ठेकान ऐबा मे बिलम्ब होअए।"

काल्हि भेने अपन नायक गोपाल बिहारिक आदेशानुसार मंजुला भारती आ श्यामा भारती केट्स जूता पहिरने आ पीठ पर थैला लदने सरपट ठकबछिया प्रखंडक लेल जा रहल छलीह। आधा सँ अधिक रस्ता तय केलाक बाद ओ दुनू विश्राम आ जलपानक हेतु कोनो उपयुक्त स्थानक खोज मे छली।

स्थान भेटलनि कमला नदिक कछेर। कठपुलबाक कात मे नव दूभि जनमल रहै। धीया-पूता खेल खेलेबा लेल ओहि स्थान कँ स्वच्छ एवं पवित्र बनौने छलै। किछेर मे विभिन्न तरकारीक चतरल लत्ती पसरल रहै। ठाम-ठाम पर खुटेसल बकरी

चरि रहल छलै। किछेरक ऊपर दूर-दूर तक सघन आमक गाछी स्थान कैँ अत्यंत रमणीय बनौने रहै।

मंजुला आ श्यामा एक उचित स्थान मे बैसि, थैला सँ सैन्डवीच आ पानिक बोतल निकालि खायब आरम्भ केलनि। ठीक ओहीठाम बगलक आमक गाछी सँ दू टा छौंड़ी धम्म द' आबि हुनका सभहक लग मे बैसि रहल। आगुन्तक नव-विवाहिता आ परम सुन्दरी छली। हुनक भाव-भंगिमा मे चपलता आ उमंग भरल छलनि। दुनू नवयुवतीक शरीर सँ यौवनक माधुर्य टपकैत छलनि।

मंजुला अपन आँखि मे प्रश्न बना क' पुछलनि–"की चाही?"

आगन्तुक दुनू युवती मे जे कनेक पैघ छलीह, जवाब देलनि–"अहाँ दुनू पहिने जलपान क' लिअ, तखन हमरा सभहक एकटा काज क' देब।"

–"कोन एहन बेगरता अछि जे हम सभ क' देब?"

श्यामाक प्रश्न उत्तर मे ओ युवती कहलनि–"एकटा चिट्ठी पढ़ैबाक अछि।"

–"अच्छा! कोना बुझैलियै जे हम सभ चिट्ठी पढ़ि देब। चिट्ठी अँग्रेजी भाषा मे छै की?"

–"आब सुनू। एतुका सभ कैँ बुझल छै जे लोशजाप बला सँ कोनो काज असम्भव नहि छै। अरे! हुनका सभहक आगमने पृथ्वीक दुख हरै लेल भेलनि अछि। तखन एकटा चिट्ठी पढ़ब कोन कठिन? आरो सुनू, चिट्ठी मैथिली भाषा मे छै।"

–"आ...हा! त' अहाँके मैथिली पढ़' नहि अबैत अछि?"

–"हयइ, सब दिन रमायण आ महाभारत हिन्दीए मे पढ़लियै। आब मैथिली भाषा मे लिखल प्रेम पत्र सँ सामना भेलए। ह्रस्व आ दीर्घ मे कनिकबे ठोर पिछड़बे करै छै। चिट्ठी आयल छै हमर सखी कैँ। ओकरा बुझू जे सुआद भेटिते ने छै।"

–"अहाँक आ सखीक नाम की अछि?"

–"हमर मेनका आ एकर तिलोत्तमा। हमर सरधूआ त' प्रत्येक शनि क' दिया-बाती काल मुज्जफरपुर सँ आबिए जाइ छै। मुदा एकर प्राणनाथ चतुर्थीक परात, आ तकर परात जे गेला से आब चारि मास भ' गेलै...आब की कहू...हइऐ ई चिट्ठी एलै हें।"

बजैत-बजैत मेनका ठठा क' हँसि देलनि। ओतए उपस्थित चारू नवयुवती मानि लिअ एकहि बयसक छलीह। मुग्धा गेली आ यौवना उतरली। तँ ओहि जाड़क मीठगर रौद मे हुनक सभहक बीच एक अनुरागक जन्म सहजहि भ' गेल।

ओ चारू युवती 'पिया-मिलन' बला भाव मे झूला झुलय लगलीह।

श्यामा जलपान सँ निवृत भ' हाथ बढ़ौलनि–"लाउ त' चिट्ठी!"

चिट्ठीक गमकौआ अत्तर सँ चारू कात महमह कर' लागल। श्यामा चिट्ठी पढ़ब शुरू केलनि–

'हे हमर प्राण सँ अधिक प्रिय तिलोत्तमा,

'अहाँक चितचोर कानपुरक एकटा गंजी फैक्टरी मे पैकर छथि। मालिक अछि एकटा पकलाहा दाढ़ीबला सरदार। ओकरा कतेक ने नेहोरा केलियैक, विनती केलियै आ पयरो छुलियै जे एक सप्ताहक छुट्टी दे। मुदा ओहि बुढ़वा कैँ कोनो दया-मया नहि भेलै। हमरा अहाँक मिलन मात्र छह दिन-रतुका भेल। मुदा हमरा एहन बोध होइत अछि जे हमर सभहक जन्म-जन्मक परिचय होअय।

'हे हमर प्राणबल्लभा! हम अहाँक विरह आगि मे धधकि रहल छी। कोना क' अहाँक सुन्दर मुखमंडल कैँ देखब, कोना क' अहाँक सुकोमल शरीर कैँ अंक मे समेटब से सोचि-सोचि मोन अहुरिया कटैत अछि। आश निरास भ' हृदय कैँ पीड़ा सँ भरि दैत अछि। आकुलता तेहेन ने बढ़ि गेल अछि जे कोनो काज मे जी नहि लगैत अछि।

'हे प्रियतमा! अहाँ कैँ मोन होयत, कोहबर घरक पौती सँ झांपल खिड़की बाटे एकटा तारक गाछ देखाइ पड़ैत छलै। ठीक ओहने तारक गाछ अहि गंजी फैक्टरीक सामने छै। ओहि तारक गाछ कैँ देखि क' छाती फाट' लगैत अछि आ आँखि सँ अश्रुपात होब' लगैत अछि।

'हे प्राणेश्वरी! अगिला होली तक छुट्टी होयत। मुदा ओकर अखनो तीन मास बिलम्ब छै। ता धरि मात्र चिट्ठीटा सहारा रहत। चिट्ठीक जवाब शीघ्र देब। अहाँक छोट भाइ, ललनजी, बारी मे लतामक गाछतर हमर अहाँक फोटो खिंचने छलाह, तकर एक कॉपी पठा देब। फोटो अबस्से पठायब।

अहाँक प्रियतम

फूल कुमार'

फूल कुमारक विरह निवेदन सँ परिपूर्ण चिट्ठी पढ़ि चारू युवतीक हृदय द्रवित भ' उठलनि। तिलोत्तमाक आँखि सँ नोर झहर' लगलै। मेनका सोचब शुरू केलनि जे जँ पकलाहा दाढ़ीबला बुढ़वा सरदरबा भेटितय त' निश्चय ओकर दाढ़ी उखारि लितियै।

मुदा तिलोत्तमाक आयल चिट्ठी सँ मंजुला आ श्यामा एहन भाव नगरी मे

पहुँचि गेलीह जाहि सँ हुनक पहिने कोनो परिचय नहि भेल छलनि। चमेलीरानीक आदेश मे समर्पित जूडो आ कराटे मे दक्ष मंजुला आ श्यामा नव नव गुदगुदी सँ उधिआय लगलीह। तिलोत्तमाक कोहबर घरक वर्णन सँ पहिने कहिओ भेंट नहि छलनि, तँ एकर अनुमान करब हुनका सभहक लेल कठिन छल जे तानल प्रत्यंचाक नोक सँ उपजल एतेक सिनेह किएक भ' जाइत छै? तिलोत्तमाक हाथ मे लहकैत लाल-लाल लहठी दिस मंजुला आ श्यामा कँ देखल किएक ने जाइत छै? मानल जे प्रेम त' उन्मुक्त होइते छै, मुदा ओ विरह मे डुबि एहेन आकुलता कत सँ ल' अबै छै?

बिलखैत तिलोत्तमा, व्याकुल भेल मेनका आ अधीर भेल मंजुला श्यामक कारणें जेना समय किछु काल लेल ठहरि गेल होअय। मुदा काल त' निर्मम होइत अछि। आइ तक की विधाता कोनो विरहिनीक नोर पोछि सकलाह अछि? मेनका आ तिलोत्तमा आमक गाछी दिस गेलीह आ मंजुला एवं श्यामा पीठ पर थैला लादि ठकबछिया प्रखंड हेतु डेग उठौलनि।

जखन नाक मे मरचरीह गंध प्रवेश करय त' बुझि जाइ जे ठकबछिया प्रखंड पहुँचि गेलै। बूढ़ बूढ़ानुसक कहब छनि जे ई स्थान पहिने गाछी छलै आ इलाका भरिक मुर्दा एतए जराओल जाइत छलै। ओहुना ठकबछिया प्रखंडक स्थापना दिन सूर्य ग्रहण लागल रहैक। सेकुलरवादी पोथी पतरा मे कहियो विश्वास नहि केलनि।

ढहल ढनमनायल प्रखंडक ऑफिस आ तकर पाछाँ सहस्त्रों खाधि सँ भरल एक छोटसन मैदान। मैदानक काते कात बीडीओ, सीओ, बड़ा बाबू, छोटा बाबू आदिक आवास। जगहक कमी नहि मुदा एकोटा फूलक गाछ देखा त' दिअ? ठाम-ठाम पर पांगल आ ठूठ सीसोक गाछ आ ओहि पर लटकल सजमनिक सुखायल लत्ती।

ठकबछिया प्रखंड मे तैंतीस पंचायत छै। प्रत्येक पंचायतक हजारो पेंसनधारी आ हुनक अभिभावक प्रखंड मैदान मे जहँपटार पसरल रहथि। तमाम पंचायतक मुखिया एकट्ठा भ' बीडीओक आवासक आगाँ जमा छलाह। लोशजापक सेवक, सेविका, नायक आ महानायक पेंसनधारीक सेवा-टहल मे व्यस्त छल। ताबे कियो चिचिया क' बजलै—"हौउ! कखन पेंसन बाँटल जेतैक?"

कियो ओहिना चिचिया क' जवाब देलकै—"बूड़िबक नहि त'। तोरा बुझल नहि छह जे बीडीओ बाबू एग्गारह बजे त' सुति क' उठिते छथि। सरकार उठता, मल-मूत्र त्याग करताह, पाउडर स्नो लगोताह। सब काज सम्पन्न करै मे हुनका दू

घंटा सँ कम लगतनि? बुझ' जे एक बजे जा क' पेंसन बँटवारा शुरू होयत। एखन त' नवो ने बजलैए।"

—"आह! आठ दस कोस सँ आयल लोक सभहक की हेतेक? ओहुना अइ साल जाड़ अगता शुरू भेल अछि। तखन इहो बात सत्य जे पेंसन लइ मे दुर्दशा त' होइते छै।"

पेंसन लेब'बला हेतु लोशजापबला टी स्टॉल खोलि देने छलै। नवका गुंड़ आ आदक रस मे बनल चाह निःशुल्क बृद्ध आ बृद्धा कैँ पिऔल जा रहल छलै।

तामे हल्ला भेलै—'अहा! 'स्वयं प्रकाश' अखबार आबि गेल।' सभहक कान ठार भ' गेलै।

अखबारक प्रथम पृष्ठ पर मोटका आखर मे समाचार छपल रहै—गुलाब मिसिर, सीएमक अज्ञातवास।

ओहि समाचारक नीचा छोट आखर मे ब्योरा रहै—मिस माउल्डी, सीएमक निजी सचिवक कथनानुसार पार्टी कार्यकर्त्ताक हुल्लड़बाजी आ अनियमितता सँ क्षुब्ध भ' गुलाब मिसिर कोनो निर्जन स्थान मे पलायन क' गेला अछि। ककरो नै बुझल छैक जे ओ कतए गेलाह। सम्पूर्ण प्रान्तक शासनतंत्र कराहि रहल अछि। छोटका बड़का हाकिम हुक्मरान सभ धुरछिया काटि रहल अछि।

ठकबछिया प्रखंड मे जमा हजारो लोक 'स्वयं प्रकाश' अखबार चाटए मे व्यस्त भ' गेल।

ठीक एक बजे दूटा चपरासी मिलि प्रखंड कार्यालयक सामने एकटा पैघ सतरंजी ओछौलक। सतरंजीक कात मे एकटा आरामकुर्सी राखि ओकरा गमछा सँ निमन जाहिंत झाड़लक। सतरंजी पर विकास पदाधिकारीक बड़ा बाबू क्षमाकान्त जी तथा अंचलाधिकारीक बड़ा बाबू बैकुण्ठ नाथ जी बैसलाह। क्षमाकान्तजी रजिस्टर पर औंठा लेताह आ बैकुण्ठ नाथ जी टाका गनि क' देथिन। थाना प्रभारी राम पदारथ सिंह अलग एक कुर्सी पर बैसल। ओकर बगल मे चारिटा सिपाही लाठी लेने ठार भ' गेल।

तकरबाद आयल श्रीमान ओमप्रकाश ढोलकिया, बीडीओ। अंचलाधिकारीक पावर सेहो यैह गिरने छल। विगत तेरह वर्ष सँ ढोलकिया नवाव बनि प्रखंड मे जमल छल।

ढोलकियाक वर्ण छल कारी, माथक केश ठार, पोतल पाउडरक बीच सँ देखार चेचक के पैघ-पैघ दाग। ढोलकिया अतिशय कुरूप छल। लाल डिम्हा कैँ

झपने गोल्डेन फ्रेमक चश्मा आ हिटलर कट मोंछ ओकर निर्लज्ज आ दुष्ट प्रवृति कैँ औरो जगजाहिर करै छल। रेशमी कपड़ाक सूट, ललका टाइ तथा दू भरिक सोनाक चेन ओकरा कंठ मे लटकल रहै।

मुदा सबसँ उम्दा बात, जतए प्रखंड भरिक लोकक नजरि अटकल रहै से छलै ढोलकियाक दाहिना कान मे झुलैत सोनाक कुंडल मे उज्जर हीराक नग।

अँग्रेजक जमाना मे जमींदारी प्रथा छलै। वर्तमान सरकार ओहि प्रथा कैँ हटा प्रखंड प्रथा चलौलक। बुझू जे जमींदारी प्रथाक समस्त अत्याचार उत्पीड़न आ व्यभिचार एकट्ठा भ' घृणा मे बदलि ढोलकियाक कान मे लटकल हीराक नग सँ ठोपे-ठोप चुबि रहल होअय।

ढोलकियाक इशारा पाबि क्षमाकान्त चिचिया उठल—"रमपुरा पंचायतक पेंसन लेब' बला लाइन मे आउ।"

जबाहिर प्रसन्न भेल जे सभसँ पहिले ओकरे पंचायतक नामक पुकार भेलै। ओकर महींस एक हथ्थू छै, तैँ ओ जतेक जल्दी गाम पर पहुँचत से नीक।

मुदा फेर पेंसन बँटबाराक काज मे बाधा उपस्थित भेलै। भेलै ई जे प्रखंड मे आयल हजारो व्यक्ति अपन-अपन अइँठि चापाकलक बगल मे फेकि देने छलै। ओतए बुझू जे प्रखंड भरिक कौआ जमा भ' गेल रहै। कौआ मे छीना-झपटी त' होइते छै। एक कौआ रोटीक टुकड़ा चोंच मे दाबि पड़ायल, दोसर कौआ खिहारलक। आब संयोग कहिऔ जे पहिल कौआक चोंच सँ रोटीक टुकड़ा छुटि ठीक ढोलकियाक माथ पर खसलै। रोटीक टुकड़ा मे कदिमाक तीमन लेभरायल छलै। ओ कदिमाक तीमन ढोलकियाक माथ, चेहरा आ रेशमी कोट पर छिड़िया गेलै। ढोलकिया क्रोध सँ आगि बबुला बनि गेल। बाजल—"क्षमाकान्त डेरा से मेरा बन्दूक लाओ!"

क्षमाकान्त बन्दूक अनलक, ढोलकिया टोटा भरलक। लोकक भीड़ दू फाँक मे बँटि फराक हटि गेल। ढोलकिया पाँच-दस डेग आगू बढ़ि निशाना लगा फायर केलक। आब ढोलकियाक कच्चा निशाना होइ वा कौआक औरदा बाँचल छलइ, कहब कठिन। मुदा एकोटा कौआ नहि मरल। हँ, कौआ उड़ि क' निपत्ता भ' गेलै।

सभटा प्रक्रिया मे एक सँ दू, दू सँ अढ़ाइ बाजि गेलै। क्षमाकान्त तौलिया सँ ढोलकियाक देह पर छिड़ियालय कदिमाक तीमन कैँ झाड़लक। ढोलकिया पूर्ण संतुष्ट भ' आरामकुर्सी पर बैसल आ पेंसन बँटबाराक काज फेर सँ आरम्भ भेल।

सभ सँ आगाँ छल इन्साफ मियां। सदा सँ परिपाटी रहलै जे पेंसन प्राप्त केलाक बादे लोक पसिखाना दिस जाइत छल। मुदा, इन्साफ मियां अगते भरिपेट

ताड़ी पिब क' आयल छल। ओ पेंसनक टाका गनलक चारि सौ पचास। फेर अंगूठा लगौलक आ ढोलकिया दिस घुमि क' बाजब शुरू केलक–"अल्ला तोरे सलामत मे बरक्कत करे। तोरे खानदान को जन्नत नसीब करे। तोरे जैसा काबिल हाकिम पाके हमरा सभ का मुराद पुरा हो गइल...?"

इन्साफ मियांक प्रलाप तखने बन्द भेलै जखन एकटा सिपाही ओकरा डेंग पकड़ि बाहर केलकै। दोसर नहि तेसर नहि, चारिम नम्बर पर छलै भैयो। ओ दाहिना हाथ मे टाका पकड़लक आ बामा हाथक औंठा कें कजरौटी मे बोर' लेल एक डेग आगाँ बढ़ल छल कि पाछाँ सँ जबाहिर चिचिया उठलै–"हाँ, हाँ! बाबू रूकब। औंठा नहि लगायब। अरौ बेइमनमा, दै छै साढ़े चारि सय आ निशान लगबै छै तेंतीस सय टाका पर। ई सभ राक्षस छी। सभ किछु सौंसे गिरइ लेल तैयार अछि।"

जबाहिरक आक्रोश सुनि राम पदारथ दरोगा तिलमिला उठल आ उठि क' समधान थापड़ जबाहिरक कनपट्टी पर मारि बैसल। जबाहिर अर्रा क' भूमि पर खसि पड़ल। भैयो अपन प्राणप्रिय बेटाक दुर्दशा देखि सुधि-बुधि बिसरि दरोगा पर झपटल–"ठहर रौ सार, एखने देखा दै छिऔ!"

क्षमाकान्त आ बैकुण्ठनाथ अकचका क' ठार भेल आ दरोगा कें बचबै लेल दौड़ल। ढोलकिया सिपाही दिस घुमि आदेश देलकै–"मुँह क्या ताकता है? साले को थूर दो!"

चारू सिपाही भैयो पर टूटि पड़ल। पहिले लाठीक चोट सँ भैयोक माथ सँ सोनितक पमारा बहि गेलै, भैयो अचेत भ' नीचा खसि पड़ल। सिपाहीक लाठी बरसिते रहलै।

एकाएक सभ दिस अनघोल मचि गेलै। हर्रबिर्रो धक्कम-धुक्का मे ढोलकिया ओकर स्टाफ दरोगा आ सिपाही सना गेलै। ओ त' सुकूर मनाउ जे लोशजाप बला भैयो आ जबाहिर कें अपन कब्जा मे ल' लेलक। नहि त' दुनू भरकूस्सा भ' जइतए।

क्रुद्ध भेल भीड़क हल्ला सँ प्रखंड काँपय लागल। सटलाहा गामक लोक भाला, गराँस, बरछा आ लाठी लेने दौड़ल–दौड़ैत जाह। पेंसन लेब' बला कें मारि देलकै। ढोलकियाक सिपाही लाशक पथार ओछा देलकै।

हजारक हजार लोक जमा भ' गेलै। ओही बीच फबकी देखि ढोलकिया एवं दरोगा अपन-अपन स्टॉफ संगे अन्तर्ध्यान भ' गेल। क्रोध सँ आन्हर भेल भीड़

ढोलकियाक आवास कैँ घेरि लेलकै। क्षमाकान्त बैकुण्ठनाथ आ थोड़ेक लगुआ-भगुआ बला मुखिया ढोलकियाक आवास मे घेरा गेल।

ढोलकिया मोबाइल सँ अपन आका कैँ राजधानी मे सम्पर्क कर' लागल। सीएमक गुम हेबाक कारणे मंत्री आ विधायकक राजनीतिक नगरी मे अफरा-तफरी मचल छलै। तखन ढोलकिया कैँ के जबाब दितैक? एमहर राम पदारथ दरोगा जिला मुख्यालय कैँ वायरलेस पर मदतिक गोहारि केलक त' उत्तर भेटलै–''यहाँ सभी ऑफिसर सीएम के गायब हो जाने के कारण मूर्छित हैं। मामला संगीन है। कुछ भी नहीं किया जा सकता है।''

उग्र भीड़क क्रोध त' प्रलयंकारी होइते अछि। ताहि परसँ भैयोक हत्या बला गप्प सँ उत्तेजना चरम पर पहुँचल छल। किछु भ' सकैत छलै। साँझ आ तकर बादक अन्हार होब' लगलै। बिजलीक खम्भा अन्हार मे सभठाम मुस्तैजी सँ ठार छल। मुदा तखनहि चारू कात अनेकों गैस लाइट जड़ि उठलै आ इजोत सभ ठाम पसरि गेलै। प्रकाशक संगहि लाउडस्पीकर सँ आबाज आब' लगलै–"हम लोक शक्ति जागरण परिषद दिस सँ बाजि रहल छी। हम ठकबछिया प्रखंडक महानायक किशुन बिहारी छी। हमर बात कैँ ध्यान सँ सुनू। पहिले सभ कियो शान्त भ' जाउ।"

एकाएक भीड़ निःशब्द भ' गेल। चुप्पीक सन्नहट मे सभहक कान लाउडस्पीकर दिस पथा गेलै। किशुन बिहारी फेर सँ बाजब शुरू केलनि–"पहिल सूचना जे भैयो आ हुनक पुत्र जबाहिर ठीक-ठाक छथि। भैयोक मरहम पट्टी करा देल गेल छनि। ओ स्वस्थ छथि।

–"हमरा सभ शान्तिप्रिय लोक छी। हमरा सभ कैँ उत्तेजित भ' कोनो अनर्गल काज नहि करबाक चाही। एतए प्रखंड मे लोशजापक अनेकों सदस्य अहाँक सेवा लेल तैयार छथि। दस गोट पैघ सामियाना ठार भ' रहल अछि। सभ कियो रात्रि विश्रामक हेतु ओहि सामियाना मे स्थान ग्रहण करू। लोशजाप दिस सँ अहाँ सभहक भोजन लेल पूरी तरकारी बनि रहल अछि। एक घंटाक भीतरे भोजन तैयार भ' जायत। सभ भोजन करब, रात्रि विश्राम करब आ कोनो बातक चिन्ता नहि करब। काल्हि प्रातःकाल अगिला कार्यक्रम पर विचार हेतै। लोशजाप बला भरि राति पहरा देताह।

किसुन बिहारी कैँ ठकबछिया प्रखंडक बच्चा-बच्चा चिन्हैत छलै आ आदर करैत छलै। हुनकर हुकूम कैँ के टारत?

राति बीतल। प्रातःकाल एक सुखद आश्चर्य सभ कैँ स्वागत केलकै। राति भरि मे की भेलै से त' सोचबाक विषय छल। मुदा परिवर्तित स्थिति साफ परिलक्षित होइत छलै। सतरंजी पर चुपचाप पाँत मे ढोलकिया क्षमाकान्त आ बैकुण्ठनाथ पेंसन बाँटय लेल बैसल छल। ढोलकियाक कान्ति आरो सियाह भ' गेल रहै तथा ओकर हीराबला कान मे पट्टी बान्हल छलै। क्षमाकान्त आ बैकुण्ठनाथक मुँह फूलल रहै जेना भरि राति कियो ओकरा थोपड़ने होइक। दरोगा आ ओकर लठिधर सिपाहीक कतौ पता नहि छलै। लोशजाप बलाक देखरेख मे पेंसन बँटबाराक काज होयत से स्पष्ट छलै।

दस बजित बजित पेंसन बँटबाराक काज समाप्त होब' लागल। किछुए पेंसनधारी पाँत मे ठार रहि गेल छला कि 'स्वयं प्रकाश' अखबारक आगमन भेलै। सभहक ध्यान अखबार दिस केन्द्रित होब' लागल—देखियै, अखबार आइ कोन तरहक फूलझड़ी छोड़ने अछि!

पहिल समाचार छलै जे निर्वाचन आयोग सभ नियम कायदा सँ संतुष्ट भेलाक ऊपरान्त लोक शक्ति जागरण परिषद कैँ राजनीतिक पाटीक रूप मे मान्यता द' देलक। चुनाव चिन्ह भेल धधकैत अंगारक बीच प्रकाश छिड़िअबैत तारा। वाह! वाह!! खूब पसिन्न भेल।

अहि समाचारक दहिना कात ठकबछिया प्रखंडक घटित घटनाक सत्य आ पूर्ण विवरण छल। तकर नीचा मे मोट आखर मे समाचार छपल छल—गुलाब मिसिर, सीएमक अपहरण। फेर छोट आखर मे सहकारिता मंत्री चौहानक कथन छल—"उस रात सोनपुर मेला मे सांस्कृतिक कार्यक्रम समाप्त कर सीएम दस बजे बाहर आये थे। मैं उनके साथ-साथ था। वे तो लोकप्रिय नेता हैं ही, इसीसे हजारो जनता ने उन्हें घेर लिया था। मंत्री, विधायक, सिक्युरिटी आदि सभी जनता के भीड़ में फेंटा गया था। उसी समय बिजली गुम हो गई थी। चारो तरफ अन्धकार हो गया था। कुछ ही सेकंड के बाद बिजली वापस आयी और प्रकाश फैल गया। लेकिन हमलोग आश्चर्यचकित रह गये थे क्योंकि सीएम लापता हो चुके थे। मैं स्पष्ट इस मत में विश्वास रखता हूँ कि सीएम का अपहरण हुआ है। चुनाव नजदीक है और यह निश्चय ही उनके राजनीतिक दुश्मन का पूर्व नियोजित काम है।"

बिसुन बाबू समाचार पढ़ि अपन काका कैँ पुछलनि—"पढ़ुआ कका, अहाँ बुजूर्ग छी, अँग्रेजक जमाना सँ दुनिया देखैत एलिअइ हें। आब कहू जे सीएम

अज्ञातवास गेलाह की अपहरण मे फँसला, अहि मे सत्य की?"

पढ़ुआ कका पेंसनक तैंतीस सय टाका कैं तेसर बेर गनि रहल छला आ मनहिमन सोचै छला जे हथपैंच चुकौलाक बाद कतेक टाका बाँचत? कोनो वैद्य हुनका कहने रहनि जे बूढ़ लोक जँ एक पाव दही रोज खाय त' ओकर औरदा दस-पाँच वर्ष बढ़ि जाइत छै। पढ़ुआ कका अपन सोच मे एतेक ने ढुकल छला जे ओ बिसुनक प्रश्न ठीक सँ नहि सुनि पौलनि।

आब अहुना कहब मुस्किले छल जे कोन समाचार सत्य? सीएम अज्ञातवास मे गेलाह आ कि अपहरणक शिकार भेलाह से के कहय? ई समस्या त' राजधानी कैं ओझड़ौने छलैहे। मुदा ओतए कोनो निष्कर्ष नहि निकलल आ दस दिनक समय बीति गेल। तखन ई बात भारतक राजधानी मे पहुँचल।

केन्द्र सरकारक विपति आरो गम्भीर छलै। बियालिस गिरहक पेबन्द लागल गठबंधन सरकार पमरियाक नाच नाचि रहल छलै। प्रत्येक समस्याक निदानक पूर्व एक बेर सभ गिट्ठहक पुछारि करब अनिवार्य छलै अन्यथा अपन गठबंधनक डोरीक ढील हेबाक अंदेशा।

ओना त' एहन स्थिति मे संविधान प्रेसिडेंट रूलक प्रावधान बतौने छै, मुदा, पछिला बेर प्रेसिडेंट रूलक चर्चा क' केन्द्रीय सरकार मुँहे बले खसल छल। तकरा बादे सँ केन्द्रीय सरकार प्रेसिडेंट रूल सँ ओहिना परहेज करब आरम्भ केलक जेना कि बूढ़ लोक गरिष्ठ भोजन सँ करैत अछि।

एहन स्थिति मे की हौएक? बहुत विचार भेल। फेर सँ संविधान कैं चाटल गेल आ बुधियार विधि-वेत्ता सँ राय पूछल गेल जे एहन मार्गक आविष्कार करू जाहि सँ काजो भ' जाए आ सरकारो राम नाम सत्य सँ बाँचि जाए।

अन्त मे निश्चय भेलै जे एक राज्य मंत्रीक अध्यक्षता मे छः अलग-अलग विभागक सचिव कैं नियुक्त क' कुल सात सदस्यक समिति बनाऔल जाए जे प्रान्त मे जा क' 'फैक्ट्स फाइंडिंग' करए आ केन्द्रीय सरकार कैं वस्तुस्थिति सँ अवगत कराबय।

'फैक्ट्स फाइंडिंग' समिति पटना पहुँचल। पटना सँ प्रकाशित होब' बला तमाम अँग्रेजी आ हिन्दी समाचार पत्रक सम्पादक मंडली तैयार छल। किछुए मास पहिले सँ प्रकाशित भ' रहल 'स्वयं प्रकाश' मैथिली दैनिक अखबार पत्रक प्रति हुनका सभहक इर्खा उच्चतम शिखर पर पहुँचि गेल छल। ओ सब अवसर पाबि 'स्वयं प्रकाश' अखबार पर आघात करबाक लेल पूर्ण उत्सुक छलाह। हवाइ अड्डा

पर उतरिते समितिक सदस्य कैँ ओ सम्पादक मंडली घेरि अपन निचोरल बात कहलक जे जड़ि मे अछि 'स्वयं प्रकाश' अखबार। ई अखबार नित्य नया-नया समाचार प्रकाशित करैत रहल। जेना गुलाब मिसिर, सीएमक प्रत्येक गतिविधि सँ ई अवगत होअय।

दिल्ली सँ आयल समिति कैँ कोनो सूत्र चाही। ओ ध्यान सँ ओहि सम्पादक मंडलीक गप्प सुनलक आ तथ्य कैँ स्वीकार केलक। तैँ इनक्वाइरीक प्रारम्भ 'स्वयं प्रकाश' अखबार सँ करब उचित बुझलक। हो न हो, गुलाब मिसिरक अज्ञातवास अथवा अपहरणक पूर्ण जानकारी ओहि अखबार कैँ होइक। अस्तु, ओ समिति हवाइ अड्डा सँ सोझे बेगूसराय स्थित 'स्वयं प्रकाश' अखबारक कार्यालय हेतु प्रस्थान केलक।

लगभग चारि बजे अपराहन मे ओ सब स्वयं प्रकाश अखबारक मुख्यालय मे पहुँचैत गेलाह। सम्पादक मंडली हुनका सभकैँ से ने पाठ पढ़ा देने छलनि जे समितिक सदस्यक आचरण मे 'धेलहूँ चोर कैँ' बला प्रवृतिक जागरण भ' चुकल छल। ओ सभ उत्तेजित आ हड़बड़ायल छला। सभ कियो मुख्य व्यवस्थापक डी. एन. धर्माकरक विशाल एवं सुरूचिपूर्ण सजाओल ऑफिस मे पहुँचि अपन-अपन परिचय एवं अयबाक उद्देश्य कहलनि। धर्माकरजी अत्यन्त शिष्ट भाषा मे अपन परिचय द' हुनका सभ कैँ ऑफिस मे राखल सोफा पर बैसक लेल आदरपूर्वक आग्रह कयलनि।

'फैक्ट्स फाइंडिंग' समितिक अध्यक्ष छलाह गणपति चौबे। ओ केन्द्र मे राज्यमंत्री रहथि। छत्तीसगढ़ राज्यक जगदलपुर हलका सँ ओ सांसद छला। चाय-बिस्कुटक औपचाारिकता जखन समाप्त भेलैक त' चौबेजी 'स्वयं प्रकाश' अखबारक वित्तीय स्थितिक जानकारीक आदेशपूर्ण मांग कयलनि।

धर्माकरजी अपन चीफ एकाउनटेन्ट टी. पी. प्रभाकरण कैँ बजा क' समिति द्वारा मांगल विषयक प्रत्येक जानकारी प्रस्तुत करबाक लेल आदेश देलनि।

प्रभाकरण ओहि ऑफिस मे राखल अनेकों कम्प्यूटर 'प्रोजेक्टर' प्रिन्टर आदि मशीनक टेबुल लग पहुँचि थोड़ेक जरूरियात स्वीच कैँ दाबि एक कात ठार भ' गेलाह। किछु क्षणक ऊपरान्त टेली प्रिन्टर्स सँ छपल स्टेटमेन्ट बाहर आब' लगलै। विभिन्न स्टेटमेन्टक पुलिन्दा कैँ प्रभाकरण समितिक अध्यक्ष आगाँ राखल टेबुल पर राखि बाहर निकलि गेला।

समिति मे फाइनान्स डिपार्टमेन्टक सचिव मधुकर कुलकर्णी ओहि स्टेटमेन्टक

अध्ययन मे लागि गेला।

विभिन्न स्टेटमेन्ट सँ ब्योरा प्राप्त भेल जे 'स्वयं प्रकाश' मैथिली भाषाक दैनिक समाचार पत्र हर-हर महादेव ट्रस्टक स्वामित्व मे स्थापित भेल अछि। ट्रस्ट द्वारा एक करोड़ नगदी आ सात एकड़ भूमि जकर मूल्य बतीस लाख टाका द' पत्रक आरम्भ भेल अछि। तदुपरांत तीस हजार व्यक्तिक हाथे दस रुपयाक एक सय शेयर बेचल गेल जाहि सँ तीन करोड़ टाकाक उगाही भेल। फेर ट्रस्टक गारन्टी मे विभिन्न बैंक सँ साढ़े नौ प्रतिशत सूद पर एक करोड़ साठि लाख टाका ऋण स्वरूप आनल गेल अछि।

भवन निर्माण पूर्णतः आधुनिक कम्प्यूटराइज्ड मसीन एवं अन्य उपकरण आदिक खरीद भेल। स्टेटमेन्ट मे 'टी एकाउन्ट' तथा 'एसेट एण्ड लाइबलीटीज' बला देखि कुलकर्णी संतोष प्रगट केलनि। फेर कर्मचारीक नियुक्ति, अखबारक सर्कुलेशन, वितरण आदिक संपुष्ट विवरण छल। संगहि आइ तकक' 'बैलेन्स सीट' तथा 'लॉस एण्ड प्रोफिट'क स्पष्ट ब्योरा तक छल। कुलकर्णी सब स्टेटमेन्टक अध्ययन समाप्त क' चौबेजी सँ कहलनि—"एकाउन्ट सही और दुरूस्त है।"

तकर बाद गणपति चौबे फेर सँ धर्माकरजी सँ गुलाब मिसिर सम्बन्धी प्रश्न कयलनि जे 'स्वयं प्रकाश' समाचार पत्र मे पहिल दिन अज्ञातवास तथा दोसर दिन अपहरणक समाचार आयल। अहि समाचारक 'सोर्स ऑफ इन्फॉरमेशन' की छल।

धर्माकरजी अपन 'एडिटर-इन-चीफ' सतीश चन्द्रा केँ बजा अवश्यक निर्देश देलनि। ओही घर मे तत्काल प्रोजेक्टर चालू भेल। मिस माउल्डी तथा सहकारिता मंत्री चौहानक साक्षात्कार क्रमशः स्क्रीन पर देखाऔल गेल। दिल्ली सँ आयल फैक्ट्स फाइंडिंग समितिक प्रत्येक सदस्यक उत्तेजना आ जिज्ञासाक अन्त भ' गेल।

मुदा गुलाब मिसिर कत' गेला, हुनका की भेलनि से प्रश्न निरूतरे रहल। सभ सदस्य टकटकी लगा धर्माकरजी दिस ताकय लगलाह। सभ सदस्य केँ अपना दिस तकैत देखि एवं हुनक मनोदशाक अनुमान करैत धर्माकरजी अध्यक्ष चौबेजी सँ कहलनि—"अगर मेरी राय को आपलोग मानें तो मैं यही कहूँगा कि आप सभी यहीं रात्रि विश्राम करें। यहाँ सभी तरह की सुविधा है और आपलोगों को कुछ भी कष्ट नहीं होगा। मुझे भी रातभर का समय मिलेगा। मैं आपके साथ हूँ। आपकी चिन्ता, प्रान्त की चिन्ता तथा देश की चिन्ता अब मेरी भी चिन्ता है। मैं आपसे सहानुभूति रखता हूँ। हो सकता है, मिल जुलकर काम करने से समस्या का कोइ हल निकल आबे।"

समितिक अध्यक्ष तथा अन्य सदस्य धर्माकरजीक आग्रह कैँ स्वीकार क' लेलनि।

रातुक करीब नौ बजे गणपति चौबे आ धर्माकरजी एकटा दोसर छोट कोठली मे बैसल गप-सप करैत छलाह। गणपति चौबे प्रश्न केलनि–"मैं जानना चाहूँगा कि आप देश के किस प्रान्त से आये हैं और आप 'स्वयं प्रकाश' अखबार के व्यवस्थापक कैसे बने? निश्चय ही आप मिथिलांचल के बासी तो नहीं हो सकते हैं?"

धर्माकरजी चौबेजीक प्रश्नक उत्तर मे प्रश्न क' बैसला–"हम मैथिली भाषा मे गप्प करी त' अहाँ कैँ कोनो असुविधा नहि हबाक चाही? अहाँक ममहर त' मिथिलांचले मे अछि ने?"

–"जी नहि। कोनो असुविधा हमरा नहि होत। हमे सभ अपना परिवार मे अही भाषा मे बोलैत छियै। हमर माय त' मिथिलाक छलथीन्हें। औरो की बोलल जाए। हमरा इलाका के मंडला, रायपुर, जगदलपुर सन बहुतो जगह मे त' छीटाक छीटा मैथिल बास करै हथीन। मुदा, अहाँ धर्माकरजी त' निश्चय अहि भूखण्डक नै छियै। फेर इतना अच्छा मैथिली कोना बजै छियै से ने कहू?"

धर्माकरजी किछु क्षण चुपे रहला, फेर कहलनि–"हमर जन्म स्थान महाराष्ट्र प्रान्तक पुणे सँ लगभग पच्चीस किलोमीटर दक्षिण संत ज्ञानेश्वरक समाधि स्थल सँ सटल एक ग्राम मे अछि। हम पुणे विश्वविद्यालय सँ एनसियन्ट हिस्ट्री मे एमए केलहुँ। छात्रवृत्ति पाबि लिंग्यूएस्टिक अर्थात् भाषा विज्ञान विषयकैँ ल' पेरिस विश्वविद्यालय सँ पीएचडीक डिग्री प्राप्त क' भारत वापस अयलहुँ। एतए मानव संसाधन विभाग सँ उत्तर भारतक भाषा आ बोली पर वैष्णव कविक प्रभाव सम्बन्धी रिसर्च करबाक लेल फेलोसीप प्राप्त केलहुँ। हम उत्तर भारतक पश्चिमी भागक भाषा आ बोलीक अध्ययन आरम्भ कएल। जाठ, गुज्जर, पंजाबी, ब्रज, अबधी आ भोजपुरी आदि भाषा आ बोलीक विस्तृत जानकारी प्राप्त करैत मिथिलांचल मे प्रवेश केलहुँ। एतए हमरा विद्यापति नामक कविक परिचय भेल आ हम हुनक रचना संसार देखि अवाक् रहि गेलहुँ।"

गणपति चौबे स्वयं विद्वान, सचरित्र, कर्मठ, निष्ठावान एवं इमानदार राजनीतिक नेता छलाह। धर्माकर जी द्वारा व्यक्त हुनक जीवन गाथा सुनि हुनका तीब्र जिज्ञासा भेलनि। अस्तु, ओ एतबे कहलनि–"रूकू नहि, आगाँ कहिऔ।"

धर्माकर जी मिथिलाक अतीत मे बीतल अध्यात्मक साम्राज्य मे डुबि गेल

रहथि। चौबेजीक आग्रह सुनि चेति गेलाह आ कहब शुरू केलनि—"धर्मक नाम पर बहुतो कविक रचना सैकड़ो वर्ष धरि जीवन्त रहल अछि। मुदा, विद्यापतिक रचना त' मुक्त आकाश मे चन्द्रमाक ज्योत्सना बनि समग्र मिथिलांचल मे पसरि गेल आ एखनहुँ अपन माधुर्यक रसबरसा सँ एतुका माटि कैँ आप्लावित क' रहल अछि। माँ सरस्वतीक वीणा सँ निकलल सप्त लहरीक झंकार सदृश हुनक गीत मिथिलाक प्रत्येक आंगन कैँ संगीतमय केने अछि। विगत सात-आठ सय वर्ष सँ हुनक पद एकहि छन्द आ भाव मे अलंकृति एतुका धरती कैँ इन्द्रधनुषी रंग मे रंगने अछि।

—"चौबेजी, हम भाषा विज्ञानक छात्र रहलहुँ अछि। नवीन भाषा सिखैक हमरा रुचि त' स्वाभाविके अछि। मैथिली भाषा त' हम स्वतः सीखि गेलहुँ। मैथिली सम्पूर्ण भाषा अछि। एकर अपन लिपि आ विशिष्ट व्याकरण छै। उत्तर भारतक मैथिली प्राचीनतम भाषा थिक। अहि भाषाक सबसँ अद्भुत पक्ष छै एकर मधुरता, सरलता आ पराग सदृश सरसता। खास क' विद्यापतिक रचना हमरा सम्मोहित क' लेलक। हम एकर वृहद अध्ययनक लेल प्रयासरत भेलहुँ।

—"सत्य मे चौबेजी, जखन भाषा बैखरी, मध्यमा, पश्यन्ति सँ आगाँ बढ़ि परा मे पहुँचि परा विद्या बनि जाइत छै; जखन अनाहत चक्र पर शिव शिवाक मिलन सँ हृदयाकाश महाकाश मे परिवर्तित भ' जाइत छै; जखन ललाटक अष्ट ग्रह विलुप्त भ' हृदय मे अष्ट कमल दल बनि प्रस्फुटित होइत छै; जखन जीव अन्नमय शरीर सँ आगाँ बढ़ि प्राणमय शरीर, मनोमय शरीर, विज्ञानमय शरीर कैँ पार करैत आनन्दमय शरीर मे प्रवेश क' आत्मा सँ साक्षात्कार करैत छै, तखने, हँ चौबेजी तखने, विद्यापति सदृश्य कवि गाबि उठैत छै—सखि हे, की पुछसि अनुभव मोय। जनम अवधि हम रूप निहारल, नयन न तिरपित भेल...।

—"सम्पूर्ण जीवन हुनक रूप कैँ निहारल, मुदा आँखि कैँ तृप्ति नहि भेलै। तृप्ति कत' सँ पाबी? हम फेर सँ डुबकी लगौलहुँ। जखन उच्च कोटिक सांस्कृतिक परिवेश होए तखने ने विद्यापति सनक कविक आगमन संभव होइत छै। हम ओहि परिवेशक जानकारी हेतु चारू कात ताकए लगलहुँ। हमरा भेटल ओ स्थान। स्थान छलैक दरभंगा स्थिति संस्कृत विश्वविद्यालयक पुस्तकालय। पुस्तकालय छल अध्यात्म विषयक हस्तलिपिक भंडार, मैथिल पंडितक ज्ञान-रत्न सँ परिपूर्ण।"

धर्माकरजी अपन मोनक भाव कैँ समेटि चुप भ' गेला। चौबेजी अधीर भ' कहलनि—"आह! से ने कहू। ओहि पुस्तकालय मे अहाँ कैँ की की भेटल? ओतए कोन विषयक ज्ञान अहाँ प्राप्त केलहुँ। हमर निवेदन जे अहाँ फरिछा क' कहिऔ।"

धर्माकरजी टेबुल पर राखल गिलास सँ एक घोंट जल पीबि क' कहलनि– "मनुक्ख चिन्तनशील प्राणी थिक। सदिखन मनुक्ख कँ एकहिटा जिज्ञासा उदिग्न करैत रहलै जे मनुक्ख के थिक? मनुक्ख कत सँ आयल आ कत' जाइत अछि? अहि प्रश्नक उत्तर तकै मे सम्पूर्ण अध्यात्मक श्रीगणेश होइत अछि। सभ सँ पहिने ओहि पुस्तकालय मे हमरा चर्वाक मुनि सँ भेंट भेल। ओ कहलनि–ऋण कर' आ घृत पिब'। मृत्यु सभ मनुक्खक अन्त थिक आ मृत्युक बाद किछु नहि छै।

–"तखन वैशेशिक आगमन भेल। ओ अणुक पत्ता लगौलनि। हुनक कहब जे ध्वनि, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी आ सभटा वस्तु जड़-चेतन अणु सँ भेल। हँ वैशेशिक कँ संशय अवश्य रहलनि जे मृत्यु मनुक्खक अन्त नहि छी। मृत्युक बादो शायद संसार छैक। तखन अयलाह नैयायिक। ओ आत्माक खोज कयलनि। हुनक कहब छल जे शरीर मे आत्माक वास छै तथा शरीर आ आत्मा दुनूक महत्व छै। हुनका सँ एक डेग आगाँ बढ़ि सांख्य दर्शनबला कहलनि जे सभ किछु प्रकृति थिक। त्रिगुनामयी प्रकृति सँ संसार प्रगट भेल अछि। अन्त मे सभ किछु प्रकृति मे समाहित भ' जाइत अछि। प्रकृति अनेको पुरुष कँ जन्म देलनि। त्रिदेव कँ प्रकृति प्रगट केलनि।

–"यौगिक मत कर्म प्रधान भेल। कर्म सर्वोपरि आ कर्मक फल भोगै लेल जन्म-मृत्युक चक्कर। कर्मक भोग सँ बाँचब असम्भवे थिक। पूर्व मीमांसक कहलनि– हौउ, कर्म त' यज्ञ थिक। मनुक्ख बिना कर्मक रहियो ने सकैत अछि। अस्तु नीक कर्म करैत रह' आ आनन्दमय जीवन जिबैत रह'।

–"सबहक अन्त मे हमरा उत्तर मीमांसक उक्तिबोध अहि पुस्तकालय मे भेल। अद्वैत ब्रह्म सँ साक्षात्कार भेल। ओ कहलनि अज्ञानक कारणें मनुक्ख अपना कँ शरीर आ मोन बुझैत अछि। ब्रह्मांड मे सत्य मात्र एकटा अद्वैत ब्रह्म, बाँकी भ्रम। आब ओ ब्रह्म ई नाटक, ई टाटक किएक करै छथि? संसार कँ प्रगट आ नाश किएक करै छथि? उत्तर मे नेति, नेति अर्थात् ककरो ने बुझल छै। ओ बात मात्र अद्वैत ब्रह्म कँ पत्ता छन्हि।

–"मिथिला मे प्रत्येक दर्शनक महान चिन्तक आ प्रकांड विद्वान रहला अछि, जनिक ज्ञानक भंडार ओहि पुस्तकालय मे हमरा उपलब्ध भेल आ हम कृतार्थ भेलहुँ। मुदा सभसँ विशिष्ट बात ई जे मिथिला सनातन धर्मक महत्व सभ सँ अधिक देलनि। वेद सेहो सनातन धर्म कँ स्वीकार केलनि अछि। मुदा सनातन धर्म सही अर्थ मे मिथिले मे अपन स्थान ग्रहण केलक। मिथिलाक पंडित अनुसारे

सनातन धर्म अपनहि आप मनुक्खक संगहि अवतरित होइत अछि। सनातन धर्म सदिकाल मनुक्ख कैँ जिबाक प्रयोजन कैँ सिद्ध करै अछि। सनातन धर्मक परिपक्वता मिथिले मे दृष्टिगोचर होइत अछि। हमरा औरो की चाही? हमरा त' सत्यक दर्शन भ' गेल। हमरा त' सभ किछु भेटि गेल आ मैथिल बनि आनन्द सँ जीवन बितब' लगलहुँ।"

किछु काल धरि धर्माकरजी आ चौबेजी चुपेचाप रहला। चौबेजी कैँ मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक उत्कृष्ट परिचय भेटलनि। ओ मनहिमन अपन मातृभूमि कैँ प्रणाम केलनि आ धर्माकर जी सँ कहलनि—"मिथिलाक समग्र वैभव ज्ञान पाबि हम धन्य भेलहुँ। आब कहू जे अहाँ 'स्वयं प्रकाश' अखबारक व्यवस्थापक कोना बनलहुँ?

राति बहुत व्यतीत भ' चुकल छलै। 'स्वयं प्रकाश' अखबारक अन्तिम फर्मा सेहो तैयार भ' चुकल छलै। एक बजे तक अखबारक प्रति चारू कात अपन गन्तव्य स्थानक लेल बिदा होइत छै। धर्माकरजी चौबेजीक पूछल प्रश्नक उत्तर देबाक लेल तत्परे भेल छलाह कि एक कर्मचारी आबि हुनक हाथ मे एकटा पर्चा थम्हा देलनि। धर्माकरजी ओहि पर्चा मे लिखल संदेश कैँ पढ़लनि एवं प्रसन्न भ' उठलाह। फेर उत्साह सँ चौबेजी दिस तकैत बजला—"अहाँ स्वयं विद्वान थिकहुँ। हम मात्र विचारक आदान-प्रदान हेतु कहैत छी। प्राचीनतम आर्य-धर्म कैँ बुझबाक लेल ब्रह्म सूत्र, विभिन्न उपनिषद आ गीता कैँ बुझब आवश्यक छै तखने चारू वेदक प्रत्येक ऋचा कैँ बुझबाक सामर्थ भेटैत छै। संत ज्ञानेश्वरक ज्ञानेश्वरी भगवतगीता पढ़ि गीताक पाठ समाप्त कयल। विभिन्न विद्वान आ खास क' सी. राजगोपालाचारीक पोथी उपनिषद कैँ बुझवा मे मददि केलक। मुदा सभसँ कठिन रहि गेल ब्रह्म सूत्रक ज्ञान।

—"चौबेजी, जखन अपन पूर्खा लोकनि अहंकारक चारू पयदान यथा काम, क्रोध, लोभ आ मोह पर विजय प्राप्त कर' मे असमर्थ भ' गेला त' दोसर सहज सिद्धांतक प्रतिपादन केलनि। ओ भेल धर्म, अर्थ, काम आ मोक्ष। बड़ नीक। आब धर्मक पूर्ण स्वरूपक परिचय चाही तखने गाड़ी आगाँ बढ़त। धर्म अथवा ब्रह्म कैँ जान' लेल हम ब्रह्म सूत्रक अध्ययन आरम्भ केलहुँ। शंकराचार्यक ब्रह्म-सूत्रक भाष्य हमर बुद्धि बलाक लेल बुझब कठिने रहलै। किंतु हमर सौभाग्य जे संस्कृत विश्वविद्यालयक ओहि पुस्तकालय मे ब्रह्म सूत्रक भाष्य मैथिली भाषा मे भेटल। आह! आश्चर्य! अत्यन्त सरल भाषा मे निवेदित ब्रह्म-सूत्रक टीका पाबि हमर हृदय

आनन्द सँ पुलकित होम' लागल। हम ओही पोथी मे निमग्न रही त' चमेलीरानीक भेंट करबाक लेल निमंत्रण भेटल।"

—"चमेलीरानी के?"

—"प्रायः ई इश्वरीय चमत्कार छै जे मनुक्खक कष्ट हरण करबा लेल महान हस्तीक पृथ्वी पर आगमन होइत छै। चमेलीरानी छथि 'हर हर महादेव' ट्रस्टक चेयरमैन, लोक शक्ति जागरण परिषदक अध्यक्षा, 'स्वयं प्रकाश' समाचार पत्रक प्रणेता आ हमर सदृश हजारो व्यक्तिक प्रेरणा। चमेलीरानी सँ जखन बैद्यनाथधामक कैलाश कुंज भवन मे प्रथम भेंट भेल त' अनुभव भेल जेना स्वयं महामाया पृथ्वी पर अवतरित भेल छथि। हुनकँ अनुकम्पा सँ हमर सौभाग्य भेल जे हम माँ मैथिलीक सेवा मे, 'स्वयं प्रकाश' अखबारक व्यवस्थापक पद पर आसिन भेलहुँ अछि।

फैक्ट्स फाइंडिंग समितिक अध्यक्ष चौबेजी स्वयं नव नव फैक्ट्स मे ओझड़ा गेला। धर्माकरजी सँ परिचय आ हुनक पांडित्य सँ ओ प्रभावित भ' गेल छलाह। ताहू मे धर्माकरजीक मुँहे चमेलीरानीक प्रशंसा सुनि ओ हतप्रभ भ' उठला। चौबेजी राजनीतिक माहिर आ जागल पुरुष रहथि। मुदा, एखनुका परिस्थिति मे हुनक राजनीतिक दर्प चकनाचूर भ' चुकल छलनि। धर्माकरजी द्वारा वर्णित चमेलीरानीक छवि सँ हुनक कल्पना मे अनेकों अस्थिर दृश्यक सम्मेलन होब' लागल। ओ एक तरहें असहाय होइत कहलनि—"धर्माकरजी, हमर स्वयं प्रकाशक प्रांगण मे आयब हमर पूर्व संचित नीक कर्मक फल थिक। अहाँ सँ वार्तालाप क' एहन ज्ञानक तत्त्व पौलहुँ जे प्रत्येक मनुक्खक अन्तिम इच्छा होइत छैक। आब हम आगाँ प्रश्न नहि करब, मात्र एकटा जिज्ञासा करैत छी आ अहाँ सँ आग्रह करब जे एकर पूर्ति क' दी। मैथिली कैँ अष्टम अनुसूची मे स्थान भेटि गेलनि। आब की मैथिल बन्धु मिथिला राज्यक आन्दोलन चलौताह?"

—"चौबेजी, अहाँक जिज्ञासाक औचित्य हमरा नहि बुझना जाइत अछि। अहि विषयक एखन चर्चा होइक तकर त' कोनो अवसर नहि छैक। कनेक फरिछा क' कहू?"

चौबेजी उत्तर देबा सँ पूर्व छत दिस शून्य मे किछु काल तक देखैत रहलाह। फेर कहलनि—"हमर व्यवसाय छी राजनीति। हमर दृष्टि आगाँ, बहुत आगाँ तक देखि रहल अछि। एहि प्रान्त मे राजनीति पलटिया लेत तकर सम्भावना सेहो स्पष्ट देखा रहल अछि। तैँ जिज्ञासा कएल।"

—“चौबेजी, अहाँक जिज्ञासा कँ हम शान्त क’ सकब ताहि स्थिति मे हम नहि छी। हम त’ चमेलीरानीक एकटा पिआदा भरि छियन्हि। हुनक आदेश कँ अनुशासित रहि पालन करब हमर कर्तब्य अछि। हम हुनक भविष्यक योजना कँ बुझि सकब तकर योग्यता नहि रखैत छी। मुदा अहाँ जे जिज्ञासा कयलहुँ अछि तकर थोड़-बहुत चर्चा करब, से अनैतिक नहि होयत। हम आ अहाँ, दुनू मिथिलांचलक परिधि सँ बाहरक लोक थिकहुँ। मिथिला राज्य बनैक अथवा नहि बनैक, एकरा हेतु एक बिहंगम दृष्टि होयब आवश्यक। तकरा संगहि हमर अहाँक विचार पाखंड एवं अनाधिकार मांगक परिभाषा सँ हटल होयत।

—“अलग-अलग प्रान्त किएक बनैत छै? प्रश्नक जवाब छैक जे भाषा, खायब-पिअब, पहिरब-ओढ़ब आ खास किस्मक सांस्कृतिक परम्परा, एक समाज कँ दोसर समाज सँ अलग क’ दैत छैक। ई सभटा कारण मिथिला मे विद्यमान छैहे। निश्चित भूभाग, प्राचीन आ अर्वाचीन सांस्कृतिक परिवेश, भौगोलिक स्थिति, कृषिक अपार संभावना आदि सभटा त’ देखिए रहलहुँ अछि। मुदा अलग प्रान्त बन’ लेल जे सभसँ जरूरी तत्त्व छै आ जकर मिथिलांचल मे पूर्ण अभाव छै ओ तत्त्व थिक भावनात्मक एकता। मिथिलाक आर्थिक विपन्नता एतेक ने गम्भीर छैक जे समाज विकृति स्वरूप मे पहुँचि गेलैक अछि। मिथिला मे बास केनिहार अधिकांश लोक अपना कँ मैथिल कहबे नहि करैत छथि। बाढ़ि आ सुखार, शासन पद्धतिक दुर्दशा, जाति-प्रजाति मे कलह, धर्मक नाम पर कुरीतिक अम्बार, संस्कार विहीन सोच आ मर्यादा सँ कोसो दूर अभिमान आदि दुर्योग मिलि क’ अहि तरहक समाजक निर्माण क’ देलक अछि जतए भावनात्मक एकता कँ स्थापित करब दुरूह बनल अछि।

—“प्रायः सैह सभ बात छै, तेँ चमेलीरानीक कहब छन्हि जे आर्थिक सम्पन्नता सभटा दुख कँ सहजहि समाप्त क’ देत। आ तेँ ओ लोक शक्ति कँ जागरण क’ समस्याक निदान कर’ चाहैत छथि। हुनक इहो कहब छन्हि जे एतुका उर्वरा भू-भाग एवं व्यक्तिक असाधारण योग्यताक उपयोग क’ अहि इलाकाक सर्वाङ्गीण विकास कएल जा सकैत अछि। आ तकरा लेल अपेक्षित अछि भोटक राजनीति पर अधिकार। राजनीति पर पूर्ण अधिकार क’ आर्थिक सम्पन्नता आनल जा सकैत अछि। तखनहि एकर प्रभाव सँ प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक सम्प्रदाय आ प्रत्येक धर्मक लोक अपना कँ मैथिल कहि गौरवक अनुभव करताह। ई जखन हेतैक त’ भावनात्मक एकता स्वतः स्थापित भ’ जेतैक आ तकरा बाद सभटा मांगक पूर्ति

अपनहि आप होइत जेतैक।

चौबेजी, टकटकी लगा क' धर्माकरजी दिस ताकि रहल छलाह। हुनक चुप होइते पूछि देलनि–"अहाँक विचारे लोक शक्ति जागरण परिषद अगिला चुनाव मे पूर्ण बहुमत प्राप्त क' लेत?"

–"चौबेजी, हम चमेलीरानीक व्यक्तित्व, दूरदर्शिता एवं योग्यता मे संशय करब पाप बुझैत छियैक। मुदा अहाँ के एकर प्रमाण चाही। प्रमाण थिक 'स्वयं प्रकाश' मैथिली समाचार पत्र। अहि समाचार पत्रक आयु किछु मासेक छै जखन कि एकर तीन लाख प्रति हाथे-हाथ बिका जाइत छैक। आओर आश्चर्य अहि लेल छै जे मैथिल लोकनि बजता त' मैथिली भाषा मे, मुदा मैथिली भाषाक पोथी आ पत्रिका कीनि क' पढ़बा मे हुनका कोनो रुचि नहि। तीन-चारि करोड़ मैथिलवासीक इलाका मे मैथिली भाषाक साहित्यकार भीखमंगा बनल रहला अछि। से सबटा कल्हुका गप्प भेल। आब 'स्वयं प्रकाश' समाचार पत्रक कारणे बड़ीटा परिवर्तन भ' गेल अछि। यैह भेल चमेलीरानीक योग्यताक प्रमाण, कारण 'स्वयं प्रकाश' समाचार पत्र हुनकहिं निर्देश मे एतेक आगू बढ़ि शोभायमान भेल अछि।

–"चौबेजी, हमर बातक विश्वास करू, अगिला चुनाव मे, जे मात्र तीन महिना बाद होब' जा रहल अछि, लोशजाप प्रचंड बहुमत सँ जीत' जा रहल अछि।"

आकाशक चमकैत तरेगनक छानल इजोत खिड़की बाटे आबि चौबेजीक मुख मंडल कैँ आभायुक्त बनौने छल। रतुका अन्तिम पहर आबि गेल छलै। मुदा चौबेजी सकाँक्ष भेल चुपचाप धर्माकरजी द्वारा व्यक्त विचार कैँ मनहिमन स्वीकार क' रहल छलाह।

धर्माकरजी फेर कहलनि–"चौबेजी, आब अहि विषय कैँ छोड़ि मूल विषय पर आबू जकरा लेल अहाँ एलहुँ अछि। हमरा किछु काल पहिने चमेलीरानीक आदेश प्राप्त भ' चुकल अछि। गुलाब मिसिर कैँ की भेलनि ई त' खोजक विषय थिक? मुदा हम अहाँ कैँ एक छोट फिल्म देखायब। अहिमे गुलाब मिसिर संगे हुनक समस्त मंत्रीमंडलक चित्र देखाओल जायत। एकरा देखि क' आगाँ की करए पड़तैक से अहाँ स्वयं सक्षम व्यक्ति छी, अहाँ स्वयं मार्ग प्रशस्त क' लेब। आयल जाउ।"

धर्माकरजी संगे चौबेजी दोसर कोठरी मे ऐलाह। ओतए एक छोट प्रोजेक्टर तथा आठ एमएमक स्क्रीन रहैक। धर्माकर जी कहलनि–"अहाँ एखन जे दृश्यावलोकन करब से सोनपुर मेलाक सांस्कृतिक कार्यक्रमक अंश थिक। एकरहि चर्चा चौहान नामक मंत्री अपन साक्षात्कार मे केलनि अछि आ अही सांस्कृतिक कार्यक्रमक

समाप्ति पर गुलाब मिसिर बाहर आयला आ गुम भ’ गेलाह। अहि फिल्मक एकटा एक्सट्रा कॉपी अहाँ कैँ देबाक लेल चमेलीरानी निर्देश पठौलनि अछि। राजधानी पहुँचि अहाँ सभ समस्याक निदान क’ लेब तकर आशा करैत छी।”

प्रोजेक्टर चालू भेल। स्क्रीन पर अश्लीलता आ अमानवीय दृश्य अंकित होम’ लागल। प्रान्तक राजनीतिक घिनौना चित्र स्पष्ट देखाय लागल। दृश्य कैँ देखिते चौबे जी पहिले अवाक् रहि गेलाह। फेर घृणा सँ आँखि बन्द क’ लेलनि।

चौबेजीक बन्द आँखि मे भूत आ भविष्य दुनू प्रगट भ’ गेल। भूत जे चाणक्यक साम, दाम, दंड आ भय नीतिक चलते नंद वंशक समूल नाश भेल, आ भविष्य जे चमेलीरानी मुख्यमंत्री पदक शपथ ग्रहण क’ रहलीह अछि।

❖ ❖ ❖